08 जुलाई, 2025
आषाढ़, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी
संवत 2082
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची
मंगलवार, वर्ष 10, अंक 258

* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

पूर्णिया में एक ही परिवार के 5 लोगों की हत्या

FLORENCE
GROUP OF INSTITUTIONS
(A Unit of :Haji Abdur Razzaque Educational Society)
ADMISSION OPEN
COLLEGE OF NURSING
2 YEARS M.Sc. Nursing
2 YEARS Post Basic B. Sc. Nursing
4 YEARS B.Sc. Nursing
3 YEARS GNM (General Nursing And Midwifery)
2 YEARS ANM (Auxiliary Nurshing And Midwifery)
COLLEGE OF PARA MEDICAL SCIENCE
4 YEARS BMLT
2 YEARS DMLT
2 YEARS OT ASSISTANT
2 YEARS ECG
2 YEARS OPHTHALMIC ASST.
2 YEARS CRITICAL CARE (ICU)
2 YEARS RADIO-IMAGING
2 YEARS ANESTHESIA TECH.
1 YEARS DRESSERS
COLLEGE OF PHARMACY
2 YEARS D-PHARM
4 YEARS B-PHRRM
Separate Hostel For Boys & Girls
9031231082, 7903999411, 6205145470
E-mail: fsnirba@gmail.com
Website: www.florenceinstirba.com

SACRED CHILD ACADEMY
PLAY SCHOOL
Pre Nursery
KG - I
Nursery
KG - II
ADMISSION OPEN
Tiril Road, Kokar, Ranchi
9661169815

Euro Kids
EUROKIDS GLOBAL SCHOOL
CBSE PATTERN
Play Group | Nursery | AGE GROUP 01.8 TO 06 YEARS
Euro Junior (LKG) | Euro Senior (UKG)
OFFERS YOU
Class 1 | Class 2 | Class 3 | Class 4 | Class 5
आपके बच्चों को दे सही शुरूआत
ADMISSION OPEN
KOKAR RIMS ROAD, TUNKI TOLA, RANCHI
7903079507, 8092334348

आतंकवाद और टैरिफ के खिलाफ ब्रिक्स के स्टैंड से तिलमिलाया अमेरिका

डोनाल्ड ट्रंप ने दी अतिरिक्त टैरिफ लगाने की धमकी

- अमेरिकी राष्ट्रपति ने नये देशों को ब्रिक्स से दूर रहने की दी हिदायत
- चीन ने कहा, ब्रिक्स टकराव नहीं चाहता, ट्रेड वार से सबको नुकसान

एजेंसी

वाशिंगटन। ब्राजील की राजधानी रियो डी जेनेरियो में ब्रिक्स के 17वें शिखर सम्मेलन में आतंकवाद और टैरिफ के खिलाफ जारी साझा घोषणा पत्र के बाद अमेरिका तिलमिला गया है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि ब्रिक्स अब अमेरिका के विरोध में खड़ा है। उन्होंने चेतावनी दी कि जो भी देश अमेरिका विरोधी इस संगठन से जुड़ेंगे, उन पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगाया जायेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा कि जो भी देश अमेरिका विरोधी ब्रिक्स नीतियों के साथ खुद को जोड़ेंगे, उन पर 10 फीसदी अतिरिक्त टैरिफ लगाया जायेगा। इसमें किसी को भी छूट नहीं मिलेगी। बता दें कि ब्रिक्स के 17वें शिखर सम्मेलन के बाद जारी साझा घोषणा पत्र में विश्व व्यापार संगठन के नियमों के खिलाफ बढ़ते टैरिफ पर चिंता जतायी गयी है। टैरिफ को वैश्विक व्यापार और आपूर्ति श्रृंखला के लिए खतरा बताया गया है।

ब्रिक्स का साझा घोषणा पत्र : ब्राजील के रियो डी जनेरियो में हुए 17वें ब्रिक्स सम्मेलन में सदस्य देशों ने 31 पेज और 126 बिंदुओं वाला एक साझा घोषणा पत्र जारी किया। इसमें पहलगाम आतंकी हमले और इरान पर इजराइली हमले की निंदा की गयी। इससे पहले एक जुलाई को भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया की सदस्यता वाले क्वाड ग्रुप के विदेश मंत्रियों की बैठक में भी पहलगाम हमले की निंदा की गयी थी। पीएम मोदी ने इस सम्मेलन में कहा कि पहलगाम आतंकी हमला सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि पूरी इंसानियत पर चोट है। आतंकवाद की निंदा हमारा सिद्धांत होना चाहिए, सुविधा नहीं। इसके साथ ही उन्होंने एक नयी विश्व व्यवस्था की मांग उठायी। मोदी ने कहा कि कि 20वीं सदी में बनायी गयीं वैश्विक संस्थाएं 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने में नाकाम हैं। एआइ के दौर में तकनीक हर हफ्ते अपडेट होती है, लेकिन एक वैश्विक संस्थान 80 सालों में एक बार भी अपडेट नहीं होता। 20वीं सदी के टाइपराइटर 21वीं सदी के सॉफ्टवेयर को नहीं चला सकते।

ब्रिक्स की असली ताकत है इसकी विविधता: मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ब्रिक्स देशों की अलग-अलग सोच और बहुध्रुवीय दुनिया में भरोसा ही इसकी सबसे बड़ी ताकत है। न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी) को सोच-समझकर निवेश करना चाहिए। उन्होंने कहा कि बैंक को सिर्फ उन्हीं प्रोजेक्ट में पैसा लगाना चाहिए, जो जरूरी हों, लंबे समय तक फायदे वाले हों और जिससे बैंक की साख बनी रहे। मोदी ने एक ऐसा ब्रिक्स रिसर्च सेंटर बनाने का प्रस्ताव रखा, जहां सब देश मिलकर विज्ञान और टेक्नोलॉजी पर काम कर सकें। मोदी ने बताया कि भारत जल्द ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) पर एक बड़ा सम्मेलन करेगा।

ब्रिक्स सहयोग और विकास के लिए एक मंच: माओ निंग

इधर चीन ने कहा कि ब्रिक्स समूह किसी भी तरह का टकराव नहीं चाहता है। यह बयान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की 10 फीसदी टैरिफ बढ़ाने वाली धमकी के बाद आया। चीन की विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने कहा कि ब्रिक्स सहयोग और विकास के लिए एक मंच है। यह किसी देश के खिलाफ नहीं है। टैरिफ का इस्तेमाल राजनीतिक दबाव के लिए करना गलत है। ट्रेड वार से कोई विजेता नहीं होता और टैरिफ कोई रास्ता नहीं है।

जस्टिस यशवंत वर्मा केस में तुरंत एफआइआर की जरूरत: धनखड़

- एनयूएएलएस के एक कार्यक्रम में उप राष्ट्रपति ने कहा : कैश कहां से आया, ये जानना जरूरी

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने जस्टिस वर्मा के घर में मिले अधजले नोटों के मामले में तुरंत एफआइआर की बात कही है। उन्होंने सोमवार को कहा कि यह न केवल चिंताजनक है, बल्कि यह हमारी न्यायपालिका की नींव को हिला देने वाला है। इस मामले की जड़ तक जाने की जरूरत है। कैश कहां से आया, ये जानना बहुत जरूरी है। केंद्र स्तर पर सरकार मजबूर है, क्योंकि 90 के दशक की शुरुआत में दिये गये सुप्रीम कोर्ट के आदेश के कारण जस्टिस पर एफआइआर दर्ज नहीं की जा सकती है। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने नेशनल एडवांस्ड लीगल स्टडीज (एनयूएएलएस) यूनिवर्सिटी के सेमिनार में बोल रहे थे।

दरअसल, दिल्ली हाइकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा के लुटियंस दिल्ली स्थित घर में 14 मार्च की रात आग लगी थी। उनके घर के स्टोर रूम में 500-500 रुपये के जले नोटों के बंडलों से भरे बोरे मिले थे। इसके बाद से ये सवाल खड़ा हुआ कि इतना कैश कहां से आया।

न्यायपालिका में भ्रष्टाचार पर चिंता जतायी

धनखड़ ने कहा कि मैं न्यायपालिका की स्वतंत्रता का समर्थन करता हूं। जजों को सुरक्षा प्रदान करना जरूरी है, क्योंकि वे जटिल परिस्थितियों में काम करते हैं। लेकिन जब ऐसी घटनाएं सामने आती हैं, तो हमें सच का सामना करना होगा। उन्होंने जस्टिस यशवंत वर्मा के घर पर मिले नकदी का हवाला दिया। उन्होंने इसे शेक्सपियर के नाटक 'जूलियस सीजर' से जोड़ा और 14 मार्च (जूलियस सीजर की हत्या की तारीख) को न्यायपालिका के लिए बुरा समय बताया। उपराष्ट्रपति ने कहा कि जस्टिस वर्मा के घर में नकदी कहां से आया? क्या यह काला धन है? इसका मालिक कौन है? इसकी जांच होनी चाहिये। यह एक आपराधिक कृत्य है, और इसके लिए तत्काल एफआइआर दर्ज की जानी चाहिए।

जजों के रिटायरमेंट के बाद नियुक्ति पर सवाल उठाये

उपराष्ट्रपति ने जजों को सेवानिवृत्ति के बाद दी जानेवाली नियुक्तियों पर गंभीर सवाल उठाये। उन्होंने कहा लोक सेवा आयोग और नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (सीएजी) को सेवानिवृत्ति के बाद सरकारी पद नहीं मिलती। लेकिन जजों के लिए ऐसा कोई नियम नहीं है।

संविधान में बदलाव पर चिंता जतायी

उप राष्ट्रपति ने संविधान की प्रस्तावना में आपातकाल के दौरान किये गये बदलावों पर सवाल उठाये। उन्होंने कहा कि प्रस्तावना को माता-पिता की तरह समझें, जिसे बदला नहीं जा सकता। विश्व में किसी भी देश ने अपनी संविधान की प्रस्तावना में बदलाव नहीं किया। उपराष्ट्रपति ने शक्तियों के अलगाव पर जोर देते हुए कहा, न्यायपालिका, कार्यपालिका, और विधायिका को एक-दूसरे के क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। यदि कोई संस्था दूसरे के क्षेत्र में दखल देती है, तो यह लोकतंत्र के लिए खतरनाक हो सकता है।

गृह विभाग में बड़ा नेक्सस सक्रिय : अजय साह

- टेंडर घोटाला पर भाजपा प्रवक्ता ने सरकार पर साधा निशाना
- घोटालों की सीबीआइ जांच की मांग की

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता अजय साह ने झारखंड सरकार पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि जब देशभर में शासन व्यवस्था में सुधार और नवाचार हो रहे हैं, तब हेमंत सरकार में भ्रष्टाचार के नये-नये तरीके इजाद किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि टेंडर सेटिंग को लेकर बड़े पैमाने पर खेल हो रहा है। जहां एक मंत्री पहले से ही टेंडर कमीशन घोटाले में जेल में है, वहीं अब एक और टेंडर घोटाले का सामने आना चौंकाने वाला और हैरान करने वाला है। अजय ने आरोप लगाया कि पिछले पांच वर्षों से गृह विभाग में बड़े पैमाने पर टेंडर घोटाले हो रहे हैं और सरकार ने एक संगठित सिंडिकेट को पनपने का खुला मौका दिया है। उन्होंने बताया कि पहले से मिलीभगत रखने वाली कंपनियों को

तकनीकी रूप से योग्य घोषित किया जाता है और फिर एक तयशुदा गिरोह को मनमानी दर पर ठेके दिये जाते हैं। उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि टेंडर संख्या जेइएम/2022/बी/2317532 में 23 में से 20 कंपनियों को तकनीकी कारणों से बाहर कर दिया गया।

तीन ही कंपनियों को टेंडर दिये जा रहे: अजय ने खुलासा किया कि जांच में यह सामने आया कि टेंडर जीएएम/2022/बी/2498791 सहित कई मामलों में तीन ही कंपनियों को टेंडर दिये जा रहे हैं। ये कोलकाता की जे.सी. माइकल, पटना की अरिहंत कॉर्पोरेशन और दिल्ली की लाइफलाइन सिक्योरिटी है। इन तीनों कंपनियों के डायरेक्टर या पार्टनर आपस में जुड़े हुए हैं। जे.सी. माइकल के डायरेक्टर चिराग जैन हैं, जो अरिहंत ट्रेडिंग के भी प्रोप्राइटर हैं। वहीं जितेंद्र कोचर जे.सी. माइकल और लाइफलाइन सिक्योरिटी दोनों के डायरेक्टर हैं। इससे स्पष्ट है कि गृह विभाग और ठेकेदारों के बीच एक गहरा गठजोड़ बना हुआ है, और यह केवल गठजोड़ नहीं बल्कि आपराधिक आचरण का मामला है।

राज्य की निगरानी करने वाले विभाग में ही घोटाला : अजय ने कहा कि नियमों के अनुसार एक ही व्यक्ति दो अलग-अलग फर्म बनाकर टेंडर में हिस्सा नहीं ले सकता। यह स्पष्ट रूप से नियमों का उल्लंघन और एक अपराध है। हैरानी की बात यह है कि जो विभाग पूरे राज्य की निगरानी करता है, उसी में यह घोटाला हो रहा है और पकड़ में नहीं आ रहा। अजय ने जोर देकर कहा कि चूंकि गृह विभाग सीधे मुख्यमंत्री के अधीन आता है, इसलिए इस पूरे मामले की निष्पक्ष जांच तभी संभव है जब इसकी जांच सीबीआइ या अदालत की निगरानी में करायी जाये।

झामुमो महासचिव ने हास्यास्पद बताया

झूठ और साजिश की राजनीति कर रही है भाजपा : विनोद कुमार पांडेय

रांची (आजाद सिपाही)। झामुमो ने भाजपा के आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया है। झामुमो के महासचिव विनोद कुमार पांडेय ने कहा कि भाजपा के पास न तो मुद्दा बचा है, न ही जनसमर्थन, इसलिए वह बौखलाहट में झूठ, फरेब और अफवाहों की राजनीति कर रही है। पांडेय ने भाजपा की प्रेस वार्ता को 'हास्यास्पद' करार दिया। उन्होंने कहा कि भाजपा का आदिवासी-मूलवासी विरोधी चेहरा झारखंड की जनता के सामने दिख चुका है। सत्ता से बेदखल होने के बाद से भाजपा नेता मानसिक संतुलन खो बैठे हैं। अब वे हर दिन मनगढ़ंत कहानियां गढ़कर जनता को गुमराह करने का असफल प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने भाजपा के शासनकाल को याद दिलाते हुए कहा कि जब राज्य में उनकी सरकार थी तब भाजपा ने गरीब, किसान और आदिवासी के

हितों पर डाका डाला। हेमंत सरकार ने उन घावों पर मरहम लगाने का काम किया है।झामुमो की सरकार गरीबों और वंचितों के साथ खड़ी है, तो भाजपा की नींद हराम हो गयी है। सच्चाई ये है कि भाजपा की एक आदिवासी मुख्यमंत्री को पचा नहीं पा रही है। उन्होंने कहा कि झारखंड की जनता अब बहकावे में आने वाली नहीं है। यह राज्य झामुमो की धरती है, जहां भाजपा की झूठ और नफरत की राजनीति की कोई जगह नहीं। उन्होंने भाजपा को चुनौती दी कि वह आंकड़ों के साथ विकास कार्यों पर खुली बहस करे।

शिक्षक ने नाबालिग छात्रा से किया दुष्कर्म

- पुलिस ने आरोपी शिक्षक सेल्सटीन किंडो को दबोचा
- मामले को दबाने की कोशिश करने वाले दो लोगों को भी गिरफ्तार किया

आजाद सिपाही संवाददाता

सिमडेगा। सिमडेगा जिले के एक सरकारी स्कूल में शिक्षा के मंदिर को कलंकित करते हुए एक शिक्षक ने नाबालिग छात्रा के साथ दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया है। पुलिस ने आरोपी शिक्षक के साथ-साथ मामले को दबाने की कोशिश करने वाले दो अन्य लोगों को भी गिरफ्तार कर लिया है। सिमडेगा एसपी एम अर्शी ने घटना की जानकारी देते हुए बताया कि कुरडेग थाना क्षेत्र के एक सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाली नाबालिग छात्रा के परिजनों ने थाने में शिकायत दर्ज करायी थी। शिकायत के अनुसार उनकी बच्ची, जो चौथी कक्षा में पढ़ती है, उसी स्कूल के सरकारी शिक्षक सेल्सटीन किंडो ने उसके साथ जबरन दुष्कर्म किया। घटना को अंजाम देने के बाद शिक्षक फरार हो गया था और पंचायत के लोग इस मामले को जबरन दबाना चाहते थे। मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए कुरडेग पुलिस ने तत्काल कार्रवाई की। पुलिस ने पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज करते हुए फरार शिक्षक सेल्सटीन किंडो को खोज निकाला। इसके अलावा, पुलिस ने पंचायत कर मामले को दबाने की कोशिश करने वाले पंचायत के प्रभावशाली व्यक्ति निर्दोष मिंज और फेलेक्स खेस को भी गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे भेज दिया है।

झारखंड कैडर के आइपीएस संजय लाठकर केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर

रांची (आजाद सिपाही)। केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर जाने के लिए झारखंड कैडर के आइपीएस संजय आनंद लाठकर सोमवार को विरमित हो गये। इसको लेकर गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग के द्वारा अधिसूचना जारी कर दी। वह 1995 बैच के आइपीएस हैं। केंद्रीय मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने संजय लाठकर को परमाणु ऊर्जा विभाग के अधीन आइजी (सुरक्षा) के पद पर एडीजी के स्तर और वेतन पर नियुक्त करने के विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। यह नियुक्ति संजय लाठकर की पदभार ग्रहण करने की तिथि से उनकी सेवानिवृत्ति तक, यानी 30 सितंबर 2028 तक या अगले आदेशों तक, जो भी पहले हो, दो वर्ष की अवधि के लिए की जायेगी। इस दौरान उनका वेतन मैट्रिक्स स्तर 14 से स्तर 15 तक अस्थायी रूप से अपग्रेड किया जायेगा। आइपीएस संजय आनंद लाठकर वर्तमान में झारखंड पुलिस में एडीजी (रेल) के पद पर कार्यरत थे।

धोनी ने खास अंदाज में मनाया 44वां जन्मदिन

- दोस्तों संग की जम कर मस्ती, वीडियो हुआ वायरल
- फार्म हाउस के मुख्य द्वार पर लगा फैंस का तांता
- लोगों ने महेंद्र सिंह धोनी की तस्वीर के साथ केक काटा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान एमएस धोनी सोमवार को अपना 44वां जन्मदिन मनाया। कैप्टन कूल के नाम से मशहूर धोनी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें वो केक काटते हुए दिखाई दे रहे हैं। इसमें उनके करीबी दोस्त और परिचित लोग शामिल हैं। इस वीडियो में धोनी काले रंग की स्लीवलेस टी-शर्ट पहने हुए नजर आ रहे हैं। धोनी अपने दोस्तों के

साथ केक कटते हुए और उन्हें खिलाते हुए दिखायी दे रहे हैं।

फार्म हाउस गेट पर धोनी प्रसंशकों के लिए रुके : धोनी ने जन्मदिन के दिन अपने प्रशंसकों को एक खास तोहफा दिया। सोमवार की सुबह वे सिमलिया स्थित अपने फार्म हाउस से बाहर निकले और अपने चहेतों को एक झलक दिखाकर उनका दिल जीत लिया। धोनी अपनी नयी कार में सवार थे। जैसे ही उन्होंने फार्म हाउस का गेट पार किया, पहले से मौजूद सैकड़ों फैंस और खेल प्रशांसकों में खुशी की लहर दौड़ गयी। उन्हें देखते ही लोग 'धोनी-धोनी' के नारे लगाने लगे। धोनी ने भी अपने चिर परिचित शांत और विनम्र अंदाज में कार की रफ्तार धीमी की और हाथ हिलाकर प्रशंसकों का अभिवादन स्वीकार किया।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने धोनी को दी शुभकामनाएं

रांची (आजाद सिपाही)। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने महेंद्र सिंह धोनी को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा है कि झारखंड के लाल कैप्टन कूल माही को जन्मदिन की ढेरों बधाई, शुभकामनाएं और जोहार। मरांग बुरु आपको सदैव उत्तम स्वास्थ्य और सुदीर्घ जीवन प्रदान करें, यही कामना करता हूं।

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 08 जुलाई, 2025
www.azadsipahi.in

चिराग पासवान की घोषणा ने बढ़ाया बिहार चुनाव का रोमांच

■ सभी 243 सीटों पर लड़ने की घोषणा ने बढ़ायी इंडी ब्लॉक की टेंशन

■ त्रिकोणीय मुकाबले की स्थिति में आसान हो जायेगा एनडीए का रास्ता

आजाद सिपाही विशेष

बिहार में इस साल के अंत में होनेवाले विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी तपिश लगातार बढ़ रही है। खुद को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'हनुमान' कहनेवाले चिराग पासवान की घोषणा ने इस तपिश को बढ़ा दिया है। चिराग पासवान ने कहा है कि उनकी पार्टी लोजपा-आर बिहार की सभी 243 सीटों पर अपना उम्मीदवार उतारेगी और मुकाबले को त्रिकोणीय बनायेगी। चिराग पासवान ने खुद भी चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी है। चिराग पासवान की इस घोषणा ने जहां एनडीए का रास्ता आसान बना दिया है, वहीं इंडी अलायंस के लिए नया सिरदर्द पैदा कर दिया है। चिराग पासवान की घोषणा के बाद से बिहार का सियासी समीकरण लगातार बदलता हुआ दिखाई दे रहा है। खुद को 'युवा बिहारी' कहने वाले और 'बिहार फर्स्ट' का नारा देने वाले चिराग पासवान ने कुछ समय पहले यह बात कही थी कि उनका दिल दिल्ली में नहीं लगता और बिहार उन्हें बुला रहा है, लेकिन उस समय उन्होंने कहा था कि इस चुनाव के बाद इस बारे में वह फैसला करेंगे। अब उन्होंने बिहार की सभी सीटों पर उम्मीदवार देने की घोषणा कर दी है। इसका सीधा मतलब यही निकलता है कि चिराग अब जातीय राजनीति का दामन छोड़नेवाले हैं, जिसका नुकसान राजद को होगा। दरअसल चिराग पासवान की पार्टी इस समय वे सभी हथकंडे अपना रही है, जो चुनाव से पहले प्रेशर पॉलिटिक्स में अपनाये जाते हैं। क्या है चिराग पासवान के फैसले का मतलब और इसका बिहार चुनाव पर क्या हो सकता है असर, बता रहे हैं **आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।**

राकेश सिंह

लोजपा-आर के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान अक्सर अपने बयानों और आचरण से सनसनी पैदा करते रहे हैं। महीने भर से वह सियासी शिगूफा से लोगों में भ्रम की स्थिति पैदा करते रहे हैं। शाहाबाद के भोजपुर में उन्होंने सभा की। उसके बाद कई और जगहों पर भी उनका संबोधन हुआ। सारण में रविवार को उन्होंने सभा की। सभाओं में उनके भाषण की कॉमन बात यह रही है कि वह विधानसभा की सभी 243 सीटों पर लड़ेंगे। एनडीए को मजबूत बनाने के लिए वह खुद विधानसभा का चुनाव लड़ेंगे। उनकी बातों से एनडीए समर्थक उत्साहित हैं। उनका मानना है कि चिराग यदि सभी सीटों पर उम्मीदवार देंगे, तो इससे मुकाबला त्रिकोणीय होगा और एनडीए को लाभ होगा।

चिराग 2020 में कर चुके हैं खेला

चिराग पासवान की ताकत क्या है, इसे पहले समझना जरूरी है। बिहार में पांच से छह प्रतिशत वोट उनकी पार्टी को मिलते रहे हैं। इसी वोट के आधार पर उनके पांच सांसद लोकसभा में हैं। 2020 के चुनाव में चिराग ने इसी तरह का खेल किया था। वह 'बिहार फर्स्ट, बिहारी फर्स्ट' के नारे के साथ जितनी सीटें चाहते थे, एनडीए में उतनी सीटें नहीं मिलीं, तो उन्होंने बगावत कर दी। वह एनडीए से बाहर हो गये और अपने 134 उम्मीदवार मैदान में उतार दिये। उनके उम्मीदवार भी उन्हीं सीटों पर दबंगता के साथ थे, जहां जेडीयू के उम्मीदवार थे। उन्होंने खुद को 'मोदी का हनुमान' बता कर भाजपा को तो बख्श दिया, लेकिन नीतीश कुमार को निशाने पर रखा। उनका एक ही उम्मीदवार जीता, जो बाद में जेडीयू का हिस्सा बन गया। अलबत्ता 34 सीटों पर उन्होंने जेडीयू को नुकसान पहुंचाया। जेडीयू को 43 सीटों पर सिमट जाना पड़ा। डेढ़ दर्जन सीटें ऐसी रहीं, जहां चिराग की पार्टी दूसरे नंबर पर रही। नीतीश कुमार से पंगा लेकर चिराग ने चालाकी यह कि वह अपने को नरेंद्र मोदी का विश्वस्त बने रहे। उन्होंने भाजपा के खिलाफ उम्मीदवार उतारने से परहेज तो किया ही, भाजपा ने जिन उम्मीदवारों को टिकट नहीं दिया, उन्हें भी चिराग ने टिकट दे दिया। इसे यह बता कर प्रचारित किया गया कि भाजपा के इशारे पर नीतीश कुमार को कमजोर करने के लिए उन्होंने ऐसा किया। हालांकि यह बात निराधार साबित हुई। अपने से कम सीटों वाली पार्टी के नेता नीतीश कुमार को भाजपा ने मना-समझा कर सीएम बना दिया।

नीतीश-तेजस्वी की सियासत पर पड़ेगा असर

चिराग पासवान के विधानसभा चुनाव में उतरने का फैसला बिहार की राजनीति में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। राजनीति के जानकार कहते हैं कि चिराग पासवान बिहार में अपनी सियासी ताकत बढ़ाना चाहते हैं। उनकी अपनी कुछ राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं भी हैं। चिराग बिहार में अपना भविष्य देख रहे हैं। उनके चुनाव लड़ने से नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव, दोनों की सियासत पर असर पड़ सकता है। इसी रणनीति के तहत उन्होंने केंद्र में मंत्री रहते हुए भी विधानसभा चुनाव लड़ने की दांव चला है।

तेजस्वी का काउंटर प्लान हैं चिराग

नीतीश कुमार अब उम्रदराज हो रहे हैं और उनकी राजनीतिक पकड़ भी कमजोर हो रही है। वह 2025 में एनडीए का चेहरा जरूर हैं, लेकिन 2020 में भाजपा उन्हें आगे करके सियासी नतीजे देख चुकी है। ऐसे में चिराग पासवान की पार्टी को लगता है कि आगे चलकर एनडीए में एक ऐसे चेहरे की जरूरत होगी, जिसे चिराग पासवान पूरा कर सकते हैं। इतना ही नहीं, तेजस्वी यादव की जिस तरह की लोकप्रियता बिहार में देखी जा रही है, वह जदयू के साथ-साथ भाजपा और उसके घटक दलों को जरूर चिंता में डाल रही है।

भाजपा के लिए बड़ी चुनौती

बिहार में जिस तरह से तेजस्वी का सियासी ग्राफ लगातार बढ़ा है और नीतीश कुमार का ग्राफ कम होता चला गया है, उससे सबसे ज्यादा चिंता भाजपा को है। बिहार का चुनाव भाजपा के लिए प्रतिष्ठा का सवाल बना हुआ है। भाजपा किसी भी तरह का कोई रिस्क नहीं लेना चाहती है। भाजपा 2020 में नीतीश कुमार के चेहरे पर चुनाव लड़ी थी और एनडीए के हाथों से सत्ता जाते-जाते बची थी। इसीलिए भाजपा इस बार बहुत ही सावधानी बरत रही है। एनडीए जरूर सीएम नीतीश के चेहरे पर चुनाव लड़ रहा है, लेकिन तेजस्वी की लोकप्रियता का भी ख्याल रख रही है।

चिराग बनाम तेजस्वी बनाने की कोशिश

तेजस्वी यादव के सामने चिराग पासवान एक युवा चेहरा होंगे। बिहार में युवा नेता के तौर पर सिर्फ तेजस्वी का नाम ही सबसे आगे है। उन्हें लालू प्रसाद यादव की राजनीतिक विरासत भी मिली है। जातिगत समीकरण भी उनके साथ हैं। बिहार के दो-तिहाई मतदाताओं (मुस्लिम-यादव) पर उनकी अच्छी पकड़ मानी जाती है। ऐसे में चिराग विधानसभा चुनाव लड़ते हैं, तो तेजस्वी की चुनौती बढ़ जायेगी।

चिराग में भाजपा देख रही फायदा

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि चिराग पासवान के विधानसभा चुनाव लड़ने के फैसला भाजपा के बैकअप प्लान का हिस्सा है। इसीलिए भाजपा के तमाम बड़े नेता चिराग पासवान के फैसले का स्वागत कर रहे हैं। भाजपा के प्रदेश अध्यश्र दिलीप जायसवाल ने चिराग के विधानसभा चुनाव लड़ने के कदम का स्वागत करते हुए कहा कि इससे एनडीए को फायदा होगा। बिहार में जहां भी चिराग जाते हैं, उन्हें देखने-सुनने के लिए भीड़ उमड़ पड़ती है।

सर्वजन का नेता बनने का भी प्लान

चिराग पासवान की पार्टी का चुनाव लड़ने का फैसला भी एक बड़ा दांव माना जा रहा है। वह जातिवादी राजनीति से दूर रहने की कोशिश करते हैं, जो आज की युवा पीढ़ी को पसंद है। चिराग युवा वर्ग में जातिगत दायरे से बाहर भी लोकप्रिय हैं। नये जेनरेशन को वह इसलिए पसंद हैं, क्योंकि उन्होंने अपने भाषणों में कभी जातिवादी राजनीति करने की कोशिश नहीं की। चिराग पासवान खुद को दलित दायरे में रखने की बजाय सर्वजन के नेता बनने की फिराक में हैं। इसीलिए वह एक के बाद एक बड़ा सियासी दांव चल रहे हैं।

डूरंड कप के होंगे 7 मैच, राज्यपाल ने किया ट्रॉफी का अनावरण

झारखंड की मिट्टी में खेलों का संस्कार है : राज्यपाल

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। पूर्वी सिंहभूम जिले में झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने एशिया का सबसे पुराने डूरंड फुटबाल टूर्नामेंट की तीन ट्रॉफी का अनावरण किया। भारतीय सेना द्वारा आयोजित यह 134वां डूरंड कप है। इस मौके पर झारखंड के राज्यपाल ने कहा कि एशिया का सबसे पुराना ऐतिहासिक डूरंड कप का आयोजन होना इस बात का प्रतीक है कि झारखंड की खेल संस्कृति नयी ऊंचाई को छू रही है।

जमशेदपुर के बिस्टुपुर में स्थित एक्सएलआरआइ सभागार में फुटबॉल डूरंड कप ट्रॉफी का अनावरण किया गया। इस मौके पर झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन, झारखंड खेल विभाग निदेशक, भारतीय सेना के पदाधिकारी, टाटा स्टील के वीपीसीएस और भारी संख्या में खेल प्रेमी मौजूद रहे। इस दौरान छउ नृत्य, संथाली नृत्य और भांगड़ा प्रस्तुत किया गया।

ब्रिटिश सेना ने की थी टूर्नामेंट की शुरुआत

बता दें कि 1888 को शिमला में ब्रिटिश सेना द्वारा इस टूर्नामेंट का आयोजन किया गया था। इस आयोजन के संस्थापक के नाम पर डूरंड कप टूर्नामेंट रखा गया है। जिसे एशिया का सबसे पुराना ऐतिहासिक फुटबॉल टूर्नामेंट कहा जाता है। इसमें देश के विभिन्न फुटबाल क्लब भाग लेते हैं। जमशेदपुर में दूसरी बार डूरंड कप का आयोजन हो रहा है।

फाइनल विजेता को दिया जाता है तीन कप

डूरंड कप फुटबॉल टूर्नामेंट 23 जुलाई से 23 अगस्त 2025 तक खेला जायेगा। जमशेदपुर में ग्रुप सी के मुकाबले खेले जायेंगे। कुल 7 मैच खेला जायेगा, जिसमें क्वार्टर फाइनल भी शामिल है। सारे मुकाबले जेआरडी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में खेले जायेंगे। इस टूर्नामेंट में विजेता टीम को तीन कप डूरंड कप, शिमला ट्राफी, और प्रेजिडेंट कप दिया जाता है।

राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने कहा कि प्रतिष्ठित एवं ऐतिहासिक डूरंड कप का आयोजन राज्य के लिए गौरव का क्षण है। ऐसे आयोजनों से राज्य में खेल संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा। राज्य के युवा इस तरह के अंतरराष्ट्रीय आयोजन से काफी कुछ सीखेंगे। राज्यपाल ने कहा कि युवा शक्ति के अनुशासन और ऊर्जा को नयी दिशा मिलेगी। फुटबॉल सभी वर्गों के बीच काफी लोकप्रिय खेल है। खेल से हमें एकता, अनुशासन, टीम भावना सीखने को मिलती है। राज्यपाल ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार खेल के माध्यम से युवाओं को जोड़कर उनकी प्रतिभा निखारने, खेल में नये अवसर प्रदान करने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले ओलंपिक 2036 की मेजबानी का भी दावा किया है। झारखंड के कई युवाओं ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने खेल प्रतिभा के दम पर अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है।

राज्य के कई युवा खिलाड़ी ने झारखंड का नाम किया रोशन: मंत्री रामदास सोरेन

इस मौके पर झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन ने कहा कि राज्य सरकार की नयी खेल नीति के माध्यम से खिलाड़ियों और खेलों को प्रोत्साहित करने का प्रयास है। राज्य में डूरंड कप जैसे प्रतिष्ठित टूर्नामेंट का आयोजन गर्व की बात है। मंत्री ने कहा कि राज्य के कई युवा प्रतिभावान खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पटल पर राज्य का नाम रोशन किया है।

टूर्नामेंट में चार टीमें लेंगी हिस्सा

राज्यपाल ने युवाओं को खेल के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने का आवाह्न किया है। राज्यपाल ने इस ऐतिहासिक आयोजन के लिए भारतीय सेना और स्थानीय प्रशासन को बधाई दी और खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी। इस टूर्नामेंट में जमशेदपुर एफसी, इंडियन आर्मी एफटी, त्रिभुवन आर्मी एफसी (नेपाल) और 1 लद्दाख एफसी की टीमें भाग लेंगी।

टाटा स्टील ने ऑस्ट्रेलिया के इनक्विक ग्रुप के साथ किया समझौता

टाटा स्टील स्मार्ट और टिकाऊ निर्माण में समाधान उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है : टीवी नरेंद्रन

यह साझेदारी भारतीय बाजार में उनकी ब्रिज तकनीक को विस्तार देने में मील के पत्थर साबित होगी : लोगन मुलाने

आजाद सिपाही संवाददाता

मुंबई/जमशेदपुर। टाटा स्टील ने ऑस्ट्रेलिया की इनक्विक ग्रुप के साथ एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। इस साझेदारी के तहत इनक्विक की पुरस्कार विजेता मॉड्यूलर ब्रिज निर्माण तकनीक अब भारत में लायी जायेगी। यह पहल भारत में बुनियादी ढांचे के विकास को नयी गति देगी। टाटा स्टील के सीइओ सह एमडी टीवी नरेंद्रन ने कहा कि कंपनी स्मार्ट और टिकाऊ निर्माण में समाधान उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। वहीं इनक्विक ग्रुप के सीइओ लोगन मुलाने ने कहा यह साझेदारी भारतीय बाजार में उनकी ब्रिज तकनीक को विस्तार देने में मील का पत्थर साबित होगी। इनक्विक की तकनीक से मजबूत, किफायती और जलवायु रोधी पुल तेजी से बनाये जा सकेंगे। इससे दूरदराज के क्षेत्रों की कनेक्टिविटी बेहतर होगी। देश का परिवहन नेटवर्क मजबूत होगा। टाटा स्टील के इस कदम से पारंपरिक इस्पात उत्पादन में आगे बढ़कर निर्माण क्षेत्र में तकनीकी समाधान प्रदाता बनने की दिशा में काम करेगी।

सिमडेगा के बाल संप्रेक्षण गृह से 6 बच्चे फरार

पुलिस विभाग में मचा हड़कंप, जांच में जुटी पुलिस

आजाद सिपाही संवाददाता

सिमडेगा। बाल संप्रेक्षण गृह से 6 बच्चे फरार हो गये हैं। ये सभी बच्चे अलग-अलग कांडों में पकड़े गये थे। जानकारी के अनुसार ड्राम लगाकर बच्चे संप्रेक्षण गृह की बाउंड्री फांदकर फरार हो गये। इधर, घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस बच्चों की तलाश में जुट गयी है। हत्या सहित अन्य अलग-अलग मामलों में पकड़े गये 6 बच्चे रविवार रात अंधेरे का फायदा उठाकर बाल संप्रेक्षण गृह की दीवार फांदकर फरार हो गये। जानकारी के अनुसार फरार बच्चों में लातेहार का एक, पश्चिम सिंहभूम के दो और गुमला के 3 बच्चे शामिल हैं। इनके फरार होने की सूचना मिलते हैं डीएसपी हेडक्वार्टर और एसडीपीओ सिमडेगा मामले की जांच में जुट गये हैं। पुलिस फरार बच्चों को पकड़ने की कोशिश में जुट गयी है।

संप्रेक्षण गृह की सुरक्षा को लेकर सवाल

इधर, बाल संप्रेक्षण गृह से बच्चों के फरार होने की सूचना के बाद पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया है। विदित हो कि कुछ माह पूर्व भी बाल संप्रेक्षण गृह के एक बच्चे के साथ मारपीट की घटना हुई थी। जिसके पश्चात सदर अस्पताल में इलाज के दौरान बच्चे की मौत हो गयी थी। इस मामले में परिजनों ने बच्चे के साथ मारपीट करने का आरोप लगाया था और अब एक साथ 6 बच्चों के भागने का मामला सामने आने के बाद बाल संप्रेक्षण गृह की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। इधर, इस संबंध में सिमडेगा के एसपी मो अर्सी ने कहा कि बाल संप्रेक्षण गृह से 6 बच्चे फरार हुए हैं। पुलिस बच्चों को ढूंढने की कोशिश में जुटी है।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	26.0 °C	22.6 °C
सूर्यास्त (आज)	:	18.39 बजे
सूर्योदय (कल)	:	05.08 बजे

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 08 जुलाई, 2025
www.azadsipahi.in

तैयारी : पर्यटन मंत्री ने श्रावणी मेले को लेकर समीक्षा बैठक की

बाबाधाम में वीआइपी ट्रीटमेंट नहीं, 2 दिन शीघ्र दर्शनम भी नहीं होगा : सुदिव्य सोनू

श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए रविवार और सोमवार को शीघ्र दर्शनम की सुविधा नहीं रहेगी

आजाद सिपाही संवाददाता

देवघर। देवघर, संजीत मंडल- झारखंड के पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने देवघर सर्किट हाउस में राजकीय श्रावणी मेले की तैयारी की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि बाबाधाम में इस बार किसी को वीआइपी ट्रीटमेंट नहीं दिया जायेगा। कार्मिक विभाग ने इस आशय का आदेश भी जारी कर दिया है। वहीं रविवार और सोमवार को शीघ्र दर्शनम पर भी रोक रहेगी। रविवार और सोमवार को सावन महीने में श्रद्धालुओं की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो जाती है। इस कारण आम श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की दिक्कत नहीं हो, इसलिए शीघ्र दर्शनम कूपन की व्यवस्था सप्ताह में दो दिन नहीं रहेगी।

अबुआ सरकार आपकी सेवा में तत्पर

पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने कहा कि श्रावणी मेले के दौरान प्रतिदिन लाखों की संख्या में श्रद्धालु गंगा जल लेकर सुल्तानगंज (भागलपुर, बिहार) से देवघर (झारखंड) पहुंचते हैं। इन श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। इसलिए इस बार श्रावणी मेला में श्रद्धालुओं को बेहतर से बेहतर सुविधाएं और सुरक्षा मुहैया करायी जायेगी। बाबाधाम आने वाले श्रद्धालुओं को सुरक्षित और सुलभ जलार्पण की सुविधा उपलब्ध करना झारखंड सरकार और देवघर जिला प्रशासन की प्राथमिकता है। मंत्री ने कहा कि पिछली दो समीक्षा बैठकों में संबंधित विभागों के अधिकारियों को 5 जुलाई तक श्रावणी मेला से संबंधित सारे कार्य को पूर्ण कर लेने का निर्देश दिया गया था। लगभग 90 से 95% काम पूरा हो गया है। पर्यटन विभाग का यह प्रयास है कि हर बार से और बेहतर सुविधाएं श्रद्धालुओं को दी जायें उसी अनुरूप सभी विभाग तैयारी को अंतिम रूप दे रहे हैं।

कड़ी सुरक्षा और बेहतर व्यवस्था प्राथमिकता

मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने समीक्षा बैठक की जानकारी देते हुए कहा कि पिछले वर्ष की तुलना में इस बार श्रद्धालुओं को बेहतर व्यवस्था दी जायेगी। पूरे सावन महीने के दौरान देवघर आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सभी बुनियादी सुविधाओं और सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम रहेगा। समीक्षा बैठक में संथाल परगना कमिश्नर लालचंद डाडेल, पर्यटन सचिव मनोज कुमार, जेटीडीसी के एमडी, पुलिस अधीक्षक देवघर, पुलिस अधीक्षक दुमका, नगर आयुक्त, अनुमंडल पदाधिकारी देवघर, जिला नजारत उप समाहर्ता, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, प्रभारी पदाधिकारी गोपनीय शाखा, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, पुलिस उपाधीक्षक (मुख्यालय), कार्यपालक अभियंता विद्युत आपूर्ति प्रमंडल, कार्यपालक अभियांत्रिकी विद्युत प्रमंडल धनबाद, कार्यपालक अभियंता पथ प्रमंडल, कार्यपालक अभियंता भवन प्रमंडल, कार्यपालक अभियांता भवन निर्माण निगम, सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी एवं संबंधित विभाग के अधिकारी आदि उपस्थित थे।

रिम्स 2 को लेकर कांग्रेस में मंथन जारी

बंधु तिर्की ने सौंपी रिपोर्ट पार्टी जल्द लेगी निर्णय

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रिम्स 2 के मुद्दे पर कांग्रेस में मंथन जारी है। पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश को अपनी रिपोर्ट सौंप दी है। इससे पहले, प्रदेश अध्यक्ष ने बंधु तिर्की और कांके विधायक सुरेश बैठा से इस मुद्दे पर रिपोर्ट मांगी थी।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने कहा कि पार्टी को मिल रहे रिपोर्ट का अध्ययन कर कांग्रेस निर्णय लेगी। उन्होंने कहा कि जल्द ही पार्टी इस मुद्दे पर अपना रुख स्पष्ट करेगी।

कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा कि उन्होंने अपनी रिपोर्ट सौंप दी है, जिसमें हर पहलू को रखा गया है। उन्होंने कहा कि इस जमीन को लेकर 2012 में तत्कालीन केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री जयराम रमेश की नोटिंग भी है। अब पार्टी को सारे रिपोर्ट को देखकर तय करना है कि आगे पार्टी क्या स्टैंड लेगी। कांग्रेस पार्टी जल्द ही रिम्स 2 के मुद्दे पर अपना रुख स्पष्ट करने की तैयारी कर रही है। पार्टी के नेता और कार्यकर्ता इस मुद्दे पर सक्रिय रूप से शामिल हैं और पार्टी के निर्णय का इंतजार कर रहे हैं।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष रोजी-रोजगार की स्थिति में सुधार,भाई-बहनों का सहयोग मिलेगा.

वृष कार्यक्षेत्र में संतोषजनक प्रगति होगी.संकल्पित काम पूरे होंगे भौतिक सुख-सुविधा बढ़ेगी

मिथुन परिश्रम-प्रयत्न से रुके हुए काम पूरे होंगे,आर्थिक स्थिति सुदृढ़, निर्माण कार्य में प्रगति।

कर्क अनायास काम बनेंगे.आर्थिक स्थिति सुधरेगी,मान-सम्मान मिलेगा. नये लोगों से संपर्क।

सिंह आज का दिन काफी अच्छा और प्रगतिवर्धक रहेगा. विपरीत स्थितियों में सुधार।

कन्या व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होगी.कामकाज अच्छा चलेगा. धनागम के अवसर बढ़ेंगे।

तुला आपने सोचे अनुसार काम कम होंगे.नौकरी में स्थानांतरण अथवा अधिकारियों के साथ मतभेद होने की संभावना।

वृश्चिक संतान,परिवार और स्वजन मित्रों से संपर्क ठीक रहेगा,रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में सफलता।

धनु आज का दिन आपके लिए प्रगतिकारक रहेगा. विद्या-बुद्धि-प्रतिभा का विकास होगा।

मकर थोड़े परिश्रम से ही अभीष्ट कार्य सिद्ध होंगे,वाहन सुख,यात्रा सुखद. धन लाभ के अवसर बनेंगे।

कुंभ अव्यवस्थित दिनचर्या, शारीरिक कष्ट, वाहन दुर्घटना भय, खर्च अधिक होगा।

मीन घरेलू आवश्यकताओं पर अधिक व्यय करना पड़ेगा, मानसिक चिंता बढ़ेगी।

पूर्व विधायक जानकी यादव राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष होंगे

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। पूर्व विधायक जानकी यादव राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष होंगे। इस पर सीएम ने अपनी स्वीकृति दे दी है। वहीं गिरिडीह के पूर्व कांग्रेस जिलाध्यक्ष नरेश वर्मा आयोग के सदस्य होंगे। बता दें कि जानकी यादव पिछले विधानसभा चुनाव में झामुमो के टिकट पर बरकट्ठा से चुनाव लड़े थे। आयोग में पहले से दो सदस्य नंद किशोर मेहता और लक्ष्मण यादव हैं। अब सदस्य के तीनों पद पर नियुक्ति हो जायेगी। राज्य

निर्वाचन आयोग के अध्यक्ष पद पर भी नियुक्ति होगी। इन नियुक्तियों के बाद राज्य में नगर निकायों के चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो जायेगी। बता दें कि सभी 24 जिलों में ट्रिपल टेस्ट का काम पूरा कर लिया है। इसके कंपाइलेशन के लिए एजेंसी चयन की प्रक्रिया जारी है। पिछले महीने रांची आयी 16वें वित्त आयोग की टीम ने भी स्पष्ट कर दिया था कि चुनाव नहीं कराने की स्थिति में केंद्रीय अनुदान मिलना मुश्किल होगा। नगर निकायों में केंद्रीय अनुदान नहीं मिलने से कई योजनाएं लंबित हैं और भविष्य की नयी योजनाओं के कार्यान्वयन में भी बाधा उत्पन्न हो रही है।

प्रदेश कांग्रेस पार्टी के जनता दरबार में मंत्री ने 49 फरियादियों की सुनी समस्याएं

कार्यालय का चक्कर लगवाना बंद करें अधिकारी: राधाकृष्ण किशोर

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में सोमवार को आयोजित जनता दरबार में वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने आम जनों की समस्याएं सुनीं। जनता दरबार के बाद पत्रकारों से बात करते हुए वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर ने कहा कि कई योजनाओं का पैसा केंद्र सरकार ने रोक रखा है। केंद्र की ओर से नकारात्मक सहयोग है और अंशदान नहीं दिया जा रहा है। इसके चलते वृद्धा पेंशन जैसी कई योजनाओं का लाभ लोगों को नहीं मिल रहा है। भाजपा लोगों के बीच दुष्प्रचार करती है कि झारखंड सरकार लोगों को पैसा नहीं दे रही है। सरकार कार्यों में कोताही बर्दाश्त नहीं करेगी। जनता का काम समय पर अधिकारियों को करना होगा। उन्होंने कहा कि अधिकारी यदि संभव है तो काम करें नहीं तो जनता को बता दें कि यह कार्य नहीं हो सकता है। आम लोगों को बेवजह कार्यालय और अधिकारियों का चक्कर लगवाना बंद करना होगा। मंत्री ने कहा कि हम त्वरित परिणाम पर विश्वास करते हैं। पूर्ववर्ती सरकार की

कार्यशैली और कार्य संस्कृति में अधिकारियों को बदलाव लाना होगा। हम जनता के लिए आये हैं। इसलिए अधिकारियों को लोगों का काम करना होगा, टालमटोल की नीति बदलनी होगी। कांग्रेस भवन में आयोजित जनता दरबार में आम जनों की समस्याओं को सुनने के क्रम में उपस्थित केशव महतो कमलेश ने कहा कि इस परिपाटी के आरंभ होने से जनता के बीच सकारात्मक संदेश जा रहा है। जनता समझ रही है कि सरकार समस्याओं को धरातल पर समाधान करने के लिए कार्रवाई कर रही है।

वहीं प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शांति ने बताया कि जनता दरबार में कुल 49 मामले आये। इसमें बिजली विभाग, सड़क निर्माण, जमीन संबंधी, तालाब जीर्णोद्धार-निर्माण, अबुआ आवास सहित कई शामिल हैं। समस्याओं को सुनने के क्रम में मंत्री ने सीधे अधिकारियों से समस्याओं के संदर्भ में बात की और समस्याओं का समाधान त्वरित एवं समय पर करने को कहा। इसी क्रम में भू अर्जन से संबंधित एक मामले में शिकायतकर्ता ने कहा कि एनएचआइ ने जमीन का अधिग्रहण किया था। जिस व्यक्ति की जमीन अधिग्रहित की गयी थी उसने दो शादियां की थीं, लेकिन दूसरी शादी को कानूनी मान्यता नहीं थी। वित्त मंत्री ने जिला भू - अर्जन पदाधिकारी को फोन कर मामले की जानकारी मांगी। इसपर भू-अर्जन पदाधिकारी ने मामले को अपने अधिकार क्षेत्र का न होने की जानकारी दी। किशोर ने कहा कि आपके द्वारा वस्तु स्थिति की जानकारी सीओ से मांगी जा सकती थी जो आपके अधिकार क्षेत्र में आता है, परंतु आपने ऐसा नहीं किया। यह मामला फरवरी 2024 का है। भू-अर्जन पदाधिकारी ने ऐसे किसी आवेदन के मिलने से इंकार कर दिया। वहीं शिकायतकर्ता ने भू-अर्जन पदाधिकारी कार्यालय को दिये गये आवेदन की प्रतिलिपि भी दिखायी। वित्त मंत्री ने तत्काल इस मामले की जानकारी भू राजस्व सचिव सचिव को दी भू राजस्व सचिव ने तत्काल इस मामले पर संज्ञान लेकर कार्रवाई की बात कही। इस मौके पर प्रदेश कांग्रेस के विनय सिन्हा दीपू, शशि भूषण राय, अभिलाष साहू, राजन वर्मा, नरेंद्र लाल गोपी राजीव चौधरी सहित अन्य उपस्थित थे।

निशिकांत दुबे ने ठाकरे बंधुओं को दी चुनौती

इतने बड़े बॉस हो तो बिहार-यूपी आओ, पटक-पटक कर मारेंगे

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। गोड्डा के भाजपा सांसद डॉ निशिकांत दुबे ने महाराष्ट्र में हिंदी भाषी लोगों पर हाल ही में हुए हिंसक हमलों के लिए महाराष्ट्र नव निर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख राज ठाकरे और उनके चचेरे भाई तथा शिवसेना (यूबीटी) के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे पर सोमवार को तीखा हमला बोला और उन्हें चुनौती दी कि वे उत्तर प्रदेश, बिहार या तमिलनाडु में जाकर वहां भी ऐसा करने की कोशिश करें। ठाकरे बंधुओं द्वारा महाराष्ट्र में काम करने वाले उत्तर भारतीय लोगों के खिलाफ किये गये हमले का जिक्र करते हुए दुबे ने कहा कि आप उत्तर प्रदेश, बिहार या तमिलनाडु में आ जाइए। लोग आपको पटक-पटक कर मारेंगे।

डॉ निशिकांत दुबे ने कहा कि आप लोग हमारे पैसे से जी रहे हैं।

आपके पास किस तरह के उद्योग हैं। अगर आप इतने साहसी हैं और हिंदी बोलने वालों को पीटते हैं, तो आपको उर्दू, तमिल और तेलुगु बोलने वालों को भी पीटना चाहिए। अगर आप इतने बड़े बॉस हैं, तो महाराष्ट्र से बाहर आयें। बिहार, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु में आयें। तुमको पटक-पटक कर मारेंगे। उन्होंने कहा कि हम सभी मराठी और महाराष्ट्र के लोगों का सम्मान करते हैं, जिन्होंने भारत की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी।

भाजपा सांसद ने साफ तौर पर कहा कि बीएमसी चुनाव होने वाले हैं। इसलिए, राज और उद्धव सस्ती राजनीति कर रहे हैं। अगर उनमें हिम्मत है, तो उन्हें माहिम जाना चाहिए और माहिम दरगाह के सामने किसी भी हिंदी या उर्दू बोलने वाले को पीटना चाहिए। हाल के हफ्तों में कुछ वीडियो सामने आये और सोशल मीडिया पर वायरल हुए, जिनमें मनसे कार्यकर्ताओं को उत्तर भारतीय मजदूरों और विक्रेताओं पर हमला करते हुए दिखाया गया, जब उन्होंने महाराष्ट्र की मूल भाषा मराठी में बातचीत करने में असमर्थता व्यक्त की। उत्तर भारतीयों के खिलाफ हमले की घटनाएं तब हुई हैं, जब एक सप्ताह पहले देवेंद्र फडणवीस सरकार ने राज्य में तीन-भाषा नीति को वापस ले लिया था।

4224 करोड़ से अधिक की परियोजनाओं में कार्य प्रगति पर

रांची रेल क्षेत्र में हो रहा अभूतपूर्व विकास : संजय सेठ

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रांची लोकसभा क्षेत्र में रेलवे विकास को लेकर रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने सोमवार को अपने कार्यालय स्थित नमो इ-लाइब्रेरी में एक प्रेस वार्ता आयोजित की। इस दौरान उन्होंने पिछले तीन वर्षों में हुए कार्यों और प्रगति पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि रांची लोकसभा क्षेत्र में चार प्रमुख रेल मंडल- रांची, चक्रधरपुर, आद्रा और धनबाद आते हैं, जहां कुल मिलाकर 4224 करोड़ से अधिक की लागत वाली योजनाओं पर काम जारी है। इनमें से कई परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं, जबकि कई पर कार्य तेजी से चल रहा है।

ओवरब्रिज, अंडरपास और स्टेशन उन्नयन जैसे कार्यों पर 732 करोड़ रुपये की लागत से निर्माण कार्य चल रहा है। नामकुम, टाटीसिलवे और चांडिल में माल ढुलाई (गुड्स शेड) का अपग्रेडेशन 54 करोड़ की लागत

से किया जा रहा है, जिससे मालवाहक ट्रेनों की सुविधा के साथ-साथ रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

प्रमुख रेल परियोजनाएं

- कोडरमा-रांची रेल लाइन का दोहरीकरण लगभग पूर्ण हो चुका है, जिसकी लागत 234 करोड़ है।
- मैकलुस्किगंज में 291 किमी लंबी तीसरी लाइन के निर्माण के लिए 356 करोड़ की योजना स्वीकृत है।
- चांडिल से अनार तक नयी रेल लाइन का निर्माण 1932 करोड़ में किया जाना है।
- भारत में पहली बार, एनएच के साथ मिलकर रेलवे लेवल क्रॉसिंग का निर्माण हो रहा है, जिसकी लागत 120 करोड़ है।

स्टेशन अपग्रेड और यात्री सुविधाएं

- अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत रांची और हटिया स्टेशनों पर 88 करोड़ की लागत से ट्रैक निर्माण एवं अन्य कार्य जारी हैं।
- प्लेटफॉर्म 1बी के विस्तार के लिए 6 करोड़, जबकि दिव्यांगजनों की सुविधा के लिए शौचालय, काउंटर, पेयजल आदि पर 12 करोड़ खर्च किये जा रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधा

- ग्रामीण इलाकों में अंडरपास और ओवरब्रिज निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया है। चांडिल-कदमडीह अंडरपास का कार्य 75% पूर्ण हो चुका है।
- एचइसी क्षेत्र में दो आरओबी परियोजनाएं राज्य सरकार के सहयोग से जल्द शुरू होने जा रही हैं।

प्रस्तावित कार्य

नामकुम, गंगाघाट, मुरी, सिल्ली, गोविंदधारा सहित कई स्टेशनों पर स्वच्छता, प्लेटफॉर्म उन्नयन, लिफ्ट, शौचालय, वेटिंग हॉल आदि सुविधाओं का विकास 14 करोड़ की लागत से किया जा रहा है। मंत्री संजय सेठ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इन परियोजनाओं के माध्यम से झारखंड को आधुनिक रेलवे नेटवर्क की सौगात मिलेगी।

इस अवसर पर उन्होंने कैप्टन विक्रम बत्रा की शहादत दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की और महेंद्र सिंह धोनी को जन्मदिन की बधाई भी दी।

रिम्स निदेशक प्रकरण को लेकर इरफान अंसारी को दी नसीहत

राज्यहित में न करें जल्दबाजी : सरयू राय

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। विधायक सरयू राय ने रिम्स निदेशक प्रकरण को लेकर स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी को नसीहत दी है। कहा है कि रिम्स निदेशक को हटाने की मुहिम का संदेश राज्यहित में नहीं है। इसपर रोक लगाने का आदेश दें, स्थानीय सांसद व विधायक का अभिमत मानें। मकड़जाल में फंसने से बचें। बे-बात की बात को दूर तक ले जाना व्यवहारिक नहीं है। यदि कोई अनियमितता है तो उसके विरुद्ध कारवाई जरूर करें। रिम्स निदेशक

डॉ राजकुमार ने स्वास्थ्य मंत्री द्वारा भेजे गये शोकॉज नोटिस को हाइकोर्ट में चुनौती दी है। डॉ राजकुमार ने आरोप लगाया है कि शोकॉज नोटिस दुर्भावनापूर्ण है और उन्हें पद से हटाने की साजिश का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि जिन बिंदुओं पर स्पष्टीकरण मांगा गया है, वे सभी कार्य रिम्स की नियमावली और शासी परिषद के निर्णयों के तहत किये गये हैं। डॉ राजकुमार ने कहा कि यदि आरोप सिद्ध हो जायें, तो वे खुद इस्तीफा दे देंगे। उन्होंने हाइकोर्ट से अपील की है कि जब तक मामला लंबित है, उनके खिलाफ कोई अग्रिम कार्रवाई न की जाये। वहीं स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने अभी तक इस मामले में कोई टिप्पणी नहीं की है। लेकिन माना जा रहा है कि वे अपने आरोपों को साबित करने के लिए कोर्ट में अपना पक्ष रखेंगे।

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 08 जुलाई, 2025
www.azadsipahi.in
04

रोटरी क्लब ने राज अस्पताल के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया

जरूरतमंद मरीजों के लिए 49 लोगों ने रक्तदान किया, स्वच्छता और सुरक्षा का रहा विशेष ध्यान

रोटरी क्लब के रक्तदान शिविर में रक्तदान करते हुए रक्तदाता।

रोटरी क्लब के रक्तदान शिविर में अतिथियों को सम्मानित करते पदाधिकारी।

रोटरी क्लब के रक्तदान शिविर में राज हॉस्पिटल ब्लड सेंटर की टीम के साथ रोटरी क्लब के पदाधिकारी।

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज अस्पताल के सहयोग से रोटरी रांची डाउनटाउन के नेतृत्व में रांची के सभी रोटरी क्लबों द्वारा रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर राज हॉस्पिटल्स, मेन रोड, रांची में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 49 व्यक्तियों ने रक्तदान किया, जिससे जीवन बचाने के महान उद्देश्य में योगदान दिया गया। रक्तदान शिविर रोटरी क्लब की समाज सेवा और समाज कल्याण को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

शिविर का आयोजन सुरक्षा और स्वच्छता के सख्त दिशा निर्देशों के तहत किया गया था, जिससे दाताओं की भलाई सुनिश्चित की जा सके। राज हॉस्पिटल ब्लड सेंटर की टीम ने शिविर का कुशलता से प्रबंधन किया, जिससे कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया जा सके। दान किया गया रक्त जरूरतमंद मरीजों की सहायता के लिए उपयोग किया जायेगा, जिससे स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।

कार्यक्रम में पूर्व जिला गवर्नर जोगेश गंभीर और राजीव मोदी, नामित जिला गवर्नर मुकेश तनेजा, क्षेत्रीय निदेशक दीपक श्रीवास्तव, सहायक गवर्नर हरमिंदर सिंह, मंजू गंभीर और मर्यादा गंभीर उपस्थित थे। अध्यक्ष अमित अग्रवाल, विनीता जैन और विभूति शरण भी उपस्थित थे। अन्य उपस्थित लोगों में ऋषा गुप्ता, दिव्या गुप्ता, ऋचा पटेल और भूपिंदर जग्गी, शालिनी गुप्ता,भावना तनेजा और अन्य लोग शामिल थे। आयोजकों ने दाताओं, राज हॉस्पिटल और सभी स्वयंसेवकों को धन्यवाद दिया, जिन्होंने कार्यक्रम की सफलता में योगदान दिया। उनकी निस्वार्थ प्रयास और उद्देश्य के प्रति समर्पण वास्तव में प्रशंसनीय है। रांची का रोटरी क्लब समुदाय में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रयासरत हैं, और यह रक्तदान शिविर इस लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

रक्षा राज्य मंत्री आज जनता से करेंगे संवाद

भाजपा राष्ट्रीय मुख्यालय नयी दिल्ली में आयोजित है कार्यक्रम

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ सोमवार को भाजपा राष्ट्रीय मुख्यालय नयी दिल्ली में कार्यकर्ताओं, नागरिकों और आम जनता के साथ संवाद करेंगे। भाजपा केंद्रीय नेतृत्व की ओर से लिये गये निर्णय के तहत भाजपा से जुड़े सभी मंत्रियों को महीने में एक बार भाजपा राष्ट्रीय मुख्यालय में बैठकर लोगों से मिलना और संवाद करना है। इसी के तहत आठ जुलाई को रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ सुबह 10:30 बजे से शाम के 5:30 बजे तक भाजपा मुख्यालय में कार्यकर्ताओं व नागरिकों से संवाद करेंगे। जो भी नागरिक या कार्यकर्ता रक्षा राज्य मंत्री से मिलना चाहते हैं, वह मंगलवार को तय इस समय के अनुसार भाजपा मुख्यालय में मिल सकते हैं।

निर्मला का समर्थन करनेवालों का आजसू ने जताया आभार

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आजसू पार्टी ने रांची जिला परिषद अध्यक्ष और पार्टी महासचिव निर्मला भगत के विरूद्ध लाये गये अविश्वास प्रस्ताव के निरस्त हो जाने पर उन्हें बधाई दी है और उनका समर्थन करने वाले सभी सांसदों, विधायकों, जिला परिषद सदस्यों और प्रखंड प्रमुखों का आभार जताया है। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता डॉ देवशरण भगत ने कहा है कि निर्मला भगत ने जिला परिषद अध्यक्ष के रूप में अपनी कार्यशैली और नीतियों से एक अलग पहचान बनायी है, जिसपर ज्यादातर सदस्यों ने अपना भरोसा जताया है। निर्मला भगत पार्टी की केंद्रीय महासचिव हैं और झारखंड आंदोलनकारी एवं सरना धर्म गुरु रहे वीरेंद्र भगत की पत्नी हैं। अविश्वास प्रस्ताव के मतदान में 65 मतदाताओं में से मात्र आठ लोग ही उपस्थित हुए। इससे कोरम पूरा नहीं हो पाया और प्रस्ताव निरस्त हो गया। वहीं पार्टी नेता प्रवीण प्रभाकर ने भी निर्मला भगत को बधाई दी है और कहा है कि जिला परिषद को भ्रष्टाचार का अखाड़ा बनाने को लालायित लोगों की हार हुई है। निर्मला को बधाई देनेवालों में आजसू पार्टी के दीपक महतो, चिंटू मिश्रा, बनमाली मंडल, नईम अंसारी, परवाज खान, ज्ञान सिन्हा, कुमोद वर्मा, ज्योत्सना केरकेट्टा, राजाराम महतो, लाल प्रेम प्रकाशनाथ शाहदेव, अनिल महतो, संजय गोप, ओम वर्मा सहित अन्य शामिल हैं।

झारखंड शराब घोटाले में एसीबी ने फिर की कार्रवाई

छत्तीसगढ़ के दो कारोबारी गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड में 70 करोड़ से अधिक के शराब घोटाला मामले में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने बड़ी कार्रवाई की है। सोमवार को एसीबी की टीम ने ओम साईं कंपनी के डायरेक्टर अतुल कुमार सिंह और मुकेश मनचंदा को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार दोनों व्यक्ति छत्तीसगढ़ के रहने वाले हैं। इससे पहले एसीबी की टीम ने कार्रवाई करते हुए बीते दो जुलाई को प्रिज्म होलोग्राफी कंपनी के प्रबंध निदेशक (एमडी) विधु गुप्ता को गिरफ्तार किया था। यह शराब घोटाले में एसीबी द्वारा की गयी दसवीं गिरफ्तारी है। इस घोटाले की जड़ें छत्तीसगढ़ में हुए इसी तरह के घोटाले से जुड़ी हुई हैं। गिरफ्तार कारोबारी सिद्धार्थ सिंघानिया ने ही प्रिज्म होलोग्राफी और उसके निदेशक विधु गुप्ता को झारखंड में अवैध जनशक्ति मॉडल के सक्रिय संचालक के रूप में पेश किया था।

इस घोटाले में आबकारी लाइसेंस धारकों और झारखंड स्टेट बेवरेजेज कॉरपोरेशन लिमिटेड (जेएसबीसीएल) की निविदाओं के लिए विधु गुप्ता की एजेंसी के माध्यम से फर्जी जनशक्ति की लगातार तैनाती की गयी। सार्वजनिक धन का गबन करने के लिए फर्जी दस्तावेजों और बढ़ाये गये वेतन दावों का भी इस्तेमाल किया गया। जांच में यह भी सामने आया है कि विधु गुप्ता के नियंत्रण में ठेकेदारों, आबकारी अधिकारियों और जनशक्ति एजेंसियों को शामिल करते हुए विभिन्न राज्यों में एक संरचित नेटवर्क काम कर रहा था। यह गिरफ्तारी झारखंड शराब घोटाले की जांच में एक महत्वपूर्ण मोड़ मानी जा रही है। आने वाले दिनों में और भी गिरफ्तारियां होने की संभावना है।

एसबीयू में ग्रीन एनर्जी पर फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सरला बिरला विश्वविद्यालय में सोमवार को ग्रीन एनर्जी टेक्नोलॉजिस फॉर अ सस्टेनेबल एनवायरमेंट विषय पर एक फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफडीपी) की शुरूआत हुई। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सतत ऊर्जा प्रणालियों के प्रति जागरूकता और क्षमतावर्धन को प्रोत्साहित करना है। यह एफडीपी मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग और सिविल और एनवायरनमेंटल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा आइक्यूएसी और इंस्टीट्यूशन इनोवेशन काउंसिल के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम सात से 11 जुलाई तक चलेगा। इस अवसर पर एसबीयू के कुलपति प्रो. सी जगनाथन ने ऊर्जा और सततता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अकादमिक समुदाय को वैश्विक हरित परिवर्तन में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया। महानिदेशक प्रो. गोपाल पाठक ने बदलती जलवायु नीतियों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए प्रतिभागियों से राष्ट्रीय सततता प्राथमिकताओं के अनुरूप अनुसंधान को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। प्रो. पंकज कुमार गोस्वामी डीन फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग एंड कंप्यूटर साइंस ने भविष्य के नवाचार, आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संरक्षण में ऊर्जा की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने शिक्षकों और शोधकर्ताओं से हरित ऊर्जा प्रौद्योगिकियों को अपनाने और समाज के दीर्घकालिक हित में पहल करने का आग्रह किया। पहले दिन देश के प्रमुख शोधकर्ताओं द्वारा विशेषज्ञ वार्ता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ संतोष कुमार साहू एसोसिएट प्रोफेसर आइआइटी मद्रास ने भारत के विनिर्माण क्षेत्र में कार्बन मूल्य निर्धारण विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ बसुदेव प्रधान असिस्टेंट प्रोफेसर केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड ने सतत पर्यावरण के लिए सौर फोटोवोल्टेक प्रौद्योगिकी विषय पर चर्चा की। इसमें उन्होंने ऊर्जा मांगों को स्थायी रूप से पूरा करने में सौर नवाचारों की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस एफडीपी में पूरे देश से लगभग दो सौ प्रतिभागियों ने ऑनलाइन माध्यम से भाग लिया। कार्यक्रम के आयोजन पर एसबीयू के प्रतिकुलाधिपति बिजय कुमार दलान और राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप कुमार वर्मा ने शुभकामनायें दीं। एफडीपी के संयोजकों में शामिल डॉ सागर सारंगी ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उद्घाटन सत्र के दौरान आयोजन समिति के सदस्य भी मौजूद रहे।

डोरंडा कॉलेज की एनएसएस इकाई ने आयोजित किया स्वास्थ्य शिविर

रांची (आजाद सिपाही)। डोरंडा कॉलेज की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई द्वारा चल रहे सात दिवसीय शिविर के छठे दिन नामकुम खिजरी गांव के आंगनबाड़ी केंद्र में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में गांव के ग्रामीणों और विद्यार्थियों के आंख, कान और स्वास्थ्य की जांच करायी गयी। एनएसएस वॉलिंटियर्स ने स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया, जिसमें ग्रामीणों को स्वास्थ्य के महत्व और स्वच्छता के बारे में जानकारी दी गयी। यह कार्यक्रम एनएसएस कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो कंचन मुंडा, डॉ एमलिन केरकेट्टा और डॉ अलका दित्या तिग्गा की देखरेख में संपन्न हुआ। इस शिविर को सफल बनाने में एनएसएस वॉलिंटियर्स का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसमें रौनक, अनुभव, विपुल, अंश, आशियाना, शबनम, अंकिता, जमील, अविनाश, नायाब, कंचन, गोलू, ऋषभ आदि वॉलिंटियर्स ने अपनी सक्रिय भागीदारी निभायी।

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कर्पूरी ग्राम स्टेशन के पश्चिम छोर पर सब-वे के निर्माण का किया शिलान्यास

आजाद सिपाही संवाददाता

हाजीपुर। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सोमवार को बिहार के दौरे पर पटना पहुंचे। इस दौरान रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सर्वप्रथम दीघा ब्रिज हाल्ट का निरीक्षण किया। तत्पश्चात रेल मंत्री ने दीघा ब्रिज हाल्ट से कर्पूरी ग्राम के बीच विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

सोमवार को रेल मंत्री के बिहार के दौरे के दौरान केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर, दरभंगा के माननीय सांसद गोपाल ठाकुर, समस्तीपुर की सांसद श्रीमती शांभवी, बिहार विधान परिषद के माननीय विधायक डॉक्टर तरूण कुमार एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कर्पूरी ग्राम स्टेशन पर रेल मंत्री द्वारा कर्पूरीग्राम स्टेशन के उन्नयन एवं कर्पूरीग्राम स्टेशन के पश्चिमी छोर पर सब-वे के निर्माण का शिलान्यास किया गया। शिलान्यास के उपरांत रेल मंत्री कर्पूरीग्राम स्टेशन पर प्रेस प्रतिनिधियों से वार्ता करते हुए कहा कि कर्पूरीग्राम स्टेशन का 3.30 करोड़ रुपये की लागत से उन्नयन कार्य किया जायेगा, जिसके तहत स्टेशन का रिमॉडलिंग एवं स्टेशन पर यात्रियों को आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराया जायेगा। साथ ही कर्पूरी ग्राम स्टेशन पर 18 फीट चौड़ा एफओबी का निर्माण किया जायेगा इसके साथ ही स्टेशन के पश्चिमी छोर पर 14 करोड़ रुपये की लागत से एक सब-वे का निर्माण कराया जायेगा। समस्तीपुर मंडल में वर्तमान में 1265 कोचों के रख-रखाव किया जा रहा है। इन प्रत्येक कोचों में 06 कैमरा तथा प्रत्येक इंजनों में 08 कैमरा निर्धारित समय में लागने का रेल मंत्री द्वारा अधिकारियों को निर्देश दिया गया। उन्होंने सघन आबादी वाले क्षेत्रों में जहां आरओबी बनाया जाना संभव न हो वैसे जगहों पर लाइट आरओबी के निर्माण का निर्देश दिए। कंटेनर सेवा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आवश्यकतानुसार कंटेनर डिपो के निर्माण का निर्देश दिये। उन्होंने पूर्व मध्य रेल को भारतीय रेल का पहला ऐसा जोन बनाने का निर्देश दिया जो शत-प्रतिशत इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग से युक्त हो ।

महत्वपूर्ण खबरें

डॉ बंदे खलखो बनाये गये स्नातकोत्तर कुड़ुख विभाग के नये एचओडी बने

रांची (आजाद सिपाही)। डॉ बंदे खलखो को स्नातकोत्तर कुड़ुख विभाग का नया एचओडी बनाया गया। इस अवसर पर डॉ खलखो का रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा संकाय में सोमवार को स्वागत किया। इस अवसर पर टीआरएल संकाय के पूर्व समंवयक डॉ हरि उरांव, नागपुरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ उमेश नंद तिवारी, मुंडारी विभाग के मनय मुंडा, डॉ कुमारी शशि, डॉ किशोर सुरिन, डॉ बीरेंद्र कुमार महतो, डॉ करम सिंह मुंडा, डॉ दमयंती सिंकू, डॉ अनुराधा मुंडू, डॉ रीझू नायक, डॉ अर्चना कुमारी, जय प्रकाश उरांव, डॉ दिनेश कुमार दिनमणि, डॉ सरस्वती गागराई के अलावा नवों भाषा विभाग के शिक्षक, शोधार्थी और छात्रों समेत अन्य ने उन्हें बधायी और शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर नवनियुक्त विभागाध्यक्ष डॉ बंदे खलखो ने कहा कि हर व्यक्ति को अपने कार्यों के प्रति ईमानदारी बरतनी चाहिए। निरंतर प्रयास से व्यक्ति हमेशा सफल होता है। उन्होंने कहा कि आप जैसा काम करेंगे तो समाज में आपकी छवि वैसी ही बनेगी। इसलिए हमेशा अच्छा करने का प्रयास करना चाहिए। आपसी सामंजस्य के साथ विभाग में शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक कार्यों को संपन्न कराना मेरी प्राथमिकता होगी।

श्री कृष्ण नगर कॉलोनी में मां ज्वाला देवी की ज्योति की स्थापना दिवस पर भव्य कार्यक्रम

रांची (आजाद सिपाही)। श्री राधा कृष्ण मंदिर, कृष्ण नगर कॉलोनी में मां ज्वाला देवी की ज्योति की स्थापना दिवस पर सोमवार को भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर भक्तों ने जय माता दी के जयकारे लगाये और मंदिर परिसर में मां ज्वाला देवी के ज्योति के दर्शन किये। मीडिया प्रभारी अरुण जसूजा ने बताया कि प्रातः 7:00 बजे से ही भक्तों की कतार मंदिर परिसर में मां ज्वाला देवी के ज्योति के दर्शन के लिए लगी रही। पंडित ज्ञान देव मिश्रा के द्वारा वैदिक मंत्र उच्चारण के साथ पूजा अर्चना की गयी और भक्तों को मां ज्वाला देवी के ज्योत के दर्शन कराये गये। भक्तों ने नारियल और घी मां के चरणों में अर्पित किया और नेत्रहीन बच्चियों का कन्या पूजन किया गया। ब्राह्मण पूजन के बाद भंडारे का आयोजन मंदिर परिसर में किया गया, जिसमें लगभग 2000 लोगों ने मां का प्रसाद ग्रहण किया। मां की चौकी में श्री दुर्गा जागरण मंडली और धनबाद से आये भजन सम्राट पिंटू शर्मा के द्वारा भजनों की गंगा बहायी गयी। मां के भंडारे का आयोजन भी मंदिर कमेटी के द्वारा सुबह और रात्रि में किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री राधा कृष्ण मंदिर कमेटी के प्रधान नंदकिशोर अरोड़ा, मनोहर लाल जसूजा, चंद्रभान तलेजा, रामचंद्र तलेजा, सुनील कटारिया चंदन सिडाना, किशोरी पपनेजा, अंचल किंगर, केसर पपनेजा, अरुण जसूजा, हरीश अरोड़ा, मनोज किंगर, हरीश मनूजा, गौरीशंकर मादनपौत्रा, विशाल अरोड़ा, कमल घई, नरेश खत्री, मनीष मुंजाल सहित अन्य लोग का योगदान रहा।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
1 Channel
Subscribe NOW

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 08 जुलाई, 2025
www.azadsipahi.in

करमा प्रोजेक्ट हादसा: आंदोलन से सीसीएल को एक करोड़ का नुकसान, थाने में शिकायत

जेएलकेएम के दो नेताओं समेत 6 लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

कुजू पुलिस पूरे प्रकरण की जांच पड़ताल में जुटी

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। करमा प्रोजेक्ट में अवैध खनन में मारे गये चार लोगों के मामले में अब तक दो मामला दर्ज हो चुका है। पहले मांडू सीओ ने सीसीएल अधिकारी और कर्मियों पर मामला दर्ज कराया। अब सीसीएल ने कुजू ओपी में मामला दर्ज करा कर राजनीतिक पार्टियां पर गंभीर आरोप लगाया है। उसने बताया कि गैर कानूनी तरीकेसे किये गये आंदोलन से सीसीएल को कितना नुकसान हुआ है। सीसीएल सुरक्षा प्रभारी ने आवेदन में बताया है कि आंदोलन से सीसीएल को एक करोड रुपये का नुकसान हुआ है। इस मामले में जेएलकेएम के दो नेताओं बिहारी महतो और पनेश्वर महतो समेत कुल 6 लोगों के खिलाफ सुरक्षा प्रभारी ने कुजू ओपी में प्राथमिकी दर्ज कराई है।

अवैध खनन में लगे हुए थे कई महिला और पुरुष : करमा परियोजना के सुरक्षा प्रभारी यासर अराफात ने पुलिस को बताया कि 4 जुलाई की रात गश्ती दल महुआ टुंगरी में निरीक्षण करने गया हुआ था। इस दौरान उन्होंने देखा कि काफी संख्या में महिला और पुरुष अवैध खनन कार्य में लगे हुए हैं। जब गश्ती दल ने उन्हें हटाने का प्रयास किया तो उन पर अवैध खनन करने वाले लोगों ने पथराव भी किया। गश्ती दल के हटते ही वहां दोबारा अवैध खनन शुरू हुआ और चाल धंसने से चार मजदूरों की मौत हो गयी। सुरक्षा प्रभारी यासर अराफात ने बताया कि मलबे से एक मजदूर की लाश निकाली गयी। वहां पता चला कि ग्रामीणों के द्वारा पहले ही तीन लाशों को निकाल लिया गया था और उसे लेकर हुए फरार हो गये।

जेएलकेएम नेताओं ने मृतक के परिजनों को दिया प्रलोभन, किया आंदोलन : सुरक्षा प्रभारी यासर अराफात ने जेएलकेएम के दो नेता समेत कुल 6 लोगों पर गंभीर आरोप लगाये हैं। उन्होंने बताया कि वे लोग मृतकों के परिजनों को बहला फुसलाकर और तरह तरह के प्रलोभन दे कर आंदोलन किया। इनमें रवि महतो केदला, रूपा देवी करमा (अम्बा टांड़), बिहारी महतो केदला, पनेश्वर महतो रामगढ़, लीलावती देवी करमा (अम्बा टांड़), मो मुस्लिम और अन्य लोगो के द्वारा तीन शवों को करमा परियोजना के मुख्य द्वार के सामने रखकर गेट को जाम किया गया।

कार्यालय बंद होने से सीसीएल को हुआ एक करोड़ का नुकसान: सुरक्षा प्रभारी ने पुलिस को बताया कि सीसीएल कंपनी और झारखंड सरकार को भारी राजस्व की हानि हुई है। साथ ही कंपनी के सरकारी गार्ड और कर्मियों के साथ मारपीट किया गया और जान से मारने की धमकी दी गयी। अब तक करमा परियोजना का लगभग 2500 टन कोयला और 4000 क्यूबिक मीटर ओवर बर्डन का उत्पादन नहीं हो पाया। जिससे लगभग 1 करोड़ रुपये की क्षति कंपनी और झारखंड सरकार को हो चुकी है। इस समस्त भीड़ का नेतृत्व मुस्लिम अंसारी, पिता - लाल मोहम्मद अंसारी, ग्राम - महुवा टुंगरी द्वारा किया जा रहा था। पुलिस ने उन लोगों के विरुद्ध सरकारी कार्य में बाधा डालने, मारपीट करने, जान से मारने की धमकी देने और राजस्व को नुकसान पहुंचाने को लेकर कार्रवाई शुरू की है।

मृतक के परिवारों से मिले पूर्व विधायक

कुजू। मांडू के पूर्व विधायक जेपी पटेल सोमवार को करमा कोलियरी में हुई घटना के बाद महुआटुंगरी और सुगिया के पीड़ित परिवारों से मुलाकात की।
साथ ही, जानकारी लेते हुए घटना पर अफसोस जाहिर की। साथ ही, हर संभव सहयोग दिलाने का आश्वासन दिया। वहीं, बीडीओ और सीओ से दूरभाष पर बात कर आश्रित परिवार को पारिवारिक लाभ दिलानेकी मांग मांग की। मौके पर मोहरलाल महतो, राजनाथ महतो, सुरेश महतो, गुलजार अंसारी, देवचरण महतो, घनश्याम महतो, शिव कुमार टुडू, सुखदेव मांझी, अनिल टुडू, यूसुफ अंसारी शामिल रहे।

एफआइआर को लेकर सीसीएल अधिकारी संघ ने जताया विरोध

कुजू। सीसीएल अधिकारी संघ, कुजू क्षेत्र ने मांडू सीओ द्वारा करमा खदान में अवैध खनन के दौरान मजदूर के मौत मामले में सीसीएल कुजू जीएम समेत कई अधिकारियों के खिलाफ प्रशासन द्वारा प्राथमिकी दर्ज किए जाने को लेकर प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए कड़ा विरोध जताया है। कोल माइंस ऑफिसर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के सचिव अर्णव पाल ने कहा है कि करमा कोलियरी के महुआटुंगरी पैच में हुई दुर्घटना एक निष्क्रिय खनन क्षेत्र में हुई है। जो क्वारी फेंसिंग और चेतावनी संकेत के माध्यम से ही पहले से ही सुरक्षित किया गया था। इसके बावजूद भी असामाजिक तत्वों द्वारा सुरक्षा गार्ड के साथ मारपीट और धमकाकर बाउंड्री को तोड़कर अंदर प्रवेश कर अवैध कोयला निकासी की जा रही थी। इसी बीच चाल गिरने से चार लोगों की मौत हो गयी। घटना के तुरंत बाद प्रबंधन द्वारा राहत और बचाव कार्य प्रारंभ किया गया। इसके बावजूद भी प्रशासन द्वारा वास्तविकता को नजर अंदाज करते हुए अधिकारियों पर झूठे और मनगढ़ंत मामलों में फंसाया गया। जो अत्यंत निंदनीय है। सीसीएल अधिकारी संघ ने झूठी प्राथमिकी दर्ज पर गहरा नाराजगी व्यक्त करते हुए तत्काल इसे वापस लेने की मांग प्रशासन से किया है। संघ ने घटना की निष्पक्ष जांच करने, असामाजिक तत्वों द्वारा अवैध प्रवेश कर दुर्घटना को अंजाम देने वाले के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करने, अधिकारियों की गरिमा और कार्यस्थल की सुरक्षा सुनिश्चित की मांग प्रशासन से की है। सीएमओएआई ने झूठी कार्रवाई के खिलाफ लोकतांत्रिक और कानूनी उपायों को अपनाने की बात कही है।

हादसेवाली जगह की खुली खदानों के मुहानों को भरा गया

कुजू। सीसीएल करमा कोलियरी के खुली खदान में अवैध कोयला उत्खनन के दौरान हादसे वाले क्षेत्र को तीसरे दिन शॉवेल मशीन से मिट्टी पत्थर भरने का कार्य किया जा रहा है। इसके लिए सीसीएल प्रबंधन जोर शोर से लगा है। वहीं, सीसीएल अधिकारियों के निर्देश पर खदान में ग्रामीणों के प्रवेश पर रोक के लिए वैकल्पिक तौर पर मिट्टी पत्थर से घेराबंदी की जा रही है। साथ ही, खदान क्षेत्र में सुरक्षा कर्मियों की तैनाती बढ़ा दी गयी। इधर, करमा कोलियरी मैनेजर संजय सिंह ने बताया कि सीसीएल के वरीय पदाधिकारी के निर्देश पर फिलहाल वैकल्पिक तौर खदान क्षेत्रों में घेराबंदी की का जा रही है। वहीं, कंटीली तार की फेंसिंग के लिए जल्द ही टेंडर निकाले जाने के बाद खदान क्षेत्र में तार की फेंसिंग होगी। मालूम हो कि शनिवार की सुबह करमा कोलियरी के खुली खदान में अवैध कोयला उत्खनन के दौरान चाल धंसने से चार मजदूरों की दर्दनाक मौत हो गई थी। वहीं, आधे दर्जन से लोग गंभीर रूप से घायल है। जिनका इलाज स्थानीय अस्पताल में चल रहा है।

पुलिस ने अपहरणकर्ताओं से डेढ़ वर्षीय बच्चे को छुड़ाया

आरोपियों ने बच्चे का डेढ़ लाख में किया था सौदा

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। हजारीबाग पुलिस के तत्परता से 24 घंटे में ही अपहृत डेढ़ वर्ष के बच्चे को बरामद कर माता पिता को सौंप दिया। बताते चलें कि शिवपुरी निवासी मितु देवी, पति राजु कुमार ने गत 1 जुलाई को सदर थाना में आवेदन देकर मामले की जानकारी दी थी। आवेदन में बताया था कि सदर थाना अंतर्गत महावीर स्थान से इनकी डेढ़ वर्ष के पुत्र शंकर को बेचने के नियत से कुछ लोग ले गए है। इस संबंध में संजय कुमार, ग्रामदशघरवा, आर्यन कुमार, ग्राम रामनगर दोनो थाना सदर, जिला-हजारीबाग, सुदीप कुमार स्वर्णकार, पिता-स्व दिलीप स्वर्णकार बभन टोली, स्टेशन रोड, थाना-शहर, जिला-गिरीडीह, सीमा शर्मा, पति सुदीप कुमार स्वर्णकार, स्थायी पता बभन टोली, स्टेशन रोड गिरीडीह और अन्य के विरुद्ध सदर थाना कांड संख्या-सदर थाना कांड संख्या-197/25 दर्ज कर अनुसंधान प्रारंभ किया था। एसपी अंजनी अंजन ने सदर एसडीपीओ को मामले का पटाक्षेप की जिम्मेवारी सौंपी। सदर एसडीपीओ के नेतृत्व में सदर थाना के पुलिस टीम द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए अपहृत बच्चा को चलकुशा के रहने वाली चिंता देवी पति-सहदेव ठाकुर के पास से सकुशल बरामद किया गया। कांड में संलिप्त 5 अभियुक्तों को न्यायिक हिरासत में भेजा गया।

छापामारी दल में एसडीपीओ अमित आनंद, सदर थाना प्रभारी सुभाष सिंह, पुअनि राहुल कुमार, रमेश चंद्र हजाम, गौतम कुमार सिंह समेत सदर थाना के पुलिस बल शामिल थे।

गौरव खेमका ने सीए फाइनल परीक्षा में ऑल इंडिया रैंक 42 प्राप्त कर झारखंड में टॉप किया

रांची (आजाद सिपाही)। डीपीएस स्कूल, रांची के पूर्व छात्र, गौरव खेमका (बैच 2021) ने द इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित चार्टर्ड अकाउंटेंसी (सीए) फाइनल परीक्षा को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण किया है। गौरव ने ऑल इंडिया रैंक 42 प्राप्त कर झारखंड राज्य टॉपर बनकर विद्यालय का नाम रोशन किया है। उनकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि ने डीपीएस रांची परिवार अत्यधिक गर्वित है। इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में गौरव को विद्यालय की माननीय प्राचार्या, डॉ जया चौहान द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ जया चौहान, प्राचार्या, डीपीएस रांची ने गौरव एवं उनके परिवार को दिल से बधाई दी। उन्होंने गौरव की उत्कृष्टता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता की सराहना की और ऐसी सफलता तक पहुँचने में अनुशासन व आत्मविश्वास के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा, ₹गौरव खेमका की सफलता इस बात का प्रेरणादायक उदाहरण है कि दृढ़ संकल्प, कठिन परिश्रम और स्पष्ट लक्ष्य के साथ क्या कुछ हासिल किया जा सकता है। उन्होंने न केवल अपने विद्यालय का नाम रोशन किया है, बल्कि भविष्य के सभी छात्रों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत भी है। डीपीएस रांची को गर्व है कि उसने गौरव की सफलता की यात्रा में भूमिका निभाई है। हम उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देते हैं।

एनकेडी एंड कंपनी के सात आर्टिकल्स ने सीए बनने का गौरव हासिल किया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। एनकेडी एंड कंपनी के लिए यह एक गर्व का क्षण है, जब उनके फर्म के सात आर्टिकल्स ने देशव्यापी आइसीएआइ की परीक्षा पास कर सीए बनने का गौरव हासिल किया है। इसमें शालिनी प्रिया, अदिति परशुराम पूरिया, शैलेश माल, रिद्धिमा, पल्लवी प्रिया, नैंसी और अर्पित राज शामिल है। एनकेडी एंड कंपनी के दीपक बंका ने कहा कि इन सात आर्टिकल्स की कड़ी मेहनत, समर्पण और दृढ़ निश्चय ने उन्हें यह गौरव दिलाया है। उनकी कंपनी एनकेडी एंड कंपनी के लिए यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो उनके फर्म की प्रतिष्ठा और गुणवत्ता को दशार्ती है। उन्होंने कहा कि एनकेडी एंड कंपनी के इस उपलब्धि से पूरे रांची शहरवासियों को गर्व महसूस हो रहा है। यह उपलब्धि न केवल फर्म के लिए बल्कि पूरे शहर के लिए भी एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

पुलिस ने सांसद-विधायक को बेलतू जाने से रोका, पांच घंटे तक बिठाया

दिया गया 144 का हवाला कहा बेलतू नहीं जा सकते मामला झंडा विवाद का

आजाद सिपाही संवाददाता

बड़कागांव। हजारीबाग के सांसद मनीष जायसवाल और बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र के विधायक रोशन लाल चौधरी को केरेडारी के बेलतू जाने के क्रम में सीकरी थाना की पुलिस और स्थानीय प्रशासन ने रोक दिया। और उन्हें अपने थाने में नजर बंद कर दिया। सांसद और विधायक को सोमवार दोपहर लगभग 1:00 बजे डिटेन किया गया और सांसद विधायक को देर शाम लगभग 6 दोनों नेताओं को पुलिस के देखरेख में हजारीबाग ले जाया गया। इस प्रकार से विधायक और संसद को पुलिस ने पूरे 5 घंटे बैठ कर रखा।

पुलिस प्रशासन दोनों नेताओं को कह रही थी कि धारा 144 लागू है। इसलिए आप बेलतू नहीं जा सकते। यह मामला बेलतू में दो समुदाय के बीच झंडा विवाद का है। इसके निपटारे में प्रशासन लगातार जुटी हुई है। लेकिन अब तक सफल नहीं हुई है। आश्चर्य बात की है कि धारा 144 में जनप्रतिनिधि पर भी स्थल पर जाने में रोक लगा दिया गया है।

144 धारा के कारण डिटेन किया गया ओपी प्रभारी: सीकरी ओपी प्रभारी सुनील सिंह ने मोबाइल पर बताया कि बेलतू मामला को लेकर 144 धारा लागू है। इसीलिए सांसद व विधायक को रोक कर डिटेल किया गया है।

बेलतू मामला का निष्पादन जल्द हो : सांसद

सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि हम भी इस मामले का निष्पादन चाहते हैं। स्थल पर विवाद का निष्पादन हो, इसलिए मैं जा रहा था। पिछले दो दिनों से इस मामले को लेकर ग्रामीणों में तनाव का माहौल है।बेलतू गांव , केरेडारी थाना क्षेत्र में है और यह इलाका हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र और बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र में है। सांसद मनीष जायसवाल ने प्रशासन से अपील करते हुए आग्रह किया कि हजारीबाग जिला प्रशासन यार सुनिश्चित करें कि बदले की भावना से कोई भी कार्यवाही ना हो, किसी की दुकान और मकान को ना तोड़ा जाए, जो झंडा हाल में वहां लगाया गया है उसे तत्काल हटाया जाये।

दोनों पक्षों का समान रूप से व्यवहार हो : विधायक

विधायक रोशन लाल चौधरी ने कहा कि हम लोग बेलतू मामला को सुलझाने के लिए जा रहे थे ,लेकिन सीकरी पुलिस ने नजर बंद कर दिया।हम चाहते हैं कि दोनों पक्षों के समान रूप से व्यवहार किया जाए।ताकि किसी प्रकार के किन्हीं के साथ कोई समस्या ना हो। सांसद मनीष जायसवाल के साथ सांसद प्रतिनिधि सत्येंद्र नारायण सिंह, बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र की सांसद प्रतिनिधि पूनम साव, हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी, बड़कागांव विधायक के पीए अनूप सिंह भी साथ में थे।

मुहर्रम जुलूस के दौरान आग की चपेट में आने से 15 लोग झुलसे

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। मुहर्रम जुलूस के दौरान रविवार रात हजारीबाग में आग की चपेट में आने से 15 लोग झुलस गये। हजारीबाग जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र अंतर्गत तुरांव- पौता गांव की है। लोगों ने बताया कि मुहर्रम का जुलूस गांव के तरफ से गुजर रहा था। सैकड़ों की संख्या में लोग जुलूस में शामिल थे। परंपरा के अनुसार मुस्लिम समुदाय के लोग सड़कों पर अपने कला का प्रदर्शन कर रहे थे और करतब दिखला रहे थे। कला के प्रदर्शन में आग में डीजल डालने के दौरान आग ने विकराल रूप ले लिया और स्थिति अनियंत्रित हो गयी। इस बड़ी दुर्घटना में लगभग 15 लोग चपेट में आ गये और झुलस गये। जिसमें अधिकतर बच्चे और महिलाएं शामिल है। घटना के बाद क्षेत्र में अफरा- तफरी का माहौल देखने को मिला है।

लोगों ने तत्परता दिखाते हुए सभी को इलाज के लिए शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल हजारीबाग लाया। जहां चिकित्सकों के द्वारा इलाज करने के बाद गंभीर रूप से जख्मी हुए कुछ बच्चे और महिला को बेहतर इलाज के लिए रांची रिम्स रेफर कर दिया गया है। सूचना मिलते ही मुफस्सिल थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और मामले की जांच में जुट गयी है।

दीदी के 73वें जन्मदिवस अवतरण दिवस पर पौधरोपण सप्ताह 20 से

रांची (आजाद सिपाही)। शिव शिष्य हरींद्रानंद फाउंडेशन के अर्जित आनंद ने कहा कि पूर्व के वर्षों की तरह इस वर्ष भी 20 से 27 जुलाई तक पौधरोपण सप्ताह मनाया जायेगा। दीदी के 73वें जन्मदिवस अवतरण दिवस पर पौधारोपण कर हम उनके प्रयासों को आगे बढ़ाने का काम करेंगे। मुख्यालय के स्तर पर इसकी शुरुआत 20 जुलाई से की जायेगी। उन्होंने कहा कि प्रकृति के संतुलन को बनाए रखना,मानव के जीवन को सुखी,समृद्ध व संतुलित बनाए रखने के लिए पौधरोपण का अपना विशेष महत्व है। गुरुभाई/बहन प्रकृति के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं। उन्होंने सभी गुरु भाई-बहनों से अनुरोध किया कि पौधरोपण के साथ दीदी की स्मृति को अमर बनायें।

काशी नाथ मुखर्जी और किरण द्विवेदी की अग्रिम जमानत याचिका खारिज

रांची (आजाद सिपाही)। सिविल कोर्ट के अतिरिक्त न्यायिक आयुक्त-सप्तम (एजेसी-7) की अदालत द्वारा श्रीरामकृष्ण सेवा संघ के पूर्व अध्यक्ष काशीनाथ मुखर्जी और विवेकानंद विद्या मंदिर की पूर्व प्राचार्या किरण द्विवेदी की ओर से दायर अग्रिम जमानत याचिका सोमवार को खारिज कर दी गई। गौरतलब है कि श्री रामकृष्ण सेवा संघ के तत्कालीन कोषाध्यक्ष तन्मय मुखर्जी द्वारा पूर्व अध्यक्ष काशीनाथ मुखर्जी और पूर्व प्राचार्या किरण द्विवेदी के खिलाफ विद्यालय की करोड़ों रुपए के गबन का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी। चुटिया थाना में प्राथमिकी संख्या 130/2022 के तहत दो आरोपी मलय कुमार नंदी, पूर्व कोषाध्यक्ष और आदित्य बनर्जी (पूर्व उपाध्यक्ष) पहले से ही जेल में बंद हैं। वहीं, पूर्व अध्यक्ष काशीनाथ मुखर्जी और पूर्व प्राचार्या किरण द्विवेदी के साथ उक्त मामले में आरोपी चार्टर्ड एकाउंटेंट प्रवीण सिन्हा फरार चल रहे हैं।

श्रावणी मेला 2025 : पूर्व रेलवे चलायेगा विशेष ट्रेनें, यात्रियों को मिलेंगी 45,600 अतिरिक्त सीटें

देवघर (आजाद सिपाही)। श्रावणी मेला 2025 के दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए पूर्व रेलवे ने देवघर आने-जाने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए विशेष ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया है। इस पहल के तहत कुल 45,600 अतिरिक्त बर्थ की व्यवस्था की गई है, जिससे श्रद्धालुओं को यात्रा में किसी तरह की असुविधा न हो।

कटिहार-देवघर स्पेशल ट्रेनें : ट्रेन संख्या 05716 कटिहार-देवघर श्रावणी मेला स्पेशल प्रत्येक गुरुवार को 10 जुलाई से 7 अगस्त तक कुल पांच ट्रिप में कटिहार से दोपहर 2.20 बजे रवाना होगी और अगले दिन सुबह 4.15 बजे देवघर पहुंचेगी। जबकि वापसी ट्रेन 05715 देवघर-कटिहार स्पेशल प्रत्येक शुक्रवार को 11 जुलाई से 8 अगस्त तक सुबह 5.45 बजे देवघर से प्रस्थान कर उसी दिन रात 9.20 बजे कटिहार पहुंचेगी।

डिब्रूगढ़-देवघर स्पेशल ट्रेनें: ट्रेन संख्या 05926 डिब्रूगढ़-देवघर स्पेशल गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार, सोमवार और मंगलवार को 10 जुलाई से 9 अगस्त तक कुल 23 ट्रिप में डिब्रूगढ़ से सुबह 9.40 बजे रवाना होकर अगले दिन शाम 8.25 बजे देवघर पहुंचेगी। वहीं, वापसी ट्रेन 05925 देवघर-डिब्रूगढ़ स्पेशल शुक्रवार से बुधवार के बीच 11 जुलाई से 10 अगस्त तक कुल 23 ट्रिप में रात 9.55 बजे देवघर से प्रस्थान करेगी और अगले दिन सुबह 8.30 बजे डिब्रूगढ़ पहुंचेगी। इन ट्रेनों का प्रमुख स्टॉपेज बांका, बाराहाट, भागलपुर, सुल्तानगंज आदि में होगा। सभी स्पेशल ट्रेनों में सामान्य द्वितीय श्रेणी, स्लीपर क्लास और एसी कोच उपलब्ध रहेंगे। श्रद्धालु इन विशेष ट्रेनों की टिकट पीआरएस काउंटरों एवं ऑनलाइन माध्यम से बुक कर सकते हैं।

दक्षिण पूर्व रेलवे, निविदा

भारत के राष्ट्रपति की ओर से और उनकी तरफ से, मंडल रेल प्रबंधक/इंजीनियरिंग/ रांची 834003 **क्रमांकः** 1 के लिए ई-निविदाएं आमंत्रित करते हैं; **निविदा सूचना संख्याः डीआरएमईएनजीजीआरएनसी-74-2025; कार्य का नामः** सिल्ली स्टेशन, नामकोम स्टेशन और रामगढ़ कैंट स्टेशन पर डीईएन (इंस्ट)/ आरएनसीके क्षेत्राधिकार के अंतर्गत पुराने एफओबी को नए 6.10 मीटर चौड़े एफओबी से बदलना; **निविदा मूल्यः** ₹ 11,17,71,237.56; **बयाना राशिः** ₹ 7,08,900.00; **निविदा बंद होने की तिथिः** 25.07.2025। निविदा बंद होने की तिथि और समयः ऊपर उल्लिखित 15:00 बजे। निविदाकर्ता ऑनलाइन निविदा प्रक्रिया के लिए, वेबसाइट www.ireps.gov.in पर जा सकते हैं। (PR-362)

कोर्ट नोटीस

न्यायालय, श्री मनीष कुमार सिंह, सिविल जज, सिनियर डिविजन -IX,रांची।
मूल वाद संख्या 84/2022
यशोदा देवी ..... वादी
बनाम्
अंजन कुमार प्रधान व अन्य ... प्रतिवादीगण

नोटिस बनाम् :-
सुनील प्रधान, पिता स्व. राज रोशन प्रधान निवासी 122, ओल्ड ए.जी. कॉलोनी, कडरू, पोस्ट- कडरू, थाना- अरगोड़ा, जिला- रांची, झारखण्ड-834002

चूंकि बजरिये इस नोटिस के द्वारा आपको सूचित किया जाता है कि वादी के द्वारा आपलोगों के विरूद्ध उपरोक्त मुकदमा दाखिल किया गया है। इसके बाद आपको कोर्ट द्वारा सामान्य नोटिस एवं रजिस्टर्ड पोस्ट से नोटिस भेजा गया, लेकिन आप कोर्ट में उपस्थित नहीं हुए। तब आपको इस अखबार के द्वारा इस कोर्ट नोटिस प्रकाशन से सूचित किया जाता है कि दिनांक 14/07/2025. को 10.30 बजे आप स्वंय या अपने अधिवक्ता के माध्यम से कोर्ट में उपस्थित हो अन्यथा आपकी गैर-हाजरी में मुकदमा की सुनवाई एकपक्षीय कर दी जायेगी
इसे सख्त ताकिद जाने।
आज दिनांक 03.07.2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से जारी किया गया।
ह0/-
श्री मनीष कुमार सिंह
सिविल जज, सिनियर डिविजन - IX,
राँची।

गोपाल खेमका की हत्या : चुनावी मुद्दा

बिहार में बिजनेसमैन गोपाल खेमका की हत्या राज्य की कानून-व्यवस्था के लिए चुनौती है। जिस तरह से राजधानी पटना के एक पॉश इलाके में इस हत्याकांड को अंजाम दिया गया, उससे सरकार के क्राइम कंट्रोल के दावों पर सवाल खड़े होते हैं। फिलहाल यह मुद्दा राजनीतिक रूप ले चुका है और इसका चुनावी फायदा लेने की कोशिशें भी होंगी।

सरकारी दावे पर सवाल : बिहार में अपराध हमेशा से एक बड़ा मसला रहा है। करीब दो दशक की सत्ता में जदयू अपनी सबसे बड़ी उपलब्धियों में यही गिनाती है कि उसने राज्य को लालू के जंगल राज से बाहर निकाला। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और भाजपा के नेता किसी भी मौके पर लालू-राबड़ी के कार्यकाल में हुए अपराधों की याद दिलाने से नहीं चूकते। लेकिन, गोपाल खेमका हत्याकांड हर सरकारी दावे पर एक सवाल की तरह है। डीएम ऑफिस के पास वारदात बताती है कि अपराधियों में पुलिस-प्रशासन का डर नहीं है, और यह भी कि संगठित अपराध फिर से सिर उठा रहा है।

सरकार अपने समर्थन में नेशनल क्राइम रेकॉर्ड ब्यूरो का डेटा दिखाती है, जिसके हिसाब से अपराध के मामले में बिहार से भी ऊपर कई राज्य हैं। जदयू ने इस साल मई आखिर में एनसीआरबी के हवाले से बताया था कि देश मे अपराध की दर 422.2 प्रति लाख है, जबकि बिहार में 277.1 प्रति लाख।

बढ़ रहे अपराध : समस्या है कि बिहार से इस तरह की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं। तीन दिन पहले ही सीवान में तीन लोगों की सरेआम हत्या कर दी गयी। वहीं, पिछले महीने 10 साल की रेप विक्टिम की मौत ने सरकार को बैकफुट पर धकेल दिया था। आरोप है कि बच्ची को समय पर इलाज नहीं मिला। ऐसी हर वारदात नीतीश सरकार के लिए मुश्किलें बढ़ा रही है।

आंकड़ों का सहारा : 2005 से अभी तक, राजद के बिना या उसके साथ, नीतीश जब भी सत्ता तक पहुंचे, तो क्राइम कंट्रोल के वादे के साथ। बिहार के लोगों को हमेशा यह अहसास कराया गया कि नीतीश ही अपराध पर लगाम लगा सकते हैं। सरकार अपने समर्थन में नेशनल क्राइम रेकॉर्ड ब्यूरो का डेटा दिखाती है, जिसके हिसाब से अपराध के मामले में बिहार से भी ऊपर कई राज्य हैं। जदयू ने इस साल मई आखिर में एनसीआरबी के हवाले से बताया था कि देश मे अपराध की दर 422.2 प्रति लाख है, जबकि बिहार में 277.1 प्रति लाख।

विपक्ष के लिए मौका : हालांकि आंकड़े पूरी सच्चाई नहीं बताते। हर अपराध जनता का भरोसा तोड़ता है। आज के समय की तस्वीर ऐसी बन रही है, जहां बिहार में अपराधी फिर से बेखौफ हो रहे हैं। इससे विपक्ष को भी पलटवार का मौका मिला है। राजद और कांग्रेस नेता 'जंगलराज के आरोपों' को उठाकर अभी के हालात पर सरकार को घेर रहे हैं। यह मुद्दा आगामी चुनाव तक नीतीश कुमार का पीछा नहीं छोड़ने वाला। आंकड़ों से अलग, उनकी सरकार को जमीन पर यह साबित करना होगा कि उनके शासन में बिहार ज्यादा सुरक्षित है।

अभिमत
आजाद सिपाही

जब 2014 में एनडीए सत्ता में आयी, तो चुनौती हमारे दूरदर्शी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मूल सिद्धांतों -सुधार, प्रदर्शन और बदलाव - पर आधारित विकास एवं प्रगति को गति देने की थी। इन सिद्धांतों में जरूरत के हिसाब से पर्यावरण की सुरक्षा के सख्त उपायों से समझौता किए बिना व्यवसाय करने में आसानी की सुविधा प्रदान करते हुए तेजी गति से विकास करना शामिल था। आज 2025 में, हम न सिर्फ इस चुनौती से निपट पाने में सफल रहे हैं, बल्कि हमने शासन का एक ऐसा मॉडल तैयार किया है जिसे सारी दुनिया ने माना है।

पर्यावरण के रचनात्मक प्रशासन के जरिए सतत हरित बदलाव

भूपेंद्र यादव

पर्यावरण कुजनेट्स वक्र (एनवायरनमेंट कुजनेट्स कर्व) से हासिल पर्यावरण के प्रशासन से जुड़ा पारंपरिक ज्ञान यह मानता है कि देश पहले विकास करते हैं और बाद में सफाई में जुटते हैं। यह अनुभवजन्य अंतर्दृष्टि अब विकसित हो चुके उन देशों के अनुभवों से प्रेरित है, जिन्होंने विकास की प्रक्रिया में संसाधन संबंधी जरूरतों को पूरा करने हेतु देश और विदेश में प्राकृतिक पर्यावरण का दोहन किया। लेकिन ऐसी सुविधा भारत जैसे देशों को नसीब नहीं है, जिन्हें अपनी विशाल आबादी की विकास संबंधी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए अभी भी तेज गति से विकास करने की जरूरत है। जब 2014 में एनडीए सत्ता में आयी, तो चुनौती हमारे दूरदर्शी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मूल सिद्धांतों -सुधार, प्रदर्शन और बदलाव - पर आधारित विकास एवं प्रगति को गति देने की थी। इन सिद्धांतों में जरूरत के हिसाब से पर्यावरण की सुरक्षा के सख्त उपायों से समझौता किये बिना व्यवसाय करने में आसानी की सुविधा प्रदान करते हुए तेजी गति से विकास करना शामिल था। आज 2025 में, हम न सिर्फ इस चुनौती से निपट पाने में सफल रहे हैं, बल्कि हमने शासन का एक ऐसा मॉडल तैयार किया है जिसे सारी दुनिया ने माना है। प्रधानमंत्री मोदी का दृष्टिकोण बिल्कुल साफ थाः इस प्रणाली को एक ऐसी प्रणाली में बदला जाये, जो इकोलॉजी और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए फायदेमंद हो।

उन्नत डिजिटल निगरानी प्रणाली और ईएसजी रिपोर्टिंग की ठोस व्यवस्थाओं समेत 2025 में हुए विकास, अत्याधुनिक बने रहने के प्रति हमारे समर्पण को दर्शाते हैं।

वर्ष 2014 में स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत हमारी पहली बड़ी पहल थी। यह पहल स्वच्छता से आगे बढ़ कर कचरे के प्रबंधन व पर्यावरण के संरक्षण के लिए एक व्यापक ढांचा स्थापित करने तक जा पहुंची। इस मिशन ने पर्यावरण से जुड़ी चिंताओं को सामाजिक विकास के साथ जोड़ने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाया। इस मिशन को सभी नागरिकों को शामिल करते हुए एक जन आंदोलन के रूप में शुरू किया गया था और एक स्वच्छ एवं संसाधन के मामले में अपेक्षाकृत अधिक कुशल भारत की चाहत को आगे बढ़ाया गया था। विभिन्न शहरों में नागरिकों को पारदर्शी तरीके से वास्तविक समय में वायु की गुणवत्ता की निगरानी से जुड़ी सुविधा प्रदान करने के तुरंत बाद राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता सूचकांक का शुभारंभ किया गया। वर्ष 2014 में शुरू की गयी मेक इन इंडिया पहल में भी कड़े पर्यावरण अनुपालन मानकों को शामिल किया गया। इससे यह साबित हुआ कि हम इकोलॉजी की स्थिरता को बनाए रखते हुए मैन्यूफैक्चरिंग को अपेक्षाकृत बड़े पैमाने पर और तेज गति से बढ़ावा दे सकते हैं। ऊर्जा संबंधी दक्षता को बढ़ावा देने और ऊर्जा पर आधारित अधिक संख्या में उद्योगों को शामिल करने के उद्देश्य से 2015 में प्रदर्शन, उपलब्धि और व्यापार (पीएटी) योजना का विस्तार किया गया। इससे ऊर्जा संबंधी दक्षता के लिए एक बाजार-आधारित तंत्र का निर्माण हुआ। कचरे के कारगर प्रबंधन, संसाधन संबंधी दक्षता में बढ़ोतरी और चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 2016 से कचरे के प्रबंधन के सभी प्रमुख नियमों को नियमित रूप से अद्यतन किया जा रहा है। इस दृष्टिकोण का बुनियादी सिद्धांत बाजार आधारित तंत्र और प्रदूषक द्वारा भुगतान के सिद्धांत पर आधारित विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व से जुड़े ढांचे पर निर्भरता में निहित है।

प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियम, ई-कचरा प्रबंधन नियम तथा टायर, बैटरी एवं प्रयुक्त तेल अपशिष्ट प्रबंधन नियम आदि इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर तैयार किये गये थे। इससे एक ऐसे इकोसिस्टम का निर्माण हुआ, जिसके तहत विभिन्न सामग्री के लगभग 4,000 पुनर्चक्रणकर्ताओं को पंजीकृत पुनर्चक्रणकर्ताओं के रूप में अनौपचारिक क्षेत्र से हटाकर औपचारिक क्षेत्र में लाया गया है। इस कदम से वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान 1600 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व प्राप्त हुआ है। वर्ष 2022 में शुरू किये गये विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (इपीआर) पोर्टल चक्रीय अर्थव्यवस्था की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान, कुल 61,055 उत्पादकों ने प्लास्टिक पैकेजिंग, ई-कचरा, बेकार टायर, बैटरी के कचरे और प्रयुक्त तेल के क्षेत्र में काम करने हेतु ईपीआर पोर्टल पर पंजीकरण कराया है। अपशिष्ट नियम, 2022 के प्रकाशन और इपीआर पोर्टल की शुरुआत के बाद, शोधित अपशिष्ट की मात्रा वित्तीय वर्ष 2024-25 में इन नियमों के प्रकाशन से पहले 3.6 एमएमटी प्रति वर्ष की तुलना में बढ़ कर 127.48 एमएमटी प्रति वर्ष हो गयी है। यह सभी हितधारकों के सहयोग एवं समर्थन से संभव हुआ है। प्रक्रियागत देरी में कमी लाने और एक व्यापक पर्यावरणीय मूल्यांकन करने के उद्देश्य से 2018 में परिवेश (प्रो-एक्टिव एंड रिस्पॉन्सिव फैसिलिटेशन बाई इंटरएक्टिव, वर्चुअस एंड एनवायरनमेंटल सिंगल-विंडो हब) नाम के एक ऑनलाइन आइटी टूल का शुभारंभ किया गया। प्रधानमंत्री मोदी के डिजिटल इंडिया के विजन को साकार करते हुए, इस डिजिटल प्लेटफॉर्म ने व्यवसाय जगत और पर्यावरण नियामकों के बीच के संवाद में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया है।

परिवेश ने पर्यावरण संबंधी मंजूरी की बोझिल एवं कागज-आधारित प्रक्रिया को एक सुव्यवस्थित एवं मजबूत डिजिटल अनुभव में बदल दिया है। इस दृष्टिकोण ने जहां पर्यावरण से जुड़े सख्त मूल्यांकन को बनाये रखा है, वहीं इस प्रक्रिया में लगने वाले समय में काफी कमी ला दी है और पारदर्शिता को बढ़ाया है।

वर्ष 2019 में शहरों पर केन्द्रित कार्य योजनाओं से लैस राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) के आधिकारिक शुभारंभ ने हमें नीति निर्माता एवं नियामक से बदलकर अमल करने वाला बना दिया है। एनसीएपी का लक्ष्य 2025-26 तक पीएम10 सांद्रता में 40 प्रतिशत की कमी लाना या आधार वर्ष 2017-18 की तुलना में 60 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर के राष्ट्रीय मानक को हासिल करना है। एनसीएपी के साथ-साथ सीपीसीबी ने एनसीएपी के तहत आने वाले 131 शहरों में वायु की गुणवत्ता के रुझान की बारीकी से निगरानी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे वायु की गुणवत्ता निरंतर बेहतर हुई है। वर्ष 2021 में, गैर-प्राप्ति वाले शहरों में वायु गुणवत्ता के नियमन हेतु पोर्टल (पीआरएएनए) को कागज रहित परियोजना प्रबंधन के एकल बिंदु वाले वेब-आधारित उपकरण के रूप में शुरू किया गया। इससे स्वच्छ वायु से जुड़े उपायों के कार्यान्वयन की भौतिक एवं वित्तीय प्रगति पर नजर रखना संभव हो सकेगा।

1 जुलाई, 2022 से एकल उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध और 31 दिसंबर 2022 से 120 माइक्रोन से अधिक मोटाई वाली प्लास्टिक शीट पर प्रतिबंध ने जहां पर्यावरण के क्षेत्र में साहसिक नेतृत्व का परिचय दिया, वहीं उसी वर्ष शुरू किये गये जल जीवन मिशन ने पानी की सुलभता को पर्यावरणीय स्थिरता के साथ जोड़ा।

एक व्यापक भारत शीतलन कार्य योजन विकसित करके भारत दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल हो गया है। इस कार्य योजना में विभिन्न क्षेत्रों की शीतलन संबंधी जरूरतों को पूरा करने वाले एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण समावेश है तथा इसमें ऐसे कार्यों की सूची दी गई है, जो शीतलन से जुड़ी मांग को कम करने में सहायक हो सकते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में शीतलन की जरूरत होती है तथा यह आर्थिक विकास का एक अनिवार्य हिस्सा है।

आवासीय एवं वाणिज्यिक भवन, कोल्ड-चेन, प्रशीतन, परिवहन और उद्योग जैसे अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में इसकी जरूरत पड़ती है। भारत ने हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (एचएफसी) के उत्सर्जन में चरणबद्ध तरीके से कमी लाने हेतु 27 सितंबर 2021 को मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल में किगाली संशोधन का अनुमोदन किया। इसके तहत 2032 से आगे चार चरणों में चरणबद्ध तरीके से इस कार्य को पूरा करने की प्रतिबद्धता जताई गयी है और 2032, 2037, 2042 एवं 2047 में उत्सर्जन में क्रमशः 10 प्रतिशत, 20 प्रतिशत, 30 प्रतिशत और 85 प्रतिशत की कटौती की जाएगी। वर्ष 2022 में पारित ऊर्जा संरक्षण (संशोधन) अधिनियम ने भारत की कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना की स्थापना की। इससे उत्सर्जन में कमी से संबंधित बाजार आधारित तंत्र का निर्माण हुआ।

ऊर्जा दक्षता ब्यूरो के तहत 2023 में हमारी कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना का संचालन देश के पहले व्यापक कार्बन बाजार के निर्माण की राह में एक अहम पड़ाव है। 1 नवंबर 2021 को ग्लासगो में सीओपी26 के दौरान प्रधानमंत्री मोदी द्वारा घोषित मिशन लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवनशैली) मानव व्यवहार को प्रेरित करके टिकाऊ उपभोग पैटर्न को बढ़ावा देने वाला एक और अनुकरणीय कदम है। कार्बन क्रेडिट के अलावा ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम के रूप में एक सकारात्मक उपाय की शुरुआत 2023 में संयुक्त अरब अमीरात में सीओपी28 के दौरान की गयी, ताकि पर्यावरण से संबंधित सकारात्मक कार्यों को पुरस्कृत किया जा सके और स्वैच्छिक पर्यावरणीय प्रबंधन को प्रेरित करने वाले प्रोत्साहनों का सृजन किया जा सके। वर्ष 2024 में देश भर में भारत स्टेज श्क (बीएस-VI) उत्सर्जन मानदंडों का पूर्ण कार्यान्वयन और टिकाऊ वित्त हेतु हमारे हरित कर प्रणाली (ग्रीन टैक्सोनॉमी) के ढांचे का विकास ऐसे कदम हैं जो स्वच्छ एवं हरित पर्यावरण के प्रति भारत की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। ये कदम इस बात को भी दर्शाते हैं कि पर्यावरण से जुड़ा प्रशासन कैसे तकनीकी उन्नति और वित्तीय नवाचार को बढ़ावा दे सकता है।

पर्यावरण के अनुकूल और गुणवत्ता वाले टिकाऊ उत्पादों के उत्पादन व उपयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, मंत्रालय ने ई(पी) अधिनियम, 1986 के तहत इकोमार्क नियम, 2024 को अधिसूचित किया है। इसमें उत्पादन और उपभोग की टिकाऊ पद्धतियों को प्रोत्साहित करने हेतु उत्पादों की 80 उप-श्रेणियों के साथ 17 व्यापक श्रेणियां शामिल की गई हैं और सीपीसीबी को प्रमुख प्रशासनिक एजेंसी के रूप में नामित किया गया है। वर्ष 2018 मेंपरिवेश के शुभारंभ से लेकर 2024 में परिवेश 2.0 तक का विकास, पर्यावरण संबंधी प्रबंधन एवं निगरानी की प्रक्रिया में निरंतर तकनीकी व गुणात्मक सुधार के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दशार्ता है। परिवेश 2.0 में जीआइएस से लैस एक आधुनिक निर्णय समर्थन प्रणाली और एक बेहतर पर्यावरणीय मूल्यांकन सुविधाओं का समावेश है। राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली में पर्यावरण संबंधी मंजूरी को समन्वित करने से व्यवसाय संबंधी अनुमोदन का एक वन-स्टॉप डिजिटल प्लेटफॉर्म तैयार हुआ। इससे व्यवसाय करने में आसानी से जुड़ी विश्व बैंक की रैंकिंग में भारत का स्थान की नाटकीय रूप से बेहतर हुआ।

भारत इस रैंकिंग में 2014 में 142वें स्थान से उछलकर 2020 में 63वें स्थान पर पहुंच गया। वर्ष 2014-2020 के बीच, हमने 2,115 आवेदनों में से लगभग 2,053 परियोजनाओं को पर्यावरण संबंधी मंजूरी प्रदान की जिससे आवेदनों को निपटाने की दक्षता में उल्लेखनीय सुधार हुआ। कचरे के उत्सर्जन में कमी लाने के लिए उत्कृष्ट पद्धतियों को अपनाने हेतु उद्योगों को प्रोत्साहित करने तथा अनुपालन संबंधी बोझ को कम करने के उद्देश्य से, उद्योगों को वर्गीकृत करने की एक नयी पद्धति शुरू की गयी है। इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण के तहत विभिन्न गतिविधियों को लाल, नारंगी, हरे, सफेद और नीले रंग की श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। नीले रंग की नयी श्रेणी वाले उद्योग सीवेज शोधन संयंत्र, खाद बनाने वाली इकाई, बायोगैस संयंत्र और सामग्रियों की पुनर्प्राप्ति से जुड़ी सुविधा जैसे पर्यावरण के अनुकूल सकारात्मक उपायों से लैस होते हैं। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जा रहे हैं, पर्यावरण से जुड़ा हमारा प्रशासकीय ढांचा उन्नत एआई क्षमताओं, उन्नत सार्वजनिक भागीदारी तंत्र और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप पर्यावरण प्रबंधन प्रणालियों से लैस होकर विकसित होता जा रहा है।

उन्नत डिजिटल निगरानी प्रणाली और ईएसजी रिपोर्टिंग की ठोस व्यवस्थाओं समेत 2025 में हुए हालिया विकास, अत्याधुनिक बने रहने के प्रति हमारे समर्पण को दर्शाते हैं। लालफीताशाही से लेकर हरित रचनात्मकता तक की दशक भर की यह यात्रा इस तथ्य को रेखांकित करती है कि एक दूरदर्शी नेतृत्व बहुत कुछ हासिल कर सकता है। पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाने के प्रधानमंत्री मोदी के दृष्टिकोण ने शासन का एक ऐसा मॉडल तैयार किया है, जो एक साथ कई उद्देश्यों को पूरा करता है।

अब जबकि हम विकसित भारत@2047 के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में अग्रसर हैं, एक दशक से अधिक समय में लागू किया गया पर्यावरण से जुड़ा प्रशासकीय ढांचा टिकाऊ विकास के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है।

(लेखक : केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री हैं।)

कोल्हान की खबरें

डिजिटल कलाकृति से सौरभ ने जर्जर सड़कों की समस्या को उजागर किया

चांडिल (आजाद सिपाही)। चांडिल प्रखंड की जर्जर सड़कों ने खासकर बरसात में कीचड़ में तब्दील होने से लोगों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। चैनपुर गांव के युवा कलाकार सौरभ प्रामाणिक ने अपनी डिजिटल कलाकृति के माध्यम से स्कूल जाते बच्चों को कीचड़ भरी सड़क पार करते दिखाकर समस्या को उजागर किया। सौरभ की यह कला प्रशासन की ध्यान आकृष्ट कराते हुए सड़क मरम्मत की दिशा में कदम उठाने की अपील है। डिजिटल कलाकृति में साफ दिख रही है खराब सड़कों के कारण बच्चों, मजदूरों और ग्रामीणों को इस तरह दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

अजय तिवारी बने पुलिस उपाधीक्षक पिपिंग सेरेमनी में हुए सम्मानित

सरायकेला (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार के गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा जारी अधिसूचना के तहत पुलिस निरीक्षक सह यातायात थाना प्रभारी अजय तिवारी को पुलिस उपाधीक्षक पद पर प्रोन्नत किया गया। सोमवार को सरायकेला अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, पुलिस उपाधीक्षक एवं पुलिस अधीक्षक की उपस्थिति में पिपिंग सेरेमनी का आयोजन कर अजय तिवारी को नयी रैंक प्रदान कर सम्मानित किया गया। समारोह के दौरान अधिकारियों ने उन्हें नयी जिम्मेदारियों के लिए शुभकामनाएं दीं।

सड़क पर पति और महिला की पिटाई, दहेज प्रताड़ना और दूसरी शादी का लगाया आरोप

आजाद सिपाही संवाददाता

निमडीह। सरायकेला-खरसावां जिले के निमडीह थाना क्षेत्र स्थित रघुनाथपुर में पति-पत्नी के विवाद ने तूल पकड़ लिया। बुरुडीह पंचायत की कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर संचिता दास ने अपने पति जितेंद्र नाथ दास और उसके साथ बाइक पर सवार महिला की बीच सड़क पर ही पिटाई कर दी। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। महिला ने पति पर मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना, दहेज की मांग और दूसरी शादी रचाने का आरोप लगाया। उन्होंने बताया पति ने दहेज में मोटरसाइकिल के लिए 2 लाख रुपए मांगे थे न मिलने पर मारपीट करता था। संचिता का आरोप है जितेंद्र ने 6 जुलाई को दूसरी महिला से शादी कर उसे घर ले आया और विरोध करने पर ससुराल वालों ने मारपीट कर घर से निकाल दिया। वहीं जितेंद्र नाथ दास ने आरोपों से इनकार करते हुए कहा 6 जुलाई को वह सविता नामक महिला को बलरामपुर बाजार लेकर गया था। लौटते वक्त पत्नी ने रास्ते में भाई और साथियों के साथ मारपीट की। स्थिति बिगड़ने पर उसने सविता के माथे पर सिंदूर लगा दिया। फिलहाल संचिता दास ने पति के खिलाफ नीमडीह थाना में शिकायत दर्ज कर न्याय के लिए मांग की।

भारत बंद के लिए राजद का समर्थन 8 को मशाल जुलूस

आदित्यपुर (आजाद सिपाही)। कोल्हान के राष्ट्रीय जनता दल ने श्रमिक संगठनों के 17 सूत्री मांगपत्र के समर्थन में 9 जुलाई को होने वाले भारत बंद को समर्थन देने की घोषणा की। सोमवार को प्रदेश अध्यक्ष संजय कुमार सिंह यादव के निर्देश पर आदित्यपुर स्थित प्रमंडल कार्यालय में बैठक के दौरान ऐलान किया गया। बैठक की अध्यक्षता प्रदेश बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ अध्यक्ष जनार्दन कुमार ने की। उन्होंने कहा पार्टी मजदूर, किसान और गरीब वर्ग की हक के लिए पूरी मजबूती से खड़ी है। बंद के पूर्व संध्या पर 8 जुलाई को आदित्यपुर, साकची और चाईबासा में मशाल जुलूस निकाले जायेंगे।

आरवीएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में भारतीय डाक संपर्क जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। आरवीएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के सभागार में भारतीय डाक सम्पर्क विषय पर एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सोमवार को कॉलेज के एनडीएलआइ क्लब और आईक्यूएसी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि हेड पोस्ट ऑफिस जमशेदपुर के सीनियर पोस्ट मास्टर शंकर कुजूर, पोस्टल असिस्टेंट निशांत कुमार, मिस ज्योति कुमारी और उमा शंकर शामिल हुए। कॉलेज के प्राचार्य डॉ विक्रम शर्मा और डॉ शरत चंद्र महतो ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। अतिथियों के द्वारा कार्यक्रम की शुरूआत की गयी। कार्यक्रम में छात्रों एवं शिक्षकों को भारतीय डाक विभाग की पारंपरिक सेवाओं से लेकर डिजिटल युग की आधुनिक सेवाओं की विस्तृत जानकारी दी गयी। निशांत कुमार ने अपनी प्रस्तुति में डाकघर की विकास यात्रा में डाकघर बचत खाता, आवर्ती जमा, पीपीएफ, जीवन बीमा, सुकन्या समृद्धि योजना जैसे प्रमुख उत्पादों के लाभों को रेखांकित किया। उन्होंने बताया भारतीय डाक विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में सरल एवं सुलभ बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करा रहा है। इस अवसर पर छात्रों द्वारा डाक विभाग की योजनाओं को लेकर पूछे गये सवालो का अतिथियों ने विस्तार से जानकारी दी।

एनआइटी जमशेदपुर में बिजली वायरिंग पर कौशल कार्यशाला शुरू

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) जमशेदपुर के विद्युत अभियांत्रिकी विभाग द्वारा विद्युत वायरिंग घरेलू और औद्योगिक अनुप्रयोग विषय पर 5 दिवसीय कौशल विकास कार्यशाला की शुरूआत किया गया। सोमवार को कार्यशाला का उद्घाटन निदेशक प्रो डॉ गौतम सूत्रधार ने की।कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों को घरेलू और औद्योगिक वायरिंग की तकनीकी जानकारी और व्यावहारिक अनुभव देना है। मौके पर डीन आरएंडसी प्रो डॉ सतीश कुमार, मार्गदर्शक डॉ सुप्रियो दास, संयोजक डॉ आलोक प्रियदर्शी, डॉ अन्नयो भट्टाचार्य, डॉ कुंदन कुमार, समन्वयक डॉ रवि भूषण और डॉ शुभांशु कुमार तिवारी समेत कई शिक्षक और शोधार्थी सक्रिय रहे। इस अवसर पर इंडो डैनिश टूल रूम और पॉलीटेक्निक के छात्र भी बड़ी संख्या में शामिल हुए। कार्यशाला में करीब 58 छात्र प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। कार्यक्रम की सफलता के लिए पीएचडी शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

मारपीट और चोरी के मामले में दो गिरफ्तार

आदित्यपुर (आजाद सिपाही)। इंडो डेनिस टूल्स के पास बीते 27 जून को हुए मारपीट और चोरी के मामले का पुलिस ने खुलासा कर दिया। जिले के एसपी मुकेश कुमार लुनायत के निर्देश पर पुलिस ने टीम का गठन कर छापेमारी करते हुए विद्युत नगर निवासी मुकेश पात्रो और शर्मा बस्ती निवासी दीपक मिश्रा को गिरफ्तार कर सोमवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया। छापेमारी टीम में एसआइ राहुल कुमार सिंह और पुलिस बल शामिल रहे।

बीडीएस द्वितीय वर्ष की पूरक परीक्षा का परिणाम घोषित

गढ़वा (आजाद सिपाही)। बाबू दिनेश सिंह विश्वविद्यालय ने बीडीएस के पूरक परीक्षा का परिणाम घोषित किया। 07 जुलाई 2025 (सोमवार) को बाबू दिनेश सिंह विश्वविद्यालय ने बीडीएस (2 वर्ष) के पूरक परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया। यह परीक्षा 1 से 3 जुलाई 2025 को आयोजित की गयी थी। इस परीक्षा मे शत प्रतिशत परीक्षार्थी पास हो गये है। इस परीक्षा फल के जल्द प्रकाशित होने के कारण ही ये सभी आगामी 17 जुलाई से होने वाले विश्विद्यालय में भाग ले पायेंगे, और उन सभी का एक वर्ष का बहुमूल्य समय बच जायेगा। परीक्षा फल प्रकाशित होने के बाद बाबू दिनेश सिंह विश्वविद्यालय के कुलाधिपति दिनेश प्रसाद सिंह ने संकायाध्यक्ष एवं उस विभाग के सभी शिक्षक एवं गैर-शिक्षक को अच्छे परीक्षाफल के लिए बधाई दिया है। इस मौके पर इस विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो (डॉ) एमके सिंह ने भी सभी परीक्षार्थियों को बधाई और उनके सुनहरे भविष्य के लिए कामना की है।

डीएवी मॉडल स्कूल के प्रांगण में पौधरोपण

गढ़वा (आजाद सिपाही)। डीएवी मॉडल स्कूल के प्रांगण में वृक्षारोपण का कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर शिक्षक वीरेंद्र कुमार एवं निदेशक सुशील केसरी के निर्देशन में कनक कुमारी, ग्रेसी केसरी, रिया कुमारी, पीहू कुमारी, वैष्णवी कुमारी, विष्णु कुमार, अर्जुन कुमार प्रजापति, मयंक कुमार आदि ने आम, नींबू, आमला और फूलों के पौधे लगाएं। इस अवसर पर निदेशक सुशील केसरी ने बताया कि अभी वृक्षारोपण का सही समय है। आकाश में बादल और रिमझिम फुहार के बीच पौधों को लगाने से उनके लगने की संभावना अधिक रहती है। आज पर्यावरण के लिए वृक्ष अति आवश्यक है।

सांप के डंसने से महिला गंभीर, सीएचसी में भर्ती

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के बनसानी पंचायत अंतर्गत कछरवा गांव में बीती रात करैत सांप के डंसने से महिला गंभीर रूप से घायल हो गयी। घायल महिला की पहचान दिनेश पासवान की पत्नी सब्या देवी के रूप में हुई है। परिजनों के अनुसार, सब्या देवी रात में खाना बना रही थी, तभी अचानक एक करैत सांप ने उसे डंस लिया। घटना के तुरंत बाद परिजनों ने निजी वाहन से महिला को भवनाथपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) लाकर भर्ती कराया। सीएचसी में तैनात चिकित्सक डॉ शैलेंद्र कुमार और शुभक कुमार द्वारा प्राथमिक उपचार किया गया। घटना की जानकारी मिलते ही जिला परिषद सदस्य रजनी शर्मा अस्पताल पहुंचीं और पीड़ित परिवार से मिलकर स्थिति की जानकारी ली।

रंकाकला पंचायत में पेंशन सत्यापन का कार्य शुरू

रंका (आजाद सिपाही)। रंका प्रखंड के रंकाकला पंचायत सचिवालय भवन में सभी वार्डों से जुड़े पेंशन लाभुकों का पेंशन सत्यापन का कार्य शीघ्रता पूर्वक किया जा रहा है। इसमें पूर्व मुखिया प्रतिनिधि राजेश कुमार मद्धेशिया एवं वर्तमान प्रभारी मुखिया रंजीत सोनी के साथ साथ सभी वार्ड सदस्य अपने अपने क्षेत्र से जुड़े समस्त पेंशन लाभुकों का सत्यापन कराने का कार्य में योगदान कर रहे हैं। वहीं पंचायत सहायक सह पीएलवी अमरेंद्र कुमार, पंचायत सहायक अरविंद साव, संदेश कुमार चौबे के द्वारा भी क्षेत्र भ्रमण कर पेंशन लाभुकों को अपना आधार नंबर एवं मोबाइल नंबर के माध्यम से पेंशन सत्यापन कराने के लिए लाभुकों को प्रेरित किया जा रहा है।

गैरमजरुआ नाला को अतिक्रमण मुक्त करने को लेकर ग्रामीणों ने अंचलाधिकारी को दिया आवेदन

कब्जा किया गया नाला।

विशुनपुरा (आजाद सिपाही)। विशुनपुरा प्रखंड छेत्र अंतर्गत पिपरीकला के ग्रामीण रामजीत यादव, सुकन यादव, राजु चंद्रवंशी, सुरेंद्र चंद्रवंशी,नंदू यादव, ठाकुर, यादव, अवधेश यादव, शिवनाथ यादव सहित कई ग्रामीणों ने नया खाता 308 पुराना खाता 104 नया पलॉट 19 पुराना पलॉट 803 आम गैरमजरुवा नाला को अतिक्रमण मुक्त करने को लेकर विशुनपुरा अंचलाअधिकारी को आवेदन दिया है। आवेदन में पिपरीकला के अशर्फी साव, पृथ्वी साव, शिव कुमार साव, जितेंद्र साव, चारो पिता रतन साव, उमेश साव, सुरेश साव, दोनों पिता जगरनाथ साव, अशोक कुमार, राजेश कुमार, राकेश कुमार, तीनो पिता रामचंद्र चंद्रवंशी, राजेंद्र बैठा, पिता छठु बैठा इन सभी ने सरकारी नाला एवं गैरमजरूआ भूमि पर अवैध दखल कब्जा कर नाला को भर दिए हैं। जिससे आम लोगों का खोटीलवा आहर से निकले वाले जन उपयोगी पानी से खेती किया जाता है। इस पानी से लगभग सैकड़ो एकड़ भूमि पर खेती होता है।उक्त लोगों के द्वारा नाला को भर देने से बरसाती नाला का पानी आस पास के करीब दर्जनों घर मे पानी घुसने की संभावना है। पिपरीकला के ग्रामीणों ने आवेदन देकर उक्त भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराने की मांग किया हैं। वही इस संबंध में पूछे जाने पर अंचलाअधिकारी राजेश कुमार ने बताया कि जांचोंप्रांत सरकारी नाला पर अवैध दखल किये गये उक्त लोगों पर कार्रवाई करते हुये अतिक्रमण मुक्त किया जायेगा।

आजाद सिपाही अखबार में प्रकाशित खबर होने के बाद हरकत में आया प्रशासन

तीन महीने बाद राशन का वितरण शुरू

बीडीओ ने पीडीएस दुकान पर पहुंचकर खुद जांच की, 20 जुलाई तक तीनों महीने का पूर्ण राशन वितरण करने का कहा

आजाद सिपाही संवाददाता

तीन महीने से राशन वितरण नहीं, ग्रामीणों में आक्रोश

जविप्र दुकान का निरीक्षण करते बीडीओ राकेश सहाय, अखबार में प्रकाशित खबर की कटिंग।

कांडी। प्रखंड के पतरिया पंचायत स्थित सड़की गांव में जन वितरण प्रणाली के दुकानदार राम प्रवेश बैठा द्वारा तीन महीने तक राशन वितरण नहीं किये जाने का मामला सामने आया है। इस मामले को तीन महीने से राशन वितरण नहीं, ग्रामीणों में आक्रोश शीर्षक से आजाद सिपाही अखबार में प्रकाशित खबर के बाद प्रशासन हरकत में आया। सोमवार को बीडीओ राकेश सहाय ने पीडीएस दुकान पर पहुंचकर खुद जांच की। उन्होंने पाया कि लाभुकों को मई, जून, और जुलाई महीने का राशन एक साथ सोमवार को दिया जा रहा है, जबकि विभाग द्वारा 30 जून तक वितरण की समय सीमा तय की गयी थी। गोदाम प्रभारी राजू सिंह ने जानकारी दी कि डीलर को 29 मई को जून, 8 जून को जुलाई और 4 जुलाई को अगस्त महीने का राशन उपलब्ध करा दिया गया था। फिर भी वितरण में 38 दिनों की देरी हुई। डीलर ने देरी का कारण बारिश बताया, परंतु जांच में कई गंभीर अनियमितताएं सामने आईं। जांच के दौरान बीडीओ ने देखा कि लाभुकों को 35 किलोग्राम की जगह 31 किलोग्राम राशन दिया जा रहा था, साथ ही गेहूं में कंकड़, पत्थर और मिट्टी की मिलावट भी पायी गयी। इस पर बीडीओ ने सभी लाभुकों से अपील की कि मिलावटी गेहूं वापस करें और डीलर उसे गोदाम में लौटाकर ताजा गेहूं उपलब्ध करायें। बीडीओ ने डीलर को सख्त निर्देश दिया कि 20 जुलाई तक तीनों महीने का पूर्ण राशन और मई महीने का बकाया चना-चना वितरण सुनिश्चित करें। साथ ही चेतावनी दी कि किसी भी लाभुक को राशन में कटौती नहीं की जाए। उन्होंने कहा कि यदि कोई लाभुक को कम राशन दिया जाता है, तो वह सीधे मुझसे संपर्क करें, डीलर के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। मौके पर एजीएम शाहिद अंसारी, गोदाम प्रभारी राजू सिंह समेत बड़ी संख्या में लाभुक उपस्थित थे।

डॉ ईश्वर सागर चंद्रवंशी डीसी दिनेश कुमार व एसपी अमन कुमार से मिले

भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य डॉ ईश्वर सागर चंद्रवंशी उपायुक्त दिनेश कुमार यादव (बायें) और एसपी अमन कुमार (दायें) से को गुलदस्ता भेंट करते हुये।

गढ़वा (आजाद सिपाही)। भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य डॉ ईश्वर सागर चंद्रवंशी उर्फ मुन्ना चंद्रवंशी गढ़वा डीसी दिनेश कुमार यादव व एसपी अमन कुमार से औपचारिक मुलाकात किया। और पुष्प-गुच्छ देकर सम्मानित किया। श्री चंद्रवंशी ने गढ़वा एसपी अमन कुमार और डीसी दिनेश कुमार यादव से क्षेत्र में अमन शांति को लेकर चर्चा भी किया। एसपी व डीसी ने डॉ ईश्वर सागर चंद्रवंशी को आश्वस्त करते हुये कहा कि पुलिस व पब्लिक के बीच बेहतर सामंजस्य स्थापित कर क्षेत्र को अपराध मुक्त बनाया जायेगा।

Jharkhand Bijli Vitran Nigam Limited
O/o General Manager cum Chief Engineer,
Ranchi Electric Supply Area
Kusai Colony, Doranda, Ranchi- 834002
Phone No. 0651-2490550 Fax No. 0651-2490670
E mail ID :- gm_rncjseb@yahoo.in

Tender Cancellation Notice

Due to some unavoidable circumstances NIT No. 360/PR/JBVNL/2024-25 under O&M Head is hereby cancelled.

स्वहित एवं राष्ट्र हित में ऊर्जा बचावें। कृपया अपनी शिकयतों को टॉल फ्री नं० 1800 345 6570 पर दर्ज करायें।

PR No. 348493

Sd/-
General Manager-Cum-Chief Engineer
Electric Supply Area, Ranchi
PR 356714 Jharkhand Bijlee Vitran Nigam Ltd (25-26)_D

भारी स्कूल बैग पर उठी चिंता, सामाजिक कार्यकर्ता ने बीडीओ को सौंपा ज्ञापन

आजाद सिपाही संवाददाता

भवनाथपुर। प्रखंड क्षेत्र में स्कूली बच्चों के भारी बैग को लेकर सामाजिक कार्यकर्ता नित्यानन्द पाठक ने चिंता जताते हुए सोमवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी नंद जी राम को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने भारत सरकार की स्कूल बैग नीति 2020 के अनुपालन की मांग की और बताया कि अधिकांश स्कूलों में इस नीति की अनदेखी हो रही है, जिससे बच्चों के स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ रहा है ज्ञापन में उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि उनकी कक्षा 3 की पुत्री का बैग 7.3 किलोग्राम वजनी है, जो उसके वजन से तीन गुना अधिक है। इससे रीढ़ की हड्डी, मांसपेशियों और घुटनों पर दवाब, थकावट और चिड़चिड़ापन जैसी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। उन्होंने स्कूलों में बैग वजन की जांच हेतु मशीनें लगाने, लॉकर सिस्टम लागू करने, सप्ताह में एक दिन 'नो बैग ड' घोषित करने और समय-सारिणी में बदलाव की मांग की। साथ ही, नीति का उल्लंघन करने वाले स्कूलों पर कार्रवाई और निगरानी समिति में सामाजिक प्रतिनिधियों को शामिल करने की भी मांग की।

जिरहुला टोला में बांस के खंभे पर दौड़ाया गया बिजली का तार बना खतरा

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के बनसानी पंचायत अंतर्गत जिरहुला टोला में ग्रामीणों द्वारा सिंचाई की सुविधा हेतु लगभग दो किलोमीटर लंबी एलटी बिजली की तार को अस्थायी रूप से बांस के खंभों के सहारे दौड़ाया गया है, इस अत्यवस्थित बिजली व्यवस्था के चलते क्षेत्र में दुर्घटना का खतरा लगातार बना हुआ है। स्थानीय जानकारी के अनुसार, पूर्व में इसी असुरक्षित तार के गिरने से एक गाय की मृत्यु हो चुकी है। इसके बावजूद बिजली विभाग ने अब तक कोई स्थायी समाधान नहीं निकाला है, जिससे ग्रामीणों में भारी आक्रोश है।

Jharkhand BijliVitran Nigam Limited
O/o General Manager cum Chief Engineer, Ranchi Electric Supply Area
Kusai Colony, Doranda, Ranchi- 834002
Phone No. 0651-2490550 Fax No. 0651-2490670 E mail ID :- gm_rncjseb@yahoo.in

Tender Cancellation Notice

Due to some unavoidable circumstances NIT No. 241/PR/JBVNL/24-25 under O&M Head is hereby cancelled.

Sd/-
General Manager-Cum-Chief Engineer
Electric Supply Area, Ranchi

स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचावें। कृपया अपनी शिकयतों को 18003456570(कॉल सेन्टर) पर दर्ज करायें।

PR No. 342366 PR 356713 Jharkhand Bijlee Vitran Nigam Ltd(25-26)D

जीएन कॉन्वेंट स्कूल के छात्रों के बीच मैंगो डे कार्यक्रम

संबोधन में निदेशक ने कहा कि आम सिर्फ फल नहीं बल्कि भारत की समृद्धि और विरासत का प्रतीक है : निदेशक

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। सभी फलों में राजा आम का एक अनोखा कार्यक्रम। आम सिर्फ फल नहीं बल्कि भारत की समृद्ध विरासत का प्रतीक है। सोमवार को जीएन कॉन्वेंट स्कूल के जूनियर विंग के छात्र छात्राओं के बीच स्कूल प्रांगण में मैंगो डे कार्यक्रम किया गया। इस मौके पर आम से जुड़ी प्रतियोगिताएं, चित्रकला और प्रदर्शनी आयोजित की गयी। अपने संबोधन में निदेशक ने कहा कि आम सिर्फ फल नहीं बल्कि भारत की समृद्धि और विरासत का प्रतीक है। मैंगो डे हमें इस अद्भुत फल के महत्व को समझने और इसके संरक्षण का संदेश देता है। हमें गर्व होना चाहिए कि हम उसे देश से हैं जहां आम जैसी मीठी फल विरासत पायी जाती है। मैंगो डे हमें इस खास फल से जुड़ने और उसे बचाने का संदेश देता है। कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शिवांश केसरी, वेदांश केसरी, मिस्टी गुप्ता, प्रिंस ठाकुर, आंचल केसरी, श्रेया शीतल को मेडल और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया एवं सभी बच्चों को मीठे और रसीले आम का स्वाद भी चखाया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में उपप्राचार्य बसन्त ठाकुर, संतोष प्रसाद, कृष्ण कुमार, वीरेंद्र शाह, सरिता दुबे, नीरा शर्मा, शिवानी कुमारी, नेहा केसरी, सुनीता कुमारी, रागिनी कुमारी, पूजा प्रकाश, विकास, दिनेश कुमार आदि की भूमिका सराहनीय रही।

कार्यालय जिला परिषद, हजारीबाग

अतिः अल्पकालीन ई–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या :– 12/2025–26

दिनांक 07/07/2025

मद का नाम :– जिला खनिज फाउण्डेशन ट्रस्ट, हजारीबाग।

क्र0	प्रखण्ड	ग्राम	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	अग्रधन की राशि	योजना पूर्ण करने की तिथि
1	2	3	4	5	6	7	8
1	बड़कागांव	पोटंगा टोला पारगढ़ा	उत्क्रमित मध्य विद्यालय, पोटंगा के लिए नये विद्यालय भवन निर्माण कार्य।	15482200.00	10000.00	310000.00	नौ माह
2	केरेडारी	जोरदाग	उत्क्रमित मध्य विद्यालय, जोरदाग के लिए नये विद्यालय भवन निर्माण कार्य।	15482200.00	10000.00	310000.00	नौ माह

1. वेबसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथि 09.07.2025
2. ई–निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय 09.07.25 से 16.07.2025 अपराहन् 5:00 बजे तक।
3. निविदा खोलने का स्थान– जिला परिषद, हजारीबाग।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय 18.07.2025 पूर्वाहन् 10:00 बजे।
5. निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता – जिला अभियंता, जिला परिषद, हजारीबाग।
6. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल Online Mode द्वारा स्वीकार्य होगी।
7. ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं0–06546 261406 ई–मेल – districtboardhazaribag@gmail.com
8. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर खाता बंद कर दिया जाता है तो उसकी सारी जवाबदेही आपकी होगी।
9. निविदा की शर्तें कार्यालय के सूचना पट्ट या www.jharkhandtenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

जिला अभियंता,
जिला परिषद, हजारीबाग

PR 356711 (District)25-26*D

'कॉफी विद एसडीएम' में इस सप्ताह राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि होंगे मेहमान

गढ़वा (आजाद सिपाही)। सदर एसडीएम संजय कुमार के द्वारा चलाये जा रहे नियमित साप्ताहिक संवाद कार्यक्रम 'कॉफी विद एसडीएम' की कड़ी में इस बार मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया है। आगामी बुधवार 9 जुलाई को 'कॉफी विद एसडीएम' कार्यक्रम का आयोजन प्रातः 11:00 प्रस्तावित है। कार्यक्रम में क्षेत्र के मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि भाग लेंगे। कार्यक्रम में प्रतिनिधियों से क्षेत्र की बेहतरी को लेकर विभिन्न समसामयिक विषयों पर सुझाव और शिकायत भी आमंत्रित किये जायेंगे। निर्वाचन से जुड़े विषयों में मुख्य रूप से मतदाता सूची के शुद्धिकरण, बूथ लेवल एजेंटों की नियुक्ति तथा मतदाता सूची के आगामी गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया पर चर्चा की जायेगी।

आठ माह से पंचायत भवन में नहीं आ रही मुखिया नाराज वार्ड सदस्यों ने बीडीओ को दिया शिकायत पत्र

मुखिया ने कहा कि मैं बीमार होने पर रिम्स में थी एक माह से एडमिट, सभी का शिकायत होगा दूर

आजाद सिपाही संवाददाता

मेरल। प्रखंड के ग्राम पंचायत बाना के उप मुखिया भोला पासवान के नेतृत्व में वार्ड सदस्यों ने सोमवार को प्रखंड कार्यालय पहुंचकर बीडीओ के नाम प्रखंड सहायक रिजवान अख्तर को अपने मुखिया के खिलाफ शिकायत पत्र सौंपकर करवाई करने का मांग किया है। शिकायत पत्र में कहा गया है कि मुखिया गौरी देवी बीमारी के कारण लगभग आठ माह से पंचायत भवन से अनुपस्थित हैं। उनके नहीं आने से कार्यकारिणी बैठक नहीं हुआ है जिससे विकास कार्य बाधित है। सरकार के निदेशानुसार पंचायत के अंतर्गत कार्यरत विभागों का मासिक समीक्षा बैठक नहीं हो पा रहा है। बिना कार्यकारिणी बैठक के 15वें वित्त एवं मनरेगा के कार्यों का संचालन होने का बड़ा आरोप लगाते हुए कहा है कि मुखिया जी के अस्वस्थ रहने के कारण ग्रामीण जनता की समस्याओं का समाधान नहीं हो पा रहा है। वार्ड सदस्यों ने उपरोक्त शिकायत पर उचित कार्यवाही करने का आग्रह किया है ताकि पंचायत सुचारु रूप से चल सके एवं ग्रामीण जनता का कार्य का निष्पादन हो सके। शिकायत पत्र पर उपमुखिया भोला पासवान, वार्ड सदस्य गायत्री देवी, कमला देवी, दिनेश चौधरी, कुसुम देवी, पुनम देवी, गीता देवी, रजकली देवी, मंजू देवी, संगीता कुमारी व अन्य सदस्य शामिल थे।

सभी की शिकायत होगी दूर : मुखिया

इधर मुखिया गौरी देवी ने बीडीओ से प्रखंड कार्यालय में मुलाकात कर अपनी स्वास्थ्य की जानकारी दी। शिकायतों पर पूछे जाने पर कहा कि ठीक होकर आ गयी हूं, सभी का शिकायत दूर हो जायेगा।

सभी बिंदुओं पर होगी जांच : बीडीओ

शिकायत के संबंध में प्रभारी बीडीओ सतीश भगत ने कहा कि मुखिया द्वारा रिम्स में भर्ती होने की जानकारी दी गयी थी, कुछ दिनों के लिए बीच में आयी थी उन दिनों मुखिया द्वारा जरूरी कार्यों के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान की गयी थी। फिर भी सभी बिंदुओं पर जांच की जायेगी।

झारखण्ड सरकार
श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग
जिला नियोजनालय–सह–मॉडल कैरियर सेन्टर, कोडरमा।
"भर्त्ती कैम्प–2025"

–: सूचना :–

एतद् द्वारा सभी शिक्षित बेरोजगार युवक/युवतियों को सूचित किया जाता है कि जिला नियोजनालय–सह–मॉडल कैरियर सेन्टर, कोडरमा के द्वारा दिनांक : 09 जुलाई, 2025 को जिला नियोजनालय, कोडरमा कार्यालय में पूर्वाहन् 10:00 बजे से अपराहन् 03:00 बजे तक एक दिवसीय "भर्त्ती कैम्प– 2025" का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें निम्नलिखित प्रतिष्ठानों ने अपनी उपस्थिति की सहमति जताई है, जिसका विवरण निम्न प्रकार है :–

S.N	Name of the Establishment & Address	Name of the Post	No of Post	Qualification	Age	Pay & Allow.	Experience
01	NTTF, Bangalore, Karnataka	Trainee Operator	200	10th, 12th, ITI	18-25 Yrs.	14,550-16,550/ Month	Fresher
02	The Koderma Holy Family Hospital, Koderma	Office Staff	02	Inter	18-25 Yrs.	10,000/Month	6 Month
		G.D.A	01	Inter	18-25 Yrs.	10,000/Month	5 Month
		ANM	03	Diploma	18-25 Yrs.	10,000/Month	6 Month
		G.N.M	01	Diploma	18-25 Yrs.	12,000/Month	6 Month

योग्य एवं इच्छुक उम्मीदवार जो पूर्व से किसी भी नियोजनालय में निबंधित नहीं है, वे जिला नियोजनालय, कोडरमा में अथवा **www.jharniyojan.jharkhand.gov.in** पर अपना निबंधन कराते हुए उपरोक्त "भर्त्ती कैम्प– 2025" में नियोजक/नियोजक के प्रतिनिधि के समक्ष अपने सभी मूल प्रमाण पत्रों एवं उसकी एक छायाप्रति तथा बायोडाटा (02 कॉपी), दो पासपोर्ट साईज फोटो के साथ साक्षात्कार हेतु उपस्थित हो सकते है। वैसे उम्मीदवार जो पूर्व से निबंधित है, उन्हें पुनः निबंधन करवाने की आवश्यकता नहीं है। चूँकि रिक्ति निजी क्षेत्र से संबंधित है अतएव चयन की प्रक्रिया में नियोजनालय का किसी भी प्रकार से हस्तक्षेप नहीं होगा।

अतः सभी शिक्षित बेरोजगार युवक/युवतियों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में "भर्त्ती कैम्प– 2025" में शामिल होकर इस सुनहरे अवसर का लाभ उठावें।

जिला नियोजन पदाधिकारी,
कोडरमा।

PR 356727 Labour Employment and Traning(25-26)D

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 08 जुलाई, 2025
www.azadsipahi.in
08

पीएलएफआइ के चार नक्सली हथियार के साथ गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। खूंटी थाना की पुलिस ने ग्राम बिरहू उरांव टोली स्थित सरकारी स्कूल के पास एक मकान में रविवार को छापामारी कर प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीएलएफआइ के चार नक्सलियों को अवैध हथियार एवं गोली के साथ गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपितों में खूंटी के मान्हू गांव निवासी पवन लोहरा (22 वर्ष), जमुआदाग कॉलोनी निवासी विक्की लोहरा (19 वर्ष) एवं अर्जुन लोहरा उर्फ ईश्वर उर्फ पेंचा (18 वर्ष) तथा बिरहू उरांव टोली निवासी अर्पित केरकेट्टा (19 वर्ष) शामिल हैं। इनके पास से पुलिस ने मौके पर एक लोडेड देसी पिस्टल (मैगजीन सहित), आठ जिंदा कारतूस, दो लोडेड मैगजीन, एक चाकू, एक मोबाइल, एक मोटरसाइकिल और एक स्कूटी बरामद किये हैं। यह जानकारी पुलिस अधीक्षक मनीष टोप्पो ने सोमवार शाम आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। एसपी ने बताया कि रविवार को उन्हें गुप्त सूचना मिली थी कि बिरहू उरांव टोली स्थित सरकारी स्कूल के

पास कुछ लोग अवैध हथियार के साथ किसी बड़ी घटना को अंजाम देने के लिए इकट्ठा हुए हैं। सूचना के सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई के लिए खूंटी थाना प्रभारी मोहन कुमार के नेतृत्व में छापामार टीम का गठन किया गया। छापामार टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए स्कूल के समीप एक मकान में छापामारी कर वहां से उक्त चारों नक्सलियों को हथियार, गोली आदि के साथ गिरफ्तार कर लिया। एसपी ने बताया कि गिरफ्तार नक्सलियों से पूछताछ करने पर उन्होंने बताया कि वे सिग्नल ऐप इंस्टॉल किए हुए मोबाइल से पीएलएफआई संगठन के सक्रिय सदस्यों से बातचीत करते हैं और उनके निर्देश पर लेवी वसूलने तथा संगठन के नाम पर दहशत फैलाने के लिए गोलीबारी की घटना को अंजाम देते हैं।

गिरफ्तार विक्की लोहरा एवं पवन लोहरा का है आपराधिक इतिहास : एसपी ने बताया कि गिरफ्तार विक्की लोहरा एवं पवन लोहरा का अपराधिक इतिहास रहा है। विक्की लोहरा के विरुद्ध खूंटी थाना में दो वर्ष पूर्व वर्ष 2023 में लूट का एक मामला कांड संख्या 12/23 दर्ज है। वहीं पवन लोहरा के विरुद्ध छत्तीसगढ़ के बगीचा थाना में संगीन धाराओं में एक मामला कांड संख्या 16/25 दर्ज है। इसके अलावा उक्त दोनों आरोपितों ने रांची के नामकुम (खरसीदाग) थानांतर्गत रांची खूंटी रोड में स्थित मेसर्स हिंदुस्तान टाइल्स नामक प्रतिष्ठान के बाहर गत 12 जून को रंगदारी के उद्देश्य से धमकी भरा पत्र फेंकने एवं गोली चलाने की घटना में दर्ज नामकुम (खरसीदाग) थाना कांड संख्या 183/25 और तुपुदाना थानांतर्गत जमीन कारोबारी मंटू महतो के घर में रंगदारी के उद्देश्य से फायरिंग करने के मामले में धुर्वा (तुपुदाना) थाना में दर्ज कांड संख्या 159/25 में अपनी संलिप्तता स्वीकार कर ली है। इसके साथ ही विक्की लोहरा ने रांची के सुखदेव नगर थाना क्षेत्र के सब्जी मंडी से गत मार्च महीने में एक टीवीएस अपाची मोटरसाइकिल चोरी के मामले में भी अपनी संलिप्तता स्वीकार कर ली है। छापामार टीम में खूंटी थाना प्रभारी के अलावा खूंटी थाना के एसआई सीताराम दांगी, मंटू कुमार, अरुण कुमार, मणिदीप एवं चंदन कुमार समेत सशस्त्र बल के जवान शामिल थे।

खूंटी में लोडेड देसी पिस्टल के साथ अपराधी गिरफ्तार

खूंटी (आजाद सिपाही)। खूंटी थाना की पुलिस ने शहर के बाजार टांड़ में रविवार की रात छापामारी कर एक अपराधी को खदेड़कर पकड़ लिया, जबकि अन्य दो अपराधकर्मी अंधेरे का लाभ उठाकर भागने में सफल रहे। पकड़े गए आरोपित की तलाशी लेने पर उसके पास से एक लोडेड देसी पिस्टल (मैगजीन सहित) और दो जिंदा कारतूस बरामद हुए, तब पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। इस संबंध में गिरफ्तार आरोपित मुरहू के इट्टे गांव निवासी सागर मुंडा के विरुद्ध खूंटी थाने में आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। यह जानकारी पुलिस अधीक्षक मनीष टोप्पो ने सोमवार को आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। एसपी ने बताया कि रविवार रात उन्हें गुप्त सूचना मिली थी कि शहर के बाजार टांड़ में तीन संदिग्ध लड़के शराब पी रहे हैं और लोगों को हथियार का भय दिखाकर रंगदारी मांग रहे हैं। सूचना के सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई के लिए खूंटी थाना प्रभारी मोहन कुमार के नेतृत्व में छापामार टीम का गठन किया गया। छापामार टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए वहां छापामारी की, तो पुलिस टीम को देखते ही तीनों लड़के वहां से भागने लगे। इस पर पुलिस टीम ने एक आरोपित को खदेड़कर धर दबोचा, जबकि अन्य दो आरोपित भागने में सफल रहे।

एक-दो दिनों में बनई नदी पर शुरू हो जायेगा डायवर्सन निर्माण कार्य : कालीचरण मुंडा

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। खूंटी के सांसद कालीचरण मुंडा ने दावा किया है कि एक-दो दिनों के अंदर पेलौल गांव के पास टूटे बनई नदी पुल के पास पक्का डायवर्सन का निर्माण कार्य शुरू हो जायेगा और चार-पांच दिनों में डायवर्सन तैयार हो जायेगा। सांसद ने सोमवार को फोन पर बताया कि पुल टूटने से आम नागरिकों और छात्र-छात्राओं को हारी कठिनाई को लेकर राज्य के मुख्य सचिव के अलावा मुख्य अभियंता और खूंटी के कार्यपालक अभियंता सये बातकर डावर्सन बनाने को कहा था। सांसद ने बताया कि विभाग के अभियंता ने स्थल का निरीक्षण कर लिया है और बहुत जल्द काम शुरू हो जायेगा। इधर, कांग्रेस सहकारिता प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव नईमुद्दीन खान ने कहा कि डायवर्सन का निर्माण कार्य युद्ध सतर पर चलेगा और चार-पांच दिनों के अंदर ही पक्का डायवर्सन बनकर तेयार हो जायेगा। कांग्रेस के जिलाध्यक्ष रवि मिश्रा ने भी दावा किया कि बनई नदी पर डावर्सन का निर्माण कार्य शुरू कर दिया जायेगा। ज्ञात हो कि इसकें पहले भी 24 जून सांसद कालीचरण मुंडा ने राज्य की ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय सिंह से मुलाकात के बाद कहा था कि दो-चार दिनों में डावर्सन का काम शुरू हो जायेगा, पर 15 दिनों के बाद भी विभाग द्वारा इस दिशा में काई पहल नहीं की गयी। ज्ञात हो कि 19 जून को हुई भारी बारिश के कारण खूटी-सिमडेगा मार्ग पर बनई नदी पुल ध्वस्त हो गया था।

सांसद कालीचरण मुंडा ने किया निरीक्षण

सांसद कालीचरण मुंडा ने सोमवार को पेलौल के पास टूट पुल का जायजा लिया और डायवर्सन निर्माण को लेकर अधिकारियों को दिशा निर्देश दिये। मौके पर कांग्रेस सहकारिता प्रकोष्ठ के महासचिव नईमुद्दीन खान भी मौजूद थे।

डायवर्सन निर्माण के प्रति सरकार और प्रशासन गंभीर नहीं : मनोज कुमार

बनई नदी पुल के टूटने से हो रही परेशानियों पर चिंता जताते हुए बाबा आम्रेश्वर धाम प्रबंध समिति के महामंत्री और पूर्व सांसद प्रतिनिधि मनोज कुमार ने कहा कि सरकार और प्रशासन इस दिशा में उदासीन है। उन्होंने कहा कि 11 जुलाई से पवित्र सावन माह की शुरूआत हो रही है। सावन के महीने में हर दिन हजारों भक्त बाबा भोलनाथ का जलाभिषेक करने बाबा आम्रेश्वर धाम पहुंचते हैं। सोमवार को तो यह संख्या लाखों तक पहंच जाती है। डायवर्सन नहीं बनने से बाबा के भक्तों को भारी परेशानी होगी। मनोज कुंमार ने सरकार और प्रशासन से अविलंब अस्थिाई डायवर्सन बनाने की आग्रह किया है।

खलारी बाजारटाड़ में लाठी खेल प्रतियोगिता का आयोजन

मैकलुस्कीगंज (आजाद सिपाही)। मैकलुस्कीगंज थाना क्षेत्र के बाजार टॉड में मुहर्रम का मातमी जुलूस निकाला गया। जुलूस में शामिल लोग गांव का भ्रमण करने के बाद खेल स्थल पहुंचे। जहां अस्त्र शस्त्र और लाठी खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि मैकलुस्कीगंज थाना प्रभारी धनजंय बैठा तथा झामुमो नेता जुल्फेकार खान, मुन्चू शर्मा, मुबारक अंसारी, विधायक प्रतिनिधि मोनू रजक, अशोक राम थे। इस अवसर पर अस्त्र शस्त्र और लाठी खेल का प्रदर्शन किया गया और बेहतरीन खेल प्रदर्शन करने वाले को अतिथियों के द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर शाहिद अंसारी, सफीक अंसारी, अकबर खान, राजा अब्बास,असलम अंसारी, हसन रिजवी, मैनु खान, ताहिर, नौशाद खान, मनव्वर, अख्तर खान, नूर मोहम्मद, आजाद खान, कलीम रिजवी, आफताब, परवेज, आरिफ, असरफ खान आदि का सराहनीय योगदान रहा।

बहेरा में मुहर्रम मेला सह लाठी खेल प्रतियोगिता आज

पिपरवार (आजाद सिपाही)। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के बहेरा गांव में मंगलवार को मुहर्रम के मौके पर प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मुहर्रम सद्भावना मेला सह लाठी खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा, जिसकी सारी तैयारी पुरी कर ली गयी है। आयोजन स्थल पर भव्य पंडाल और स्टेज का निर्माण कराया गया है। इसकी जानकारी देते हुए मुहर्रम समिति के अध्यक्ष कासिम उर्फ मुन्ना ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप मे टंडवा एसडीपीओ प्रभात रंजन बरवार, पिपरवार जीएम संजीव कुमार, अशोका पीओ जेके सिंह, टंडवा बीडीओ देवलाल उरांव, इंस्पेक्टर उत्तम कुमार तिवारी, पिपरवार थाना प्रभारी अभय कुमार, झारखंड प्रदेश महिला कांग्रेस की अध्यक्ष गुंजन कुमारी सिंह, टंडवा प्रमुख रीना कुमारी सहित कई गणमान्य लोग शामिल होंगे। उन्होंने क्षेत्र के सभी लोगों से इस कार्यक्रम में शामिल होने की अपील की है।

लगातार भारी बारिश से किसानों में छायी मायूसी, खेत में लगे धान की बिछड़ा हो रही नष्ट

ईचागढ़ (आजाद सिपाही)। चांडिल अनुमंडल क्षेत्र रिकार्ड भारी वर्षा से जहां जनजीवन अस्त-व्यस्त हो रहा है, वहीं खेतों में धान की महंगी बीज अंकुरित होने से पहले ही सड़ कर नष्ट हो रहा है। खेतों में लगे विभिन्न सब्जी खेती आती वर्षा से नष्ट हो रहा है। लगातार जल जमाव से नीचले हिस्सों में लगे किसानों का सब्जी खेती तो लगभग खत्म हो गया। बाजारों में सब्जी का लाले पड़ रहा है। मानसून के दस्तक के साथ ही लगातार और भारी बारिश से मानो किसानों का चैन छीन लिया है। किसानों का खेत में डाले धान बीज नष्ट होने से महंगी दामों में धान बीज दुबारा खरीदने से किसानों को पैदावार का खर्चा भी उठाना मुश्किल हो जाता है, ऐसे में किसान करें तो क्या करें? किसान निमाई चंद्र महतो ने बताया कि धान की खेती ही इस क्षेत्र में किसानों का एकमात्र सहारा है। वर्षा पर आश्रित यहां के किसान कभी कम बारिश तो कभी अधिक बारिश से धान नष्ट हो जाता है। उन्होंने कहा कि ऐसा परिस्थिति 10 वर्षों से किसानों के साथ हो रहा है। उन्होंने कहा कि ईचागढ़ सहित पूरे अनुमंडल क्षेत्र में सिंचाई का कोई साधन नहीं है, जिससे दो तीन फसल यहां नहीं हो पाता है।

विधायक सविता महतो दिल्ली पहुंचकर जाना दिशोम गुरु शिबू सोरेन का हाल

आजाद सिपाही संवाददाता

ईचागढ़। ईचागढ़ के विधायक सविता महतो दिल्ली के गंगाराम हॉस्पिटल पहुंचकर दीशोम गुरु शिबू सोरेन के स्वास्थ्य का हाल-चाल जाना। इस अवसर पर दिल्ली स्थित झारखंड भवन में राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से भी मुलाकात हुई। इस अवसर पर खरसावां विधायक दशरथ गागराई, जिला अध्यक्ष शुभेंदु महतो, लक्ष्मण टुडू, गणेश माहली, गणेश चौधरी काबलु महतो, स्नेहा

महतो, शिल्पी महतो, श्रुति महतो आदि उपस्थित थे। विधायक सविता महतो ने दुरभाष पर कहा कि ईश्वर से प्रार्थना किया जा रहा है कि हमारे प्रेरणास्रोत, संघर्ष के प्रतीक और महान जननायक दिशोम गुरु शिबू सोरेन शीघ्र पूर्ण स्वस्थ होकर हमारे बीच लौटें।

बुंडू अनुमंडल अस्पताल का एसडीओ ने किया निरीक्षण

आजाद सिपाही संवाददाता

बुंडू। सोमवार को बुंडू अनुमंडल अस्पताल का औचक निरीक्षण एसडीओ किस्टो कुमार बेसरा ने किया। इस दौरान उन्होंने ओपीडी से लेकर अन्य सभी विभागों का गहन निरीक्षण किया और मौके पर सारी व्यवस्थाएं संतोषजनक पायी गईं। मरीजों को मिलने वाली स्वास्थ्य सेवाओं पर उन्होंने संतोष जताया और अस्पताल प्रबंधन को निर्देश दिया कि इसी तरह सेवाओं में गुणवत्ता बनाये रखें। अस्पताल निरीक्षण के बाद एसडीएम किस्टो कुमार बेसरा सीधे अनुमंडल कार्यालय पहुंचे, जहां उन्होंने बीएलओ पर्यवेक्षकों के साथ समीक्षा बैठक किया। इस दौरान नजरी नक्शा बनाए जाने के कार्य की धीमी प्रगति पर गहरी नाराजगी जतायी। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि कार्य समय पर पूरा नहीं होगा, उसपर कड़ी कार्रवाई तय है। नजरी नक्शा कार्य में हो रही देरी को गंभीरता से लेते हुए बुंडू एसडीएम ने प्रखंड के बीएलओ पर्यवेक्षकों के साथ समीक्षात्मक बैठक की और निर्देश जारी किया कि अगले दो दिनों के भीतर सभी नजरी नक्शा तैयार कर अंचल कार्यालय में जमा कराएं, अन्यथा संबंधित कर्मियों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जायेगी। एसडीएम किस्टो कुमार बेसरा ने कहा कि प्रशासनिक कार्यों में ढिलाई किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं की जायेगी। जनहित से जुड़े कार्यों को समयबद्ध तरीके से पूर्ण करना ही हर अधिकारी व कर्मी की पहली जिम्मेदारी है।

भारी बारिश से पानी में बह रहे हैं किसानों के अरमान

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। खूंटी जिला सहित पूरे झारखंड में पिछले 20-25 दिनों से हो रही लगातार बारिश के कारण किसानों के अरमान पानी में बहते जा रहे है। लगातार हो रही मूसलाधार पानी के कारण किसानों की चिंता लगातार बढ़ती जा रही है। भारी बारिश कें कारण किसान न खेतों में बिचड़े डाल पाये और न ही मड़ुवा या गोढ़ा धान की खेती हो पा रही है। खेतों में पानी भर जाने के कारण सभी बीच और बिचड़े पानी में बह जा रहे हैं। बारिश ने सब्जी उत्पादक किसानों की भी कमर तोड़ दी है। खेतों में पानी भरने कें कारण टमाटर, भींड़ी, परवल, शीमला मिर्च सहित अन्य सब्जियां खेतों में ही सड़ जा रही हैं। तोरपा के किसान और सेवानिवृत्त किसान पंचम साहू कहते हैं कि यदि इसी तरह मेघ बरसता रहा, तो अकाल की आशंका बढ़ जायेगी।

उहोंने कहा कि कई किसानों ने सरकारी और निजी बैंकों के अलावा सेठ-साहूकारो से खेती के लिए कज लिया है। उन्हें इस बात की चिंता सता रही है कि वे ऋण की आदयगी कैसे करेंगे। युवा किसान रोहित साहू कहते हैं कि पिछले 10-15 वर्षों से इस क्षेत्र में इस तरह की बारिश नहीं हुई थी। उन्होंने कहा कि बारिश कम नहीं होने पर किसानों की बबादी तय है। लापुंग प्रखंड के रहने वाले किसान अह्लाद साहू उर्फ मोड़ेया ने कहा कि बारिश से किसानों केा भारी क्षति हो रही है। खासकर भारी बारिश की मार सब्जी डत्पादन करनेचाले किसानों पर पड़ी है। खूंटी के बारकुली गांव कें किसान प्रमोद साहू कहते हैं कि बारिश से फसलों को तो नुकसान पहुंच ही रहा है, कई पुल-पुलिया और डायवर्सन भी टूट गये हैं। इसके कारण आम लोगों को विद्यार्थियों को भारी कठिनाई हो रही है।

भू-रैयतों की होनेवाली राजधर साइडिंग बंदी स्थगित

पिपरवार (आजाद सिपाही)। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के राजधर साइडिंग निर्माण में भूमि देकर भूमिहीन हुए मौजा बहेरा, राजधर एवं कनौदा के भू रैयतों की एक बैठक सोमवार को बहेरा गांव में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता बिरेंद्र उरांव और संचालन जाहिद अली ने किया। बैठक में मुख्य रूप से भू-रैयतों द्वारा 30 जून को रोजगार को लेकर सीसीएल पिपरवार प्रबधंन को दिये गये ज्ञापन और 8 जुलाई से होने वाले अनिश्चितकाल राजधर साईंडिंग बंदी को बहेरा में होने वाले मुहर्रम मेला और देशव्यापी हड़ताल को लेकर 9 जुलाई तक के लिए बंदी को स्थगित कर दिया गया है। बैठक में मुख्य रूप से तीनों मौजा के रैयत उपस्थित थे।

पिपरवार के अशोका में हुई न्यू बिजैन और सीसीएल प्रबधंन के बीच बैठक

विस्थापित ग्रामीणों की 13 सूत्री मांगों पर हुई चर्चा

आजाद सिपाही संवाददाता

पिपरवार। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के अशोक परियोजना कार्यालय में मंगलवार को स्थानीय सीसीएल प्रबंधन और न्यु बिजैन के विस्थापित ग्रामीणों की एक आवश्यक बैठक संपन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता परियोजना पदाधिकारी जितेंद्र कुमार सिंह और संचालन किसन अवस्थी ने किया। बैठक में न्यू बिजैन के विस्थापित ग्रामीणों के द्वारा पिपरवार एरिया प्रबंधन को पूर्व में सौंपे गये 13 सूत्री मांगों पर चर्चा की गयी। बैठक में वक्ताओं ने कहा कि ग्रामीणों के द्वारा मांग पत्र सौंपे जाने के बाद 23 मार्च 2025 को ग्रामीण और प्रबधंन के बीच वार्ता हुआ था, इसमें प्रबंधन के द्वारा सभी मांगों को पूरा करने का भरोसा दिया था, लेकिन तीन

महीना बीत जाने के बावजूद अभी तक प्रबंधन के द्वारा इस पर कोई पहल नहीं किया गया है। ग्रामीणों की प्रमुख मांगों में मुख्य रूप से स्कूल के लिए भूमि उपलब्ध कराने, पूर्नवास स्थल देवी मंडप के समीप तालाब निर्माण एवं सुंदरीकरण, दशकर्मा शेड भवन निर्माण, अंचल अधिकारी टंडवा के द्वारा ग्राम सभा कराकर ग्राम बिजैन के लिए लंबित मामलों का निष्पादन करने, आरएंड आर साईट कल्याणपुर व कारो में बचे हुए रोड, नाली, बिजली का काम पूरा करने, ग्राम बिजैन मे बचे हुए भूमि का सत्यापन कराने, पुर्नवास स्थल मे खाली बचे हुए भुमि मे फलदार पौधा लगाने की मांग की गयी है। इधर बैठक में उपस्थित अधिकारियों ने क्षेत्रीय स्तर से लेकर मुख्यालय स्तर तक सभी मांगों को जल्द पूरा करने का आश्वासन दिया। ग्रामीणों ने कहा कि यदि जल्द मांगों को पूरा नहीं किया गया, तो ग्रामीण बाध्य होकर आंदोलन करने के लिए मजबूर होंगे। बैठक में मुख्य रूप से अशोक परियोजना पदाधिकारी जितेंद्र कुमार सिंह, किशन अवस्थी, मंगल सिंह के अलावा ग्रामीणों की ओर से रंथु गंझु, फकीरा गंझु, झरी राम, बाबुलाल राम, राहुल कुमार राम, सुरेंद्र राम, सोनु कुमार गुप्ता, सुलेंद्र राम, शिवम मुंडा, विकाश राम, दीपक राम सहित कई लोग मौजुद थे।

हड़ताल को लेकर डकरा में संयुक्त मोर्चा का कन्वेंशन

आजाद सिपाही संवाददाता

खलारी। संयुक्त मोर्चा के बैनर तले सोमवार को डकरा क्षेत्र में आगामी 9 जुलाई की हड़ताल को सफल करने हेतु सीसीएल डकरा में सयुक्त मोर्चा के तत्वावधान में कोयला कामगारों का कन्वेंशन हुआ। कन्वेंशन को संबोधित करते हुए रमेंद्र कुमार ने कहा कि सरकार की मजदूर विरोधी नीतियों के खिलाफ लड़ना ही श्रमिकों और यूनियन के समक्ष एक मात्र रास्ता बच्चा है, आनेवाले वक्त में वेज बोर्ड बारह होगा ये संशय है तात्कालिक तौर पर हड़ताल की सफलता तय करेगा बोनस कैसा मिलेगा।

कन्वेंशन को संबोधित करते हुए कमलेश सिंह ने कहा कि हमारे यूनियन के महान नेताओं ने जो संघर्ष कर कोयला कामगारों को दिलाया है उन अधिकारों की रक्षा करना आज के नई युवा पीढ़ी के नेताओं का परम कर्तव्य बनता है उसे बचाएं।

कान्वेंशन को सम्बोधित करते हुए सीटू के आरपी सिंह ने कहा कि केंद्र सरकार के मजदूर बिरोधी नीतियों के खिलाफ संघर्ष ही एक मात्र रास्ता है, अगर इसको कोई राजनीति कह रहा है तो ठीक है, पूंजीपति अगर राजनीति करेगा तो मजदूर वर्ग क्यो नही करेगा। कन्वेंशन में लगभग ढाई सौ कोयला कामगार सम्मिलित हुए।

कन्वेंशन में शामिल होने वालों में रंजीत पांडेय, चंदेश्वर सिंह, भीम यादव, डीपी सिंह, कृष्ण चौहान, इस्लाम अंसारी, नंदू मेहता, इकबाल हुसैन, रंथु उरांव, अजय सिंह, शैलेंद्र कुमार सिंह, अरविंद शर्मा, धीरज कुमार, देवपाल मुंडा, गणेश, राहुल सिंह, ध्वजा राम धोबी, रामलखन गंझु, जंग बहादुर राम, राजेश्वर महतो, अजय चौहान, रविंद्र नाथ सिंह आदि ने संबोधित किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रेम कुमार ने की। इस मौके पर काफी संख्या में मजदूर उपस्थित थे।

पिपरवार और सीएचपी सीपीपी परियोजना में संयुक्त मोर्चा ने की गेट मीटिंग

पिपरवार (आजाद सिपाही)। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के पिपरवार वर्कशॉप एवं सीएचपी/सीपीपी परियोजना कार्यालय में सोमवार की सुबह पिपरवार संयुक्त मोर्चा मंडली के द्वारा गेट मीटिंग किया गया। संयुक्त अध्यक्ष मंडली की अध्यक्षता में आयोजित इस गेट मिटिंग का संचालन इस्लाम अंसारी और मोहम्मद अब्दुल्लाह ने किया। गेट मीटिंग में केंद्रीय श्रमिक संगठनों के आह्वान पर 9 जुलाई को होने वाले एक दिवसीय देशव्यापी हड़ताल को सफल बनाने को लेकर विचार विमर्श किया गया। गेट मीटिंग को संबोधित करते हुए श्रमिक प्रतिनिधियों ने कहा कि चार लेबर कोड मजदूर के हक अधिकार को डसने का कोड है। इसे हड़ताल व आंदोलन से ही कुचला जा सकता है। वर्तमान में केंद्र सरकार के द्वारा लगातार मजदूरों के सुख सुविधा पर हमला किया जा रहा है, जिस किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। मजदूरों के हक और अधिकार के लिए केंद्रीय श्रमिक संगठनों ने 9 जुलाई को देशव्यापी हड़ताल की घोषणा की है, जिसे पिपरवार क्षेत्र में ऐतिहासिक बनाते हुए सफल किया जायेगा। गेट मीटिंग में उपस्थित सभी मजदूरों से हड़ताल में शामिल होकर इसे सफल बनाने की अपील की गयी। इस मौके पर रविंद्रनाथ सिंह, अरविंद शर्मा, भीम सिंह यादव, इस्लाम अंसारी, भीम प्रसाद मेहता, मोहम्मद रहमतुल्ला, केके चर्तुवेदी, धनेश्वर गंझू, मो अब्दुल्लाह, अनिल कुंवर, रामू गोप, सहित काफी संख्या में श्रमिक प्रतिनिधि एवं कोयला मजदूर उपस्थित थे।

नहाने के दौरान तालाब में डूबने से दो बच्चों की मौत

मृतकों में दस वर्षीय आशीष केरकेट्टा और नौ वर्षीय विल्फ्रेड मड़की शामिल हैं

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। रनिया थाना क्षेत्र के बघिया आरसी टोली के दो बच्चों की गांव के ही तालाब में नहाने के दौरान दो बच्चों की डूबने से मौत हो गयी। मृतकों में दस वर्षीय आशीष केर-केट्टा और नौ वर्षीय विल्फ्रेड मड़की शामिल हैं। घटना रविवार शाम की बतायी जाती है। जानकारी के अनुसार रविवार की शाम को आशीष केरकेट्टा और विल्फ्रेड मड़की नहाने के लिए गांव के ही एक तालाब गये थे। देर शाम तक जब दोनों बच्चे घर नहीं लौटे, तो परविार वालों ने उनकी खोजबीन शुरू की। उसी दौरान तालाब में आशीष का शव तैरता दिखा। बाद

में गांव वालों की मदद से दोनों शवों को तालाब से निकाला गया। घटना की जानकारी मिलने पर रनिया के थाना प्रभारी विकास कुमार जायसवाल और अन्य पुलिस कर्मी बघिया आरसी टोली पहुंचे और दोनों शवों को थाना लेकर आ गये। पुलिस ने सोमवार को सदर अस्पताल में दोनों शवों का पोस्टमार्टम कराकर स्वजनों को सौंप दिया। दो बच्चों की मौत से पूरा गांव शोक में डूबा है।

सोनाहातू के तेलवाडीह गांव में मकान गिरने से मलवे में दब कर नौ वर्षीय बच्चे की मौत

मृतक की फाइल फोटो और गिरा हुआ घर।

सोनाहातू (आजाद सिपाही)। प्रखंड के तेलवाडीह गांव में रविवार रात भारी बारिश से सुभाष प्रमाणिक का खपरैल का मकान धवस्त हो गया। मकान गिरने के वक्त परिवार के 6 सदस्य कमरे में सोये थे। अचानक से भरभरा कर खपरैल का ऊपरी हिस्सा और दीवाल गिर गया। जो लोग संभल पाये किसी तरह सुरक्षित निकल गये, लेकिन सुभाष प्रमाणिक के पुत्र 9 वर्षीय शिवा प्रमाणिक मलवे में पूरी तरह दब गया। मलवे से तीन लोगों को मामूली चोट भी लगी है।मलवे को हटाने में समय लगा। आसपड़ोस के लोगों के मदद से शिवा को एंबुलेंस से सिंगपुर अस्पताल भेजवाया गया लेकिन चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। घटना के सूचना मिलते ही ग्राम प्रधान भूतनाथ सिंह मुंडा, छुटू सिंह मुंडा, सुभाष महतो दलेल चंद्र महतो, धीरेश प्रमाणिक, रसोराज प्रमाणिक एवं ग्रामीण मौजूद थे। सुभाष प्रमाणिक खेतीबाड़ी से अपना परिवार का भरण पोषण करता है। बेटे के आकस्मिक मौत से मां का रो कर बुला हाल है। घटना की सूचना पर सोमवार दिन में बीडीओ खगेश कुमार ओर अंचल की टीम गांव पहुंची।बीडीओ ने पीड़ित परिवार को तत्काल आवास योजना देने की घोषणा किया।

या अली, या हुसैन के नारों से गूंजा चान्हो, शांति और सौहार्द के साथ निकला मुहर्रम जुलूस

मुहर्रम पर्व सत्य की विजय और असत्य के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक : राधाकृष्ण

अन्याय के विरुद्ध खड़ा होने की प्रेरणा देता रहेगा इमाम हुसैन : शफीक आलम

सत्य के लिए बलिदान इमाम-ए-हुसैन की सीख है: शिल्पी नेहा तिर्की

जुलूस कार्यक्रम में शामिल राज्य के वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर, मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की एवं अन्य गणमान्य लोग।

आजाद सिपाही टीम

चान्हो। त्याग और बलिदान के प्रतीक मुहर्रम का पर्व चान्हो में शांति, श्रद्धा और भाईचारे के साथ मनाया गया। या अली, या हुसैन, और शहीदाने कर्बला जिंदाबाद जैसे नारों से पूरा चान्हो गूंज उठा। परंपरागत हथियारों और झांकियों के साथ निकले अखाड़ों के जुलूस ने करबला की याद को जीवंत कर दिया। चान्हो के बाजार ताड़ के समीप सभी अखाड़े एकत्रित हुए। जहां एक ओर सेंट्रल मुहर्रम कमेटी के अध्यक्ष तारिक अनवर, कोसा अध्यक्ष मोहम्मद ग्यास सहित पदाधिकारियों ने सभी का स्वागत किया। इस मौके पर राज्य के वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर भी मौजूद रहें। उन्होंने कहा कि मुहर्रम सत्य की विजय और असत्य के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक है। हमें जीवन में सदैव सच्चाई के मार्ग पर चलना चाहिए। वहीं, मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा यह मुहर्रम सिर्फ रस्म अदायगी नहीं, बल्कि न्याय, बलिदान और इंसानियत का जीवंत संदेश लेकर आया, जो पीढ़ियों तक लोगों को अन्याय के विरुद्ध खड़ा होने की प्रेरणा देता रहेगा। दूसरी ओर, मंच से सेंट्रल मोहर्रम एक्सन कमेटी के अध्यक्ष सफीक अंसारी ने कहा कि रहती दुनिया तक इमाम ए हुसैन का नाम और उनके उसूल कायम रहेंगे। उन्होंने अपने खून से इस्लाम को सींचा। हह बलिदान हमें हर दौर में अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की प्रेरणा देता है। मांडर एवं चान्हो के टांगर, मसमनो, मेलानी, खूंटी टोला, सरई टोली, पंडरी कूडु सहित दर्जनों अखाड़े शामिल हुए। ताज़ियादारी, शेर-ओ-मर्सिया, करतब और करबला की झांकी ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। जगह-जगह करतबों का प्रदर्शन हुआ, वहीं झांकियों ने करबला की त्रासदी को दृश्य रूप दिया। वहीं, प्रशासनिक दृष्टिकोण से भी यह आयोजन सफल रहा। चप्पे-चप्पे पर पुलिस बल तैनात रहे। थाना प्रभारी लगातार निगरानी और पेट्रोलिंग में जुटे रहे। पूरे मेला को रैफ के जवान ने संभाल रखा था। पुलिस ड्रोन कैमरे से भी स्थिति पर नजर रखे हुए थी।

टेलीफोन सेवा को फिर से जन-जन का संचार माध्यम बनाने का किया जायेगा प्रयास: जैलेंद्र

टीएसी के नवमनोनीत सदस्यों का हुआ नागरिक अभिनंदन

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप वर्मा के अनुमोदन पर नवनियुक्त टेलीफोन एडवाइजरी कमेटी (टीएसी) रांची मंडल के सदस्यों को सोमवार को सम्मानित करते हुए नागरिक अभिनंदन किया। कार्यक्रम का आयोजन सामाजिक संगठन जसपुरिया सेवा केन्द्र की ओर से गेतलसूद डैम के किनारे किया गया। जिसकी अध्यक्षता अनगड़ा सेवा प्रमुख जगेश्वर महतो एवं संचालन ओरमांझी सेवा प्रमुख शंकर महतो और दिलीप मिर्धा ने किया। इस दौरान नवमनोनीत सदस्यों जैलेंद्र कुमार, राजन साहू, गोपाल चौधरी को अंगवस्त्र एवं अमरूद का पौधा देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जैलेन्द्र कुमार ने बताया कि डॉ प्रदीप वर्मा ने हम सभी पर जो विश्वास किया उसपर खरा उतरने का प्रयास करेंगे। टेलीफोन सेवा को फिर से जन-जन का संचार माध्यम बनाने का प्रयास किया जायेगा। टेलीफोन सेवा एवं बीएसएनएल का ब्राडबैंड सेवा आम जनता की संचार सेवा बन गई है। कार्यक्रम में ओरमांझी, अनगड़ा, नामकुम, सिल्ली, राहे, सोनाहातू, ईचागढ़, रातू, बुढ़मू, नगड़ी आदि स्थानों से जसपुरिया सेवा केन्द्र के कार्यकर्ता पहुंचे। जैलेन्द्र कुमार ने बताया कि जसपुरिया सेवा केन्द्र के माध्यम से लगातार जरूरतमंदों की सेवा की जा रही है। इस मौके पर भाजपा नेता मुकेश मुक्ता, हरिश गंझू, सुखराम बेदिया, वीणा देवी, जवाहर महतो, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी रामसाय मुंडा, पंचम भोगता, सोहराय बेदिया, रामकुमार दुबे, राजेश सिंह, गणेश किशोर महतो, शिवचरण महतो, रामवृक्ष महतो, बालक महतो, संजय नायक, बुधराम बेदिया, बिगेश्वर महतो, कामेश्वर महतो, बिनोद चौधरी, रामकिशोर बेदिया, शिकारी महतो, बिनोद सिंह आदि उपस्थित थे।

मलिकाना हक नहीं मिलने से नाराजगी ग्रामीणों ने की रांची डीसी से मुलाकात

नामकुम (आजाद सिपाही)। प्रखंड अंतर्गत लालखटंगा पंचायत के ग्रामीणों ने मुखिया पुष्पा तिर्की के नेतृत्व में सोमवार को रांची डीसी मंजूनाथ भजंत्री से मुलाकात की। ग्रामीणों ने अपनी जमीन के मालिकाना हक के लिए डीसी से गुहार लगाई। डीसी को बताया कि लालखटंगा पंचायत के भुसूर और सैवयबगान गांव एचइसी विस्थापित गांव है। बताया कि साल 1963 में सैवयबगान गांव को एचइसी की ओर से विस्थापित किया गया था। जिसका आज तक ग्रामीणों को मालिकाना हक नहीं मिला है। वहीं, पूर्व मुखिया रितेश उरांव ने बताया कि साल 1962-63 में एचइसी द्वारा ग्रामीणों की भूमि का अधिग्रहण करने के बाद एचइसी की ओर से प्रत्येक विस्थापितों को 20 डिसमिल भूमि गढ़खटंगा मुआवजा के स्वरुप दिया था। पर विस्थापित के समय से आज तक सभी विस्थापितों को उनकी भूमि का मालिकाना हक के रुप में किसी भी तरह का कोई कागजात निर्गत नहीं किया गया। जिस कारण ग्रामीणों के बच्चों का जाति, आवासीय प्रमाण पत्र नहीं बन पा रहा है। उन्होंने बताया कि आजादी के 75 साल बीत गए, पर अभी तक यहां सड़क का निर्माण भी नहीं किया गया। उन्होंने डीसी से इस मामले में उनकी जमीन का मालिकाना हक दिलाने में मदद करने का अनुरोध किया। इस पर डीसी ने ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि वह इस मामले की जांच करवाएंगे और जल्द से जल्द इस समस्या का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे। उन्होंने ग्रामीणों से धैर्य रखने और कानूनी प्रक्रिया का पालन करने की बात कही। इस मौके पर पूर्व मखिया रितेश उरांव, वार्ड सदस्य सुनिता टोप्पो, बिरसी कच्छप, सलगी कच्छप, दुलारी एक्का, मुन्ना टोप्पो आदि उपस्थित थे।

कांके अंचल के कर्मचारी के खाते से साइबर ठगों ने उड़ाये 90 हजार 90 रुपये

कांके (आजाद सिपाही)। अंचल में पदस्थापित कर्मचारी देवाशीष दूबे के खाते से सोमवार की दोपहर साइबर ठगों ने 90 हजार 90 रुपए की ठगी कर ली। इस संबंध में देवाशीष दुबे ने साइबर अपराध थाना रांची में लिखित शिकायत दर्ज कराई है। बताया कि सोमवार की सुबह 11.42 बजे एसबीआइ के कस्टमर सर्विस का फोन नंबर गूगल पर सर्च किया तो मुझे मोबाइल संख्या 96417 15055 मिला। जिस पर मैंने अपने द्वारा लिए गए पर्सनल लोन को बंद करने के बारे में पता किया। फोन कर बात तो व्हाट्सएप पर कस्टमर सपोर्ट एप्लीकेशन भेजा गया। इस एप्लीकेशन को मुझे डाउनलोड करने को कहा गया। मैंने डाउनलोड किया। मुझे बताया गया कि इस एप्लीकेशन में लोन बंद करने का प्रोसेस किया जाएगा। पर तुरंत इस एप्लीकेशन के माध्यम से मेरा एसबीआइ के खाता संख्या 200786 08577 से फोन पे के माध्यम से कुल 90,090 रुपए काट लिये गये। इसके एक घंटे बाद मैंने 1930 साइबर अपराध में फोन कर शिकायत दर्ज किया। बताया कि साइबर ठगों ने उसके खाते में सिर्फ 400 रुपया ही छोड़ा है। इससे पहले भी साल 2018 में देवाशीष दुबे से साइबर ठगों ने 55000 रुपए की ठगी कर ली थी। वह रुपया भी आज तक देवाशी दुबे को वापस नहीं मिला है।

रेलवे के खिलाफ किसानों ने किया प्रदर्शन

पिस्कानगड़ी (आजाद सिपाही)। रांची-लोहरदगा रेललाइन महतो टोली नगड़ी के पोल संख्या 434-5.6 के समीप रेल प्रशासन की ओर से रेललाइन के दोनों ओर पोल गाढ़ने का क्षेत्र के किसानों ने विरोध करते हुए सोमवार को प्रदर्शन किया। उनका कहना है कि नगड़ी प्रखंड किसान बहुत क्षेत्र है। पिस्का रेलवे स्टेशन के ठीक दो किलोमीटर दूर स्थित किसान बहुल नगरी नारो के हजारों किसानों के हजारों एकड़ खेत हैं, जिससे जिविका चलती है। लेकिन रेलवे विभाग ने मार्ग पर पोल गाड़कर अवरुद्ध कर दिया है। जिससे उन्हें काफी परेशानी हो रही। रेलवे द्वारा पिछले दिनों रास्ता को पिलर गाड़ कर रोक देने से नारो, देवरी, साहेर, चिपरा, बोबरो, भागलपुर, तुसमू, उपरदाहा सहित कई गांवों के लोग उपस्थित होकर इसका विरोध किया। कहा कि उक्त स्थन पर वर्तमान समय में अंडरपास नहीं बना तो क्षेत्र के हजारो एकड़ में लगी फसल बर्बाद हो जाएगी। आने वाले दिन में उक्त हजारो एकड़ भूमि आवागमन के अभाव में बंजर बन जाएगी और किसान भूखमरी की समस्या से जूझने लगेंगें। युवा किसान राजेश महतो ने कहा कि रेलवे विभाग हम किसानों के अधिकार को छीनना चाहती है। पर हम ऐसा नहीं होने देंगे। वहीं, रघुनंदन महतो ने कहा कि वर्षों से हमारे पूर्वजों द्वारा गांव के दूसरे छोर में हजारों एकड़ जमीन पर खेतीबारी की जाती रही है। पर अब हमें यहां से बेदखल करने का प्रयास हो रहा है। मौके पर नगडी मुखिया जय मंगल उरांव, प्रभात महतो, सुमन महतो, अश्विनी महतो आदि मौजूद रहे।

कार्य करने के दौरान अचानक आ गया करंट, खंभे पर ही लाइनमैन की मौत

पहुंचे सांसद आदित्य साहू, राम कुमार पाहन सहित कई प्रतिनिधि

चाय बगान के पीएसएस को हिरासत में लेकर पुलिस ने शुरू की पूछताछ

आजाद सिपाही संवाददाता

ओरमांझी। थाना क्षेत्र में सोमवार की सुबह 11 हजार वोल्ट के करंट की चपेट में आने से लाइन मैन की बिजली के खंभे पर ही मौत हो गयी। उसकी पहचान उमेश कुशवाहा के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार लाइन मैन उमेश कुशवाहा आनंदी जगाती मंदिर के पीछे स्थित उदय मिष्ठान के बने डेयरी फार्म के पीछे 11 हजार वोल्ट के पोल पर शॉर्ट डाउन लेकर मरम्मति करने के लिए खंभे पर चढ़ा था। इसी बीच करंट आ गया, जिसकी चपेट में आने से उमेश की बिजली के खंभे पर ही मौत हो गयी। जिस समय दुर्घटना हुई उमेश के साथ एक अन्य युवक भी था। उसी ने मृतक के परिजनों को मौत की खबर दी। उधर, उमेश के मौत की खबर मिलते ही ग्रामीण और परिजन सबसे पहले ब्लॉक चौक स्थित पॉवर सब स्टेशन पहुंच गये और वहां जमकर हंगामा किया। ब्लॉक चौक सब स्टेशन से लाइन की जानकारी चाय बागान सब स्टेशन देने पर लोग चाय बागान सब स्टेशन पहुंच गये और मौत के कारण जानने की कोशिश करने लगे। क परिजनों ने विभागीय अधिकारियों को बुलाने, मुआवजे की मांग और जान बुझ कर हत्या करा देने का आरोप लगाते हुए मामला दर्ज कर कार्रवाई की मांग की। उधर, हादसे और हंगामे की सूचना पाकर राज्यसभा सांसद प्रो आदित्य प्रसाद साहू, पूर्व विधायक राम कुमार पाहन, बीडीओ कामेश्वर बेदिया, मुखिया दीपक बड़ाइक, पूर्व उप प्रमुख जय गोविंद साहू, शशि मेहता, अमर नाथ चौधरी, मानकी राजेंद्र शाही, रणधीर चौधरी, राजेश गुप्ता आदि भी घटनास्थल पर पहुंच गये और पूरी स्थिति की जानकारीली। इस दौरान परिजन विभाग से मुआवजे के तौर पर एक करोड़ रुपये, मृतक की पत्नी को सरकारी नौकरी और आजीवन पेंशन की मांग पर अड़े रहे। घटना के तीन घंटे के बाद घटना स्थल पर पहुंचे विभाग के अधीक्षण अभियंता ने राज्यसभा सांसद द्वारा परिजनों की मांग पर पहल करते हुए पांच लाख रुपये मुआवजे की राशि, जिसमें 25 हजार तत्काल और शेष राशि 15 दिनों के अंदर देने के साथ ही मृतक उमेश की पत्नी को ब्लॉक चौक पीएसएस में नौकरी देने की स्वीकृति दी। जिसके बाद परिजनों ने मृतक के शरीर को पोल से उतार कर पोस्टमार्टम कराने की इजाजत दी। उधर, विभागीय लापरवाही के तहत परिजनों की ओर से हत्या की प्राथमिकी दर्ज कर जांच कराने की मांग की जा रही है। वहीं, ओरमांझी पुलिस ने चाय बागान के ऑपरेटर सरना टोली निवासी सुरेश कुमार महतो को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। समाचार लिखे जाने तक बिजली के खंभे में करंट जाने संबंधि स्पष्ट जानकारी नहीं मिल सकी है।

250 पौधों का किया गया रोपण, वितरण

सिकिदीरी (आजाद सिपाही)। जनकल्याण समर्पण संस्थान ने सिकिदिरी क्षेत्र के हेसातू पंचायत में 250 फलदार पौधों का रोपण एवं वितरण किया। जिसकी अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष सुजीत कुमार ने किया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड भाजपा के नेता देवराज सिंह शामिल हुए। उन्होनें पौधारोपण एवं वितरण भी किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि संस्थान की ओर से पर्यावरण संरक्षण के लिए बहुत अच्छा कार्य किया जा रहा है। मैं संस्थान के अन्य कार्यक्रमों में भी शामिल होता रहा हूं। संस्थान के इस तरह के कार्यक्रम से बहुत ही सुखद अनुभव होता है। वहीं संस्थान के अध्यक्ष सुजीत कुमार ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए हमारा संस्थान कृतसंकल्पित हैं और इस तरह का प्रयास निरंतर जारी रहेगा। इस मौके पर संस्थान के नवेंदु उपाध्याय, सत्यपाल राउत, सचिव राजकुमार, विजय सिंह, अजीत कुमार, दीपक राम, रांची जिलाध्यक्ष कमलेश पाहन, राजू पाहन, जलेश्वर बेदिया आदि थे।

रातू में निकला मुहर्रम का जुलूस, मातम मनाते हुए याद किये गये हजरत हुसैन

रातू (आजाद सिपाही)। प्रखंड में सोमवार को मुहर्रम का जुलूस आपसी भाईचारगी एवं शांति पूर्ण तरीके से संपन्न हुआ। सेंट्रल मुहर्रम कमेटी की अगुवाई में मुहर्रम का जुलूस सिमलिया, तिगरा, भोंडा, अगड्डू, बिजुलिया एवं कोटा से निकाला गया। इस दिन दोपहर 12 बजे जुलूस महादेव टंगरा पहुंचा, जहां पारंपरिक तरीके से अस्त्र- शस्त्र चालन का करतब दिखाया गया। इसके बाद फुटकलटोली, रातू चट्टी, बड़काटोली, पीर्रा, काठीटांड आदि जगहों से मुहर्रम का जुलूस निकाला गया। शाम को विभिन्न अखाड़ेधारी काठीटांड पहुंचे जहां मुस्लिम धर्मावलंबियों के अलावा सभी समुदाय के लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कर भाईचारे एवं आपसी सौहार्द का संदेश दिया। सेंट्रल मुहर्रम कमेटी की ओर से काठीटांड चौक में अखाड़ेधारियो का मंच बनाकर स्वागत किया गया। जुलूस में राज्य के वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर, कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की, पूर्व पर्यटन एवं रांची के पूर्व सांसद सुबोधकांत सहाय, कांग्रेस नेता एवं जेएससीए अध्यक्ष अजयनाथ शाहदेव, मुहर्रम कमेटी के संस्थापक पटेल बाबा, समाजसेवी अरशद अयूब, जेएलकेएम नेता दिवेंद्र महतो, छात्र संघ के अध्यक्ष एस अली, रातू प्रखंड अंजुमन कमेटी के सदर अताउल्लाह अंसारी, झामुमो नेता शमीम मंसूरी, सिन्धबाज खान, मुखिया सुषमा तिर्की, पृथ्वी नाथ शाहदेव, अतुल राज, समाजसेवी रवि कुमार, सरवर खान, आकलिमा खातून, उप प्रमुख रियाजुल अंसारी, झामुमो प्रखंड अध्यक्ष बेलाल अंसारी, असलम अंसारी, जाबीर अंसारी, महफूज आलम, कमल खलखो, रजब अली, हाजी सरीफ, इमरान खान, शमीम मंसूरी, हाजी खलिल अंसारी, मुखिया कमल खलखो, मकसूदन तिग्गा, अजमूल हक आदि मौजूद थे। वहीं, जुलूस को लेकर भारी संख्या में पुलिस बल की तैनाती की गई थी। सुरक्षा की कमान डीएसपी अरविंद कुमार सिंह एवं थानेदार रामनारायण सिंह संभाले हुए थे। सीओ रवि कुमार विभिन्न क्षेत्रों में घूम कर स्थिति का जायजा लेते रहे। रात 8 बजे तक अस्त्र शस्त्र का प्रतियोगिता का आयोजन चलता रहा। मंच का उद्घाटन अजयनाथ शाहदेव और संचालन मियां जान अंसारी ने किया।

मुस्कुराहट खोलती है सफलता के द्वार : मुकेश चौहान

बेड़ो (आजाद सिपाही)। विनय बगीचा स्थित डीएवी विवेकानंद पब्लिक स्कूल परिसर में सोमवार को रांची के लाइफ केयर हॉस्पिटल एवं खुशी क्लास के तत्वावधान में खुशी क्लास का आयोजन किया गया। इस दौरान पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें बच्चों को खुशी और सकारात्मकता का महत्वपूर्ण संदेश दिया गया। साथ ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक भी किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए सीओ प्रताप मिंज ने बच्चों को तनाव मुक्त रह कर खुशी-खुशी अपने लक्ष्य प्राप्त करने का तरीका बताया। वहीं बीडीओ राहुल उरांव ने बच्चों को लक्ष्य निर्धारित कर उसके अनुरूप तैयारी करने पर जोर दिया। उदाहरण देते हुए कहा कि नदी के किनारे बैठे रहने से नदी पार नहीं होती, उसके लिए नदी में उतरना पड़ता है। वहीं, खुशी क्लास के संचालक मुकेश सिंह चौहान ने बच्चों को जीवन में खुश रहने के मंत्र दिए। उन्होंने सिखाया कि किसी भी विपरीत परिस्थिति में धैर्य बनाए रखकर और स्वयं को संभालते हुए कैसे खुश रहा जा सकता है। प्रधानाध्यापक कैलाश कुमार ने सभी अतिथियों को अंग वस्त्र और पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया। कहा कि इस आयोजन से बच्चों में सर्वांगीण विकास और पर्यावरण चेतना को बढ़ावा देने की बेहतर सीख लिया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका प्रिया सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन संदीप कुमार ने किया। मौके पर मुखिया सुशांति भगत, पंसस राखी भगत, उप मुखिया संतोष गोस्वामी, खुशी क्लास के संचालक मुकेश सिंह चौहान, प्रधानाध्यापक कैलाश कुमार, सचिव श्रवण कुमार आदि उपस्थित थे।

मंत्री ने किया बेड़ो पंचायत सचिवालय का निरीक्षण, साफ-सफाई पर दिया जोर

गांव का संपूर्ण विकास सरकार की पहली प्राथमिकता में है: मंत्री दीपिका पांडेय सिंह

सचिवालय की साफ सफाई और स्वच्छता की सराहना की, दिये कई निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

बेड़ो। राज्य के ग्रामीण विकास विभाग, ग्रामीण कार्य विभाग एवं पंचायती राज विभाग की मंत्री दीपिका पांडेय सिंह ने सोमवार को बेड़ो पंचायत सचिवालय का निरीक्षण किया। इस दौरान मंत्री ने पंचायत सचिव का कक्ष, विभिन्न पंजी एवं दस्तावेज, पंचायत भवन में संचालित प्रज्ञा केंद्र, बैंक से संबंधित कार्य, डिजिटल कार्य एवं पंचायत भवन का निरीक्षण किया। इस दौरान पंचायत सचिवालय की साफ सफाई एवं स्वच्छता की सराहना करते हुए इसे और बेहतर और सुदृढ़ बनाने को लेकर कई अहम निर्देश भी दिया। मंत्री दीपिका पांडेय सिंह ने कहा कि झारखंड सरकार की पहली प्राथमिकता गांव का संपूर्ण विकास करना है। कोई गांव संपर्क सड़क से वंचित न रहे, गांव के हर किसान को सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो। कहा कि पंचायत सचिवालय प्रशासन की रीढ़ है, जिसे प्रभावी रूप से संचालित करना आवश्यक है। उन्होंने पंचायत सचिवों को प्रतिदिन पंचायत सचिवालय में उपस्थित रहने एवं वहां सुचारू रूप से कार्य संचालन करने का निर्देश दिया। कहा कि प्राकृतिक सौंदर्य से सुसज्जित हमारा झारखंड प्रकृति का एक अनमोल तोहफा है जिसका एहसास हमें तब होता है जब हम दूसरे राज्यों का भ्रमण करते हैं। ग्रामीण स्वच्छता मुहिम के लिए जरूरी है कि हम प्लास्टिक का उपयोग न के बराबर करें और ग्राम वासियों को सफाई के साथ स्वच्छता के संबंध में जागरूक करने का प्रयास करें। तभी हम अपने स्वच्छता की मंजिल तक पहुंच सकते हैं। कहा कि मनरेगा का फंड बहुत जल्द पंचायत को हस्तांतरित किया जाएगा। उन्होंने नशा मुक्ति मुहिम से भी लोगों को जुड़ने और इससे कामयाब बनाने के लिए सार्थक पहल करने की बात कहीं। वहीं, उपप्रमुख मोददसिर हक ने प्रखंड की समस्याओं से अवगत कराते हुए पथ निर्माण, सिंचाई कूप, पंचायत में महिला पुरुष संबंधित चुनाव रोटेशन सहित कई विकास योजनाओं की संख्या में वृद्धि की मांग की। साथ ही करकारी पंचायत सचिवालय की जर्जर भवन को मरम्मती की मांग की। बेड़ो की मुखिया सुशांति भगत, मुखिया संघ के अध्यक्ष रमेश उरांव ने भी अपने विचार रखे। इस मौके पर बीडीओ राहुल उरांव, सीओ प्रताप मिंज, बीपीओ संजय तिर्की, प्रधान सहायक फारूक नदीम, मुखिया नीरज कुजूर, सरिता एक्का उपमुखिया संतोष दास, ग्राम प्रधान विनोद उरांव, पंसस राखी भगत, विजय भगत, कुमार रितेश, पुरुषोत्तम भाई पटेल, सदाम अंसारी, मुकेश कुमार आदि उपस्थित थे।

लोहरा समाज की समस्याओं को लेकर ग्रामसभा का आयोजन

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। लोहरा समाज की विभिन्न समस्याओं के समाधान को लेकर सोमवार को बीसा पंचायत में विशेष ग्रामसभा का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता ग्रामप्रधान उमेश बड़ाईक ने की। इसमें लोहरा जाति को अब तक पूर्णतः अनुसूचित जनजाति का दर्जा नहीं दिए जाने सहित अन्य मुद्दों पर चर्चा की गई। कहा गया कि सरकारी आदेशानुसार लोहरा जाति से संबंधित 11 बिंदुओं पर जांच के उपरांत उन्हें अनुसूचित जनजाति का जाति प्रमान पत्र दिए जाने कि अनुमति प्रदान कि गयी थी। बावजूद इसके कई प्रखंडों में उन्हें अनुसूचित जनजाति का प्रमाण पत्र निर्गत नहीं किया जाता है। कहा कि लोहरा समाज झारखण्ड में विगत कई वर्षो से आदिवासी का हक अधिकार पाने के लिए संघर्ष कर रही हैं। उनका रहन- सहन, रिति-रिवाज, भाषा, संस्कृति, परंपरा, पूजा पद्धति पूरी तरह आदिवासियों से मिलती जुलती है। लोहरा जनजाति कि उत्पति असुर जनजाति से हुई है। ये मध्यप्रदेश के सुरगुजा जिला से आए हैं। इनके गोत्र पेड़- पौधे, पशु-पक्षी एवं अन्य भौतिक पदार्थों के नाम पर रखा जाता है। शादी दूसरे गौत्र में हो सकता है। शादी-विवाह में वर-वधू का चयन समाज के लोगो द्वारा किया जाता है। इस समाज में छट्ठी, नामकरण, मरनसंस्कार एवं पूजा पाठ गांव के पहान द्वारा किया जाता है। शादी विवाह में कन्या मूल के रूप में कपड़े मूल के रूप में दिया जाता है। इनके समाज में विधवा विवाह या देवर- भाभी विवाह की भी प्रथा है। पर वर्तमान में यह नगण्य होती जा रही है। इनका पेशा मुख्य रूप से खेती-बारी, नौकरी, मजदूरी एवं लोहरागिरी है। समाज में आज भी छुआछूत कि भावना रखी जाती है। खतियान में लिपिकिय त्रुटि के कारण लोहार दर्ज हो गया है। जबकि वास्तव में लोहार ही लोहरा है। वहीं झारखण्ड में 32 जनजातियों की सूची में लोहरा जाति भी सूचिबद्ध है। इसके बावजूद उन्हें संवैधानिक अधिकार से वंचित कर दिया गया है। बैठक का संचालन अजय करमाली ने किया। मौके पर बेंती के ग्राम प्रधान कमला कान्त मुण्डा, मुखिया, उपमुखिया, पंसस, वार्ड सदस्य ईमा देवी, रजनी देवी, कमल क्लब के अध्यक्ष हर्षनाथ भोगता, विजय उराँव, अजय कुमार करमाली, रोहित बेदिया, गणेश भोगता, महावीर बेदिया, गंधिया करमाली, पुसुवा लोहरा आदि मौजूद रहे।

हिंडाल्को के सीएसआर विभाग ने वन महोत्सव पर फलदार पौधे लगाये

बिशनपुर (आजाद सिपाही)। मिनरल एंड मिनरल्स लिमिटेड (हिंडाल्को) की अमतीपानी-चिरोडीह बॉक्साइट माइंस के सीएसआर विभाग द्वारा अमतीपानी और चिरोडीह पंचायत के ग्रामीण के साथ मिलकर वन महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आम, अमरूद, जामुन और कटहल जैसे 500 से अधिक फलदार पौधों का वितरण एवं पौधारोपण किया गया।कार्यक्रम की शुरूआत वरीय खान प्रबंधक शंभु शरण वशिष्ठ ने आम और लीची के पौधे वितरित कर की। उन्होंने उपस्थित ग्रामीणों से आग्रह किया कि वे पौधों को अपने घरों और बगानों में लगाएं और उनका समुचित देखभाल करें। उन्होंने यह भी कहा कि पर्यावरण को संरक्षित और संतुलित बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। हर वर्ष 1 से 7 जुलाई के बीच हिंडाल्को के सभी माइंस क्षेत्रों में वन महोत्सव सप्ताह मनाया जाता है, जिसमें 2 से 3 हजार पौधों का रोपण किया जाता है। इस अवसर पर नागेश वर्मा, जीवन मोहंती, अशोक सिन्हा, अमित प्रधान, सीएसआर अधिकारी दीपक सिंह, निसार दास, सुमित पटेल और आसिफ अंसारी सहित कईग्रामीण उपस्थित थे।

अवैध खनन के विरुद्ध झानद शुरू करेगा अभियान : शंकर उरांव

गुमला (आजाद सिपाही)। झारखंड नवनिर्माण दल मजदूर यूनियन के जिला प्रभारी सह बॉक्साइट माइंस रैयत मजदूर समिति के नेता शंकर उरांव ने जिला खनन पदाधिकारी गुमला को ज्ञापन देकर बॉक्साइट का अवैध उत्खनन तथा बसिया में माइनिंग एक्ट का उल्लंघन कर चलाई जा रही मनोज जयसवाल के द्वारा सरिता स्टोन क्रेशर की जांच कर विधिसम्मत कार्रवाई की मांग की है। श्री उरांव ने ज्ञापन में कहा है कि बिशुनपुर प्रखंड के कुजाम, लुचुतपाठ इत्यादि स्थानों में लीज के बाहर बड़ी मात्रा में बॉक्साइट की अवैध उत्खनन की जा रही है जिससे लाखों रुपए सरकार को राजस्व की हानि हो रही है जिसको रोकने व कार्रवाई की मांग की है। वहीं बसिया प्रखंड के बसिया मौज में मनोज जयसवाल द्वारा सरिता स्टोन क्रेशर में सुरक्षा मानक का कोई प्रबंध नहीं होने, बगैर चालान के चिप्स इत्यादि सामग्री बेचने तथा कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन नहीं करने की जांच की मांग की है। उन्होंने यह भी कहा है कि सरिता स्टोन क्रेशर वन आश्रयणी क्षेत्र में आता है इसकी भी जांच की मांग उठाई है। श्री उरांव ने आगे कहा है कि एक सप्ताह के अंदर जांचोपरांत कार्रवाई नहीं होने की स्थिति में 14 जुलाई 2025 को जिला मुख्यालय गुमला में सांकेतिक धरना कार्यक्रम आयोजित कर उपायुक्त तथा मुख्य सचिव झारखंड सरकार को मामले से कार्रवाई के लिए अवगत कराने की बात कही है।

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, बसिया में अभिभावक गोष्ठी का आयोजन

गुमला (आजाद सिपाही)। एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, बसिया में धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के अंतर्गत सोमवार को एक अभिभावक गोष्ठी का आयोजन विद्यालय के प्रधानाध्यापक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य अभिभावकों को सरकार द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देना एवं उनके लाभ से जोड़ना था। इस दौरान उपस्थित अभिभावकों को आधार कार्ड, आयुष्मान कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र आदि महत्वपूर्ण दस्तावेजों की उपयोगिता के बारे में विस्तार से बताया गया। साथ ही इन दस्तावेजों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सरकारी योजनाओं के लाभ जैसे स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा, पेंशन, छात्रवृति, राशन आदि के बारे में भी जागरूक किया गया। गोष्ठी के दौरान उपस्थित पदाधिकारियों ने अभिभावकों से उनके बच्चों की शिक्षा के विषय में भी संवाद किया एवं विद्यालय में उनकी उपस्थिति, प्रगति एवं आवश्यक सहयोग पर विचार-विमर्श किया।

सांसद प्रतिनिधि ने धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान की प्रगति का जायजा

गुमला (आजाद सिपाही)। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान की प्रगति का जायजा लेने देखने के लिए सांसद प्रतिनिधि सह निगरानी सदस्य राजनील तिग्गा एवं युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव अभिनव सिद्धार्थ भगत रायडीह प्रखंड के सिकोई पंचायत पहुंचे। उन्होंने कैंप से लोगों को मिल रहे लाभ की जानकारी ली। प्रतिनिधियों ने विभाग के पदाधिकारियों की उपस्थिति की जानकारी ली। सांसद प्रतिनिधि ने कहा कि सरकार की योजना का लाभ योजना की अहर्ता पूरी करने वाले प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाना पदाधिकारी सुनिश्चित करें। वहां मौजूद लोगों से जनप्रतिनिधियों में यह भी पूछा जो लाभ विभाग द्वारा ग्रामीणों को दिए जा रहे हैं वे धरातल पर उतर भी रहे हैं या नहीं। उन्होंने पदाधिकारी से कहा कि योजना देने के साथ-साथ यह भी सुनिश्चित करें कि लाभुक योजनाओं का क्रियान्वयन सही ढंग से कर रहे हैं कि नहीं। निगरानी सदस्य सह प्रखंड अध्यक्ष स्माईल कुजूर, रूपेश कुमार सन्नी साथ में उपस्थित थे।

किराना दुकान से नगद सहित समान की चोरी

घाघरा (आजाद सिपाही)। घाघरा चांदनी चौक नेतरहाट रोड में स्थित मां लक्ष्मी स्टोर किराना दुकान मे अज्ञात चोरों ने नगद सहित समान की चोरी कर ली। घटना की सूचना पीड़ित दुकानदार को सुबह दुकान खोलने के बाद हुई। जब देखा कि अल्बेस्टर शीट चदरा हटा हुआ है और दुकान के समान बिखरे है इसके बाद इसकी सूचना घाघरा थाना को दी गयी। घटना की सूचना मिलने पर थाना प्रभारी पुनीत कुमार मिंज, एसआई विकास कुमार, उपेंद्र पाठक उक्त दुकान पहुंचे। इसके बाद घटना की जानकारी लिया। सारी घटनाक्रम सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गयी। दो अज्ञात चोरों द्वारा घटना को अंजाम दिया गया है। जो सीसीटीवी कैमरा में दिख रहा है। वही चोरों द्वारा बचने के ख्याल से दुकान में लगे एक सीसीटीवी कैमरा के तार को काट दिया गया है जबकि दूसरे को मोड दिया गया। वही दुकान में लगे एलइडी टीवी की भी चोरी कर लिया है। पीड़ित ने बताया कि दुकान के काउंटर में रखें खुदरा पैसे लगभग 10000 एवं 4 चांदी के सिक्के और दुकान में लगे लगभग 35000 के एलइडी टीवी की चोरी हुई है। वही पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर अज्ञात चोरों को पकड़ने के लिए कार्रवाई कर रही है।

व्यवसायी की हत्या के तीन आरोपी गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। शहर के सिसई रोड स्थित पुराना डाकघर के समीप विनोद जाजोदिया हत्याकांड के तीन अभियुक्त को पुलिस ने 24 घंटे के अंदर गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी गुमला के नेतृत्व में एक टीम बनाई गई। टीम में थाना प्रभारी महेन्द्र कुमार करमाली, पुलिस अवर निरीक्षक सुमित कुमार, सहायक अवर निरीक्षक सुनील कुमार और गुमला थाना के सशस्त्र बल शामिल थे। टीम ने सोमवार की सुबह 7:30 बजे डुमरटोली, सिसई रोड पहुंचकर छापेमारी की। पुलिस को देखकर दो लोग भागने लगे, जिन्हें पकड़ लिया गया। पकड़े गये आरोपियों की पहचान जुलियन मिज उर्फ जुली, डुमरटोली सिसई रोड और समीर टोप्पो डुमरटोली सिसई रोड के रूप में हुई। पूछताछ में दोनों ने हत्या की साजिश में अपनी संलिप्तता स्वीकार की। मुख्य आरोपी अंचल ब्यूम तिर्की उर्फ बीकु, लोयला नगर सिसई रोड ने बताया कि दो साल पहले उसके भाई पर मृतक विनोद अग्रवाल के घर चोरी का आरोप लगा था। इसके बाद से विनोद ताना मारता था। पिछले साल क्रिसमस के समय दोनों में झगड़ा हुआ था। तभी से विनोद को मारने की योजना बना ली थी। 6 जुलाई 2025 को दोपहर करीब 3 बजे जुली और समीर उसके घर आये। तीनों ने मिलकर शराब पी और हत्या की योजना बनायी। शाम 5 बजे तीनों घर से निकले। विनोद पास के राशन दुकान गया था। लौटते समय जुली और समीर ने उस पर नजर रखी। जैसे ही वह दुकान से सामान लेकर लौटा, बीकु ने लोहे की रॉड से उसके सिर पर वार कर दिया। विनोद गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त लोहे की रॉड, एक तलवार और एक अपाचे मोटरसाइकिल बरामद की है। तीनों को विधिवत गिरफ्तार कर लिया गया। बरामद सामान में एक काला बैग (जिस पर आइकोन लिखा था), एक रेनकोट, धारदार चाकू (जिसकी मुठ्ठी पर कपड़ा लिपटा था), एक टोपी (जिस पर न्यूयॉर्क लिखा था), एक नीले रंग की हथौड़ी, एक काला मोबाइल (जिस पर आरएस लिखा था), तीन बीता पांच अंगुल लंबी लोहे की रॉड, लाल कवर वाली तलवार और सफेद-काले रंग की अपाचे मोटरसाइकिल शामिल है। अंचल ब्यूम तिर्की उर्फ बीकु पर पहले से गुमला थाना में कई मामला दर्ज है। जुलियन मिज उर्फ जुली पर गुमला थाना में हत्या के तहत कई गंभीर धाराओं में मामले दर्ज हैं। सोमवार की शाम 5 बजे चंदाली स्थित एस पी कार्यालय कक्ष में प्रेस वार्ता के बाद तीनों आरोपियों को जेल भेज दिया गया।

शांति और सौहार्द के साथ मोहर्रम संपन्न

चैनपुर (आजाद सिपाही)। चैनपुर में हजरत इमाम हुसैन की शहादत की याद में मुस्लिम समुदाय द्वारा मुहर्रम का पर्व सोमवार को शांति, सौहार्द और भाईचारे के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रखंड मुख्यालय के रजा मस्जिद से आनंदपुर मोड़ तक या हुसैन या हुसैन के नारों, पारंपरिक हथियार, गाजे बाजे व मजहबी झंडे के साथ साथ तिरंगा झंडा के साथ जुलूस निकाली गयी। जुलूस में अलम का प्रदर्शन किया गया, जहां जंगी दस्तों ने विभिन्न प्रकार के करतब दिखाये। मुस्लिम युवकों ने प्रतीकात्मक हथियारों से युद्ध कला का प्रदर्शन किया, जो कर्बला के भीषण युद्ध का प्रतीक था। अंजुमन इस्लामिया चैनपुर के सदर शकील खान ने बताया कि युद्ध कला का प्रदर्शन कर्बला के उस भीषण युद्ध का प्रतीक है, जिसमें इमाम हुसैन ने अपने पूरे कुनबे के साथ शहादत दी थी। उन्होंने यह भी कहा कि मुहर्रम पर्व पर इमाम हुसैन की शहादत को याद किया जाता है और उनके दिखाए रास्ते पर चलने की नसीहत दी जाती है। जुलूस के दौरान लोगों ने इमाम हुसैन की याद में नारे लगाये। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए चैनपुर थाना के जवान सड़कों पर गश्त करते रहे। इस दौरान एसआइ दिनेश कुमार, विजय उरांव, एएसआइ नंदकिशोर कुमार, संतोष लुगुन सहित चैनपुर थाना के जवान मौजूद रहे।

एक घंटे की वाहन चेकिंग में 78 हजार की वसूली

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। उपायुक्त गुमला एवं पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर आज सोमवार को गुमला-घाघरा मुख्य पथ स्थित दुनदुरिया में मोटरसाइकिल वाहन चेकिंग अभियान एवं सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अभियान का नेतृत्व जिला परिवहन पदाधिकारी राकेश कुमार गोप एवं मोटरयान निरीक्षक प्रदीप कुमार तिर्की द्वारा किया गया। सड़क सुरक्षा टीम के सहयोग से कुल 40 मोटरसाइकिल चालकों को यातायात नियमों के अनुपालन एवं सुरक्षित वाहन संचालन से संबंधित आवश्यक जानकारी दी गयी। इस कार्यक्रम के तहत रोड सेफ्टी काउंसलिंग के माध्यम से हेलमेट एवं सीट बेल्ट के अनिवार्य उपयोग, वाहन के वैध कागजात रखने की अनिवार्यता, गति सीमा एवं ट्रैफिक सिग्नल के पालन जैसे विषयों पर विस्तार से समझाया गया। चालकों को बताया गया कि कैसे सड़क सुरक्षा नियमों का पालन कर स्वयं एवं अन्य यात्रियों के जीवन की रक्षा की जा सकती है। वाहन चेकिंग अभियान शाम 4 बजे से 5 बजे तक चलाया गया, जिसमें कागजातों की अनुपलब्धता एवं अन्य नियमों के उल्लंघन पर कुल 78,000 की दंड राशि वसूल की गयी। इस अवसर पर सड़क सुरक्षा प्रबंधक कुमार प्रभाष, सूचना प्रौद्योगिकी सहायक मंटू रवानी, रोड इंजीनियरिंग एनालिस्ट प्रणय कांशी, एवं डीटीओ कार्यालय के प्रिंस कुमार भी उपस्थित थे।

'मेरा घर संगम' कार्यक्रम में शामिल हुई मंत्री दीपिका पांडेय

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। ग्रामीण विकास विभाग सह पंचायती राज विभाग के मंत्री दीपिका पांडे सिंह सोमवार को घाघरा पहुंची। मंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के प्रशिक्षण विभाग द्वारा संचालित संगम साथियों के लिए मेरा घर संगम नामक कार्यक्रम में शामिल हुई। यह कार्यक्रम प्रदेश महिला कांग्रेस उपाध्यक्ष सह अखिल भारतीय आदिवासी कांग्रेस कमिटी के राष्ट्रीय समन्वयक बॉबी भगत के आवास में आयोजित की गयी थी। उक्त कार्यक्रम के पांचवें और आखिरी दिन संवाद कार्यक्रम में पूर्व नक्सली बाल्केश्वर उरांव उर्फ बड़ा विकास ने आकर संगम साथियों के साथ संवाद कर विचारों का आदान प्रदान किया। साथ ही सदस्यों ने मंत्री एवं बल्केश्वर उरांव उर्फ बड़ा विकास को गीता चिंतन नामक पुस्तक भेंट स्वरूप दिया। इधर मंत्री के आगमन की जानकारी मिलते ही लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। इसके बाद मंत्री दीपिका पांडे सिंह लोगों की समस्याओं से अवगत हुए। इटकिरी मोड़ से सेरेंगदाग तक एवं घाघरा जलका मोड़ से तुसगांव तक रोड निर्माण की बॉबी भगत ने मांग की। इस मौके पर कार्यक्रम की मेजबान आयोजक सह प्रदेश महिला कांग्रेस की उपाध्यक्ष अखिल भारतीय आदिवासी कांग्रेस की राष्ट्रीय पर्यवेक्षक बॉबी भगत, प्रखंड अध्यक्ष अरुण पांडेय, झरी उरांव, परमेश्वर साय, अजित किंडो, जितेंद्र कुमार, विजय साहु, सुमित उरांव एवं संयोजक संदीप कुमार, कल्याणकारी मानव विकास संस्थान के सचिव अनिरुद्ध चौबे, राजेश पंडित, योगेंद्र भगत सहित कई लोग मौजूद थे।

सिसई में लगातार हो रही बारिश से कच्चा मकान गिरने का सिलसिला जारी

सिसई (आजाद सिपाही)। रुक रुक कर हो रही मूसलाधार बारिश से प्रखंड क्षेत्र के कच्चे मकान गिरने का सिलसिला लगातार जारी है। गनीमत है कि अब तक कहीं से कोई जान माल के क्षति की खबर नहीं है। बीते रविवार की रात भदौली मंडा टांड़ के दो सगे भाइयों रमन साहनी और राजेश कुमार साहनी का मकान और पड़ोस में रह रहे शांति देवी पति विरेन्द्र लोहरा के घरों की दीवार भारी बारिश के कारण गिर गया। उक्त दोनों परिवारों में कुल 14 परिवार के सदस्य रहते थे। घर के पिछले हिस्से की दीवार गिरने से मिट्टी के खपरैल घर क्षतिग्रस्त हो गया। दीवार गिरने के दौरान उसी कमरे में बच्चे अपनी मां के साथ सो रहे थे, गनिमत रही की घर में रखे बक्से और अन्य सामानों के कारण छत पुरी तरह से नहीं गिरा, जिससे कमरे में सो रहे सदस्यों पर कोई आंच नहीं आयी। मुखिया ने पीड़ित परिवार से मिलकर सरकारी प्रावधान के अनुसार सहायता और मुआवजा तथा उक्त गरीब परिवार को प्रशासन से बात कर तत्काल राहत देने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था कर आश्रय दिलाने का आश्वासन दिया। वहीं पीड़ित राजेश कुमार ने बताया कि उनकी विधवा मां शांति देवी के नाम पर अबुआ आवास योजना का चयन हुआ था, किंतु लाभ मिलने से पूर्व ही मां का स्वर्गवास हो गया, जिस कारण आवास नहीं मिला अब बारिश में घर गिर जाने से हम दोनों भाईयों के पत्नी बच्चे और बहनों सहित कुल 14 सदस्यों का रहने के लिए कोई घर नही है। उन्होंने प्रशासन से एक अदद पक्का आवास और सहायता की गुहार लगायी है।

सुरक्षा का माहौल बनाये प्रशासन : रमेश कुमार चीनी

गुमला (आजाद सिपाही)। चैंबर के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष रमेश कुमार चीनी ने व्यवसायी विनोद जाजोदिया हत्याकांड पर निंदा प्रकट की है। कहा है कि अपराधियों का मनोबल बढ़ गया है। पुलिस सुरक्षा को देखते हुए गश्ती तेज करें और जनता के मन में विश्वास जगायें। साथ ही ऐसा माहौल बनाएं कि दुबारा इस प्रकार की घटना की पुनरावृति न हो। साथ ही व्यवसायी और जनता भय मुक्त माहौल में रह सकें।

सुरक्षा व्यवस्था को लेकर गुमला चैंबर ने एसपी से की मुलाकात

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। सोमवार को चैंबर ऑफ कॉमर्स का एक प्रतिनिधि मंडल चेंबर के वरीय उपाध्यक्ष अभिजीत जायसवाल की अध्यक्षता में गुमला के पुलिस अधीक्षक हारिश बिन जमां से उनके कार्यालय में मिले। ज्ञात रहे कि एक दिन पूर्व ही सिसई रोड स्थित गुमला के जाने-माने व्यवसाई विनोद जाजोदिया का उनके ही प्रतिष्ठा के सामने उनकी निर्मम हत्या कर दी गयी। जिससे व्यापारियों में एक आक्रोश भी था और लोग असहज महसूस कर रहे थे। इसी विषय को लेकर पुलिस अधीक्षक से चर्चा हुई। पुलिस अधीक्षक की तरफ से कहा गया कि यह दुर्घटना काफी दुर्भाग्यपूर्ण है। अचानक ऐसी घटना हो जाने से हम सब हतप्रभ हैं। फिर आगे यह जानकारी दी गयी की हत्यारा अपराधी पुलिस के गिरफ्त में है उसे पकड़ लिया गया है इसमें आगे भी करवाई जारी है। इसमें अगर और भी किसी की संलिप्ता पता चली तो उसे भी नहीं बक्शा जायेगा। शहर के व्यापारियों की सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास किया जायेगा। चैंबर अध्यक्ष राजेश सिंह इस वक्त गुमला से बाहर हैं लेकिन वह लगातार गुमला थाना प्रभारी से संपर्क बनाए हुए हैं। वे लगातार अपराधियों को गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं।

पुलिस अधीक्षक के तरफ से एक आह्वान किया गया कि गुमला में जितने भी धार्मिक स्थल मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा या चर्च हैं सभी में सीसीटीवी कैमरा लगाना अनिवार्य करें यह आपकी सुरक्षा के लिए ही है। इस आशय की जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी इम्तेयाज मिनी ने कहा कि एसपी से वार्ता के बाद व्यापारियों के बीच थोड़ी हिम्मत का संचार हुआ है। मौके पर चैंबर उपाध्यक्ष अभिजीत जायसवाल के साथ उपाध्यक्ष राजेश लोहानी, पूर्व अध्यक्ष पदम साहू, मोहम्मद सब्बू हिमांशु केसरी, दिनेश अग्रवाल, सहसचिव प्रणय साहू, पीआरओ प्रतीक अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

एक माह से फसिया पोढ़ा टोली गांव अंधेरे में, आक्रोशित ग्रामीणों ने बिजली विभाग घेरा

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। गुमला शहर से सटे फसिया पंचायत के पोढ़ा टोली गांव के ग्रामीण विगत एक माह से अंधेरे में रह रहे हैं। बिजली विभाग को आवेदन देने के बाद विभाग द्वारा कुछ दिन पूर्व ट्रांसफार्मर लगाया गया था लेकिन महज दो दिनों में ही ट्रांसफार्मर खराब हो गया। ग्रामीणों ने बिजली विभाग को दोबारा आवेदन दिया लेकिन विभाग की ओर से ट्रांसफार्मर लगाने को लेकर पहला नहीं की गई। इसके बाद फसिया पंचायत के मुखिया नरेश उरांव के नेतृत्व में ग्रामीण महिला व पुरुष सोमवार दिन के 11 बजे बिजली विभाग पहुंचे और विभाग का घेराव किया। ग्रामीणों ने बताया विभाग द्वारा ट्रांसफार्मर लगाने को लेकर सिर्फ आश्वासन दिया जाता है ग्रामीण अंधेरे में रह रहे हैं कई प्रकार की परेशानियां हो रही है। बिजली नहीं रहने से बच्चों की पढ़ाई लिखाई और अन्य कार्य प्रभावित हो रहा है वही बारिश के मौसम में सांप बिच्छू का भी भय बना रहता है। ग्रामीणों ने कहा अगर विभाग द्वारा आज ट्रांसफार्मर नहीं लगाया गया तो ग्रामीण विभाग में तालाबंदी करेंगे। इसके बाद विभाग के पदाधिकारी प्रभाकर मिश्रा ग्रामीणों से बात करने सामने आए। और ट्रांसफार्मर आज ही लगाए जाने की बात कही। उन्होंने बताया कि मरसरिया घाघरा के पास एक ट्रांसफार्मर रखा है उसे लाकर पोढ़ा टोली गांव में लगाया जायेगा। इसको लेकर उन्होंने विभाग के अन्य कर्मियों से बात भी की लेकिन ग्रामीण लिखित मांगने लगे। साथ ही ट्रांसफार्मर के साथ गांव जाने की बात कही। वहीं विभाग का घेराव कार्यक्रम में जमे रहे।

कार्यालय समेकित जनजाति विकास अभिकरण, लोहरदगा
वित्तीय वर्ष 2024–25 में पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृति भुगतान से संबंधित

आवश्यक सूचना

पोस्ट–मैट्रिक छात्रवृति हेतु वित्तीय वर्ष 2024–25 के लिए अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, झारखण्ड सरकार के ekalyan (ekalyan.cgg.gov.in) पोर्टल पर लोहरदगा जिला अन्तर्गत जिन छात्र–छात्राओं का ऑनलाईन आवेदन वर्ष 2024–25 का **Status "Pending at College"** अथवा **"Pending at DNO Officer"** है, आवेदन पेंडिंग होने पर पेंडिंग होने का कारण दिया गया है। अपने Login id एवं Password का उपयोग करते हुए संबंधित कागजात की मूल प्रति को पोर्टल पर दिनांक 15 जुलाई 2025 तक निश्चित रूप से अपलोड/सुधार करते हुए अपने आधार न0 को बैंक खाता से लिंक/सक्रिय (Active) करा लें। चूंकि पोस्ट–मैट्रिक छात्रवृति का भुगतान **PFMS** के माध्यम से **Aadhar Enabled DBT** द्वारा ही करने का विभागीय निदेश प्राप्त है।

उक्त तिथि के पश्चात् ई–कल्याण पोर्टल को विभाग द्वारा बंद कर दिया जायेगा, जिस कारण से छात्रवृति राशि का भुगतान करना सम्भव नहीं होगा, जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेवारी आवेदक की होगी। **INO** एवं **DNO Level** से Verification की अंतिम तिथि 15 जुलाई 2025 तक निर्धारित है, इसलिए छात्र/छात्राओं को सूचित किया जाता है कि उक्त तिथि के पूर्व अपना Login id एवं Password का उपयोग करते हुए संबंधित कागजात की मूल प्रति को पोर्टल पर अपलोड/सुधार आवश्यक रूप से कर लिया जाय। आधार लिंक एवं NPCI में Mapping की जानकारी आधार की वेबसाईट से (https://myaadhaar.uidai.gov.in→ Login पर क्लिक करना होगा। जिसके बाद आधार न0 एवं Captcha Enter करके Send OTP करना है। Send OTP करने के पश्चात आपके आधार से रजिस्टर्ड मोबाईल न0 पर 6 अंको का OTP प्राप्त होगा, OTP Enter कर Login करना है। Login करने के बाद Bank Seeding Status पर क्लिक करके) प्राप्त किया जा सकता है। अथवा ई–कल्याण पोर्टल में (Services & Schedule→ Student Services & Schedule (Post-Matric) → Check status of your AADHAAR linked bank account number Click Here) लिंक के माध्यम से ऑनलाईन प्राप्त की जा सकती है।

जिला कल्याण पदाधिकारी,
लोहरदगा

PR 356696 Lohardaga (25-26)_D

जिला विधिक सेवा प्राधिकार, कोडरमा
व्यवहार न्यायालय, कोडरमा

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय एवं माननीय राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली के निर्देशानुसार, झारखण्ड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के मार्गदर्शन मे जिला विधिक सेवा प्राधिकार, कोडरमा के तत्वावधान मे दिनांक 01 जुलाई से लेकर 30 सितम्बर 2025 तक 90 दिवसीय विशेश मध्यस्थता अभियान (मेडिएशन फॉर दि नेशन)का आयोजन किया जा रहा है, जिसमे निम्नलिखित विभागो के वादो का निपटारा आपसी सुलह –समझौता के आधार पर किया जाएगा।

वैवाहिक विवाद से संबंधित वाद/मामले	घरेलू हिंसा से संबंधित मामले
मोटरयान दुर्घटना दावा से संबंधित मामले	एन0 आई0 एक्ट की धारा 138 के मामले
व्यवसायिक विवादो से संबंधित मामले	सेवा से संबंधित मामले
सुलहनीय आपराधिक मामले	उपभोक्ता विवाद से संबंधित मामले
ऋण विवाद से संबंधित मामले	विभाजन विवाद से संबंधित मामले
बेदखली विवाद से संबंधित मामले	भूमि अधिग्रहण विवाद से संबंधित मामले
अन्य उपयुक्त सिविल वाद	

अतः ऐसे कोई भी व्यक्ति जिनका उपरोक्त किसी भी तरह का वाद/ मामले लंबित है वे इस अभियान के तहत स्वयं प्रत्यक्ष रूप से अथवा न्यायालय के माध्यम से जिला विधिक सेवा प्राधिकार, कोडरमा मे उपस्थित होकर इस अभियान का लाभ उठा सकते है।

अनुदीप सिंह
पुलिस अधीक्षक–सह सदस्य
जिला विधिक सेवा प्राधिकार, कोडरमा

ऋतु राज
उपायुक्त –सह–उपाध्यक्ष
जिला विधिक सेवा प्राधिकार, कोडरमा

बाल कृष्ण तिवारी
प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश–सह अध्यक्ष
जिला विधिक सेवा प्राधिकार, कोडरमा

नोटः इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की विस्तृत जानकारी के लिए आप किसी भी कार्य दिवस पर 10:30 बजे पूर्वाहन से 05:00 बजे अपराहन तक कोडरमा, सिविल कोर्ट में अवस्थित जिला न्याय सदन में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के कार्यालय में सचिव से मोबाईल के माध्यम से संपर्क कर सकते हैं।

मो0 6200937857

निवेदकः
गौतम कुमार
सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकार, कोडरमा

PR 356710 Law (25-26)_D

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 08 जुलाई, 2025
www.azadsipahi.in

पीडीएस चावल की कालाबाजारी से जुड़े गिरोह के सदस्य को ग्रामीणों ने 30 घंटे में दो बार पकड़ा, पुलिस ने बिना कोई ठोस कार्रवाई के छोड़ा

पुलिस की भूमिका से ग्रामीण नाराज, ठोस कार्रवाई नहीं करने पर दी आंदोलन की चेतावनी

पीडीएस चावल की कालाबाजारी करने वालों पर की जायेगी कार्रवाई : बीडीओ

आजाद सिपाही संवाददाता

महुदा। क्षेत्र में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के चावल की कालाबाजारी को लेकर ग्रामीणों का आक्रोश फूट पड़ा है। ग्रामीणों ने ऑटो को पीडीएस चावल की तस्करी करते रंगेहाथ पकड़ा और उसे चालक सहित महुदा पुलिस को सौंप दिया। लेकिन पुलिस की कार्रवाई ने मामले को और संदिग्ध बना दिया। स्थानीय लोगों का आरोप है कि पुलिस ने न तो मामले की गंभीरता को समझा, न ही तस्कर के खिलाफ कोई ठोस कदम उठाया। देर शाम आरोपी ऑटो चालक छोटू कुमार को वाहन सहित बिना किसी कार्रवाई के छोड़ दिया गया। ग्रामीणों का कहना है कि यह पहली घटना नहीं। लंबे समय से गरीबों के अधिकारों को ऐसे ही हड़पा जा रहा है। सबसे चौंकाने वाली बात यह रही कि रविवार को वही ऑटो चालक फिर से कुलटांड गांव पहुंच गया और पीडीएस चावल लोड करने लगा। इस बार भी ग्रामीणों ने विरोध दर्ज कराया और पुलिस को मौके पर मामले से अवगत कराया। लेकिन हैरानी की बात यह रही कि पुलिस घटनास्थल पर आने के बावजूद न तो कोई पूछताछ की, न ही कोई कार्रवाई, बल्कि चुपचाप लौट गए। उनका कहना है कि लगातार शिकायतों और सबूतों के बावजूद कार्रवाई न होना पुलिस की भूमिका को संदिग्ध बना रहा है। स्थानीय नागरिकों ने मीडिया के माध्यम से जिला प्रशासन और वरीय पुलिस अधिकारियों से पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच की मांग की है। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि शीघ्र प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई, तो वे आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। वहीं, स्थानीय युवक दीनानाथ केवट ने आरोप लगाया कि महुदा क्षेत्र में कई पीडीएस डीलर और लाभुक चावल की कालाबाजारी में संलिप्त हैं, जिससे जरूरतमंदों को समय पर राशन नहीं मिल पा रहा। शनिवार को ग्रामीणों ने एक तस्कर को ऑटो सहित पकड़ कर पुलिस को सौंपा था पर महुदा पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। अगले दिन वही तस्कर फिर चावल लेने पहुंच गया। जिससे प्रशासन की संलिप्तता स्पष्ट होती दिख रही है। वहीं, भोला प्रमाणिक ने कहा कि यदि गरीबों का हक इस तरह छीना जाएगा तो हम ग्रामीण चुप नहीं बैठेंगे। चेतावनी दी कि यदि संबंधित विभाग एवं प्रशासन जल्द कार्रवाई नहीं करते हैं, तो ग्रामीण स्तर पर जोरदार आंदोलन किया जाएगा। दूसरी ओर, इस मामले को लेकर बाघमारा बीडीओ लक्ष्मण यादव ने कहा कि उन्हें इस घटना की जानकारी मिली है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जांच के बाद जिस भी पीडीएस दुकान से यह चावल बेचा गया है, उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही पकड़े गए चालक एवं वैसे कार्डधारक जो चावल का उठाव कर उसे बेचते हैं उन पर भी विधिसम्मत कार्रवाई की जाएगी। किसी भी कीमत पर पीडीएस चावल की कालाबाजारी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। वहीं, महुदा थाना प्रभारी देवानंद प्रसाद ने कहा कि जो टेंपो पकड़े थे उसमें दो से तीन बोरा खुदिया चावल था। उसमें पीडीएस बोरा या पीडीएस संबंधित खाताधारी व्यक्ति या चावल कुछ भी नहीं था। बीडीओ साहब का भी इस संबंध में फोन आया था। उन्होंने भी इसकी रिपोर्ट मांगी है जिसको दिया जा रहा है। पीडीएस दुकान संबंधी कोई भी मामला नहीं है।

बेस्ट एंप्लायी ऑफ द मंथ अवॉर्ड का आयोजन

बोकारो (आजाद सिपाही)। मानव संसाधन के ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग में वर्ष 2025 के मई माह के लिए बोकारो स्टील प्लांट के 'बेस्ट एम्प्लोयी ऑफ द मंथ अवॉर्ड' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कुल आठ कर्मचारियों को उनके कार्य में विशिष्ट योगदान के लिए पुरस्कृत किया गया। समारोह में अधिशासी निदेशक (संकार्य) सीआर महापात्रा, अधिशासी निदेशक (मानव संसाधन) राजश्री बनर्जी, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) अंजनी कुमार शरन के साथ संबंधित विभागों के मुख्य महाप्रबंधक, विभागाध्यक्ष सहित वरीय अधिकारी एवं पुरस्कार प्राप्त करने वाले कार्मिक-उनके परिवार के सदस्य उपस्थित थे। अधिशासी निदेशक (संकार्य) सीआर महापात्रा ने कर्मचारियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि इस सफलता में कर्मचारियों के साथ ही उनके परिवार का भी काफी योगदान है। कहा कि कर्मचारियों को अपने रोज के कार्यों के अलावा नित नई चुनौतियों को स्वीकार कर उनका समाधान खोजना चाहिए और जुनून के साथ काम काम करते हुए विकास की गति को बनाये रखना चाहिए। अधिशासी निदेशक (मानव संसाधन) राजश्री बनर्जी ने पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि आपका योगदान अति सराहनीय है। प्रत्येक चुनौतिपूर्ण काम को करने के समय यह जरूर ध्यान रखना चाहिए कि सुरक्षा सर्वोपरि है। कार्यक्रम का संचालन मानव संसाधन विभाग की सहायक प्रबंधक सोनाली गुप्ता एवं नितेश कुमार ने किया। जबकि धन्यवाद ज्ञापन चाहत प्रिया, सहायक प्रबंधक (मानव संसाधन) ने किया।

ग्रामीणों को जल्द मिले पुनर्वास एवं रोजगार: चंद्र प्रकाश चौधरी

कहा- सभी कोयला चोरी के मार्ग बंद कर वहां चौबीसों घंटे सुरक्षा दी जाये

आजाद सिपाही संवाददाता

गिरिडीह सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी से मुलाकात कर समस्याओं से अवगत कराते लोग।

धनबाद। बाघमारा विधानसभा क्षेत्र के कतरास स्थित केशलपुर कुम्हार बस्ती, केशलपुर मुंडा धौड़ा और पूर्वी बसुरिया के लोगों ने विगत कुछ महिनों से बड़े पैमाने पर हो रहे अवैध खनन, भू-धंसान, पुनर्वास एवं अन्य ज्वलंत विषयों को लेकर गिरिडीह सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी को ग्रामीणों ने ज्ञापन सौंपा। बताया कि विगत चार-पांच महीने से बस्ती के बगल में बीसीसीएल के कतरास क्षेत्र संख्या 4 अंतर्गत एकेडबल्यूएमसी मां अम्बे आउटसोर्सिंग कंपनी की ओर से संचालित परियोजना विस्तार से उक्त स्थान पर भू-धंसान हो रहा है, जिससे ग्रामीणों का जीवन खतरे में है। ग्रामीणों को शीघ्र विस्थापित कर पुनर्वास एवं रोजगार की व्यवस्था करना अति आवश्यक है। खान सुरक्षा नियमों को ताक पर रखकर परियोजना विस्तार, हैवी ब्लास्टिंग की जा रही है। प्रत्यक्षदर्शी लोगों ने बताया कि उक्त स्थान पर खुलेआम कोयला चोरी हो रही है, जहां कोई सुरक्षा व्यवस्था नहीं है। बीसीसीएल एवं जिला प्रबंधन की ओर से परियोजना की सुरक्षा सुनिश्चित करने की कोई व्यवस्था नहीं है। इसे लेकर सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी ने घटनास्थल पहुंचकर खुद क्षेत्र का निरीक्षण किया और वहां से सैकड़ों बोरा कोयला भी बरामद हुआ। सोशल मीडिया एवं न्यूज चैनलों के माध्यम से खनिज संपदाओं की हो रही लूट और शासन, प्रशासन, व्यवसायी और माफियाओं के बीच हो रही बंदरबांट का पदार्फाश भी किया गया। सांसद ने निरीक्षण के दौरान पाया कि दो घर जमीन के नीचे समा गए हैं। जबकि बाकि बचें घर भी जर्जर स्थिति में हैं और कभी भी बड़ी घटना होने की संभावना हैं। घटनास्थल से ही सांसद ने बीसीसीएल प्रबंधक को फटकार लगाकर पीड़ित परिवारों को पुनर्वास तक हैवी ब्लास्टिंग और अवैध खनन पर रोक लगाने का निर्देश दिए। इसके बाद सांसद ने धनबाद के डीसी, खान सुरक्षा महानिदेशालय के महानिदेशक एवं बीसीसीएल के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक को पत्र के माध्यम से कहा कि बार-बार सचेत करने के बाद भी अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। यही कारण है कि ग्रामीणों के घर में दरार आ गई है। उन्हें प्रदूषित पानी पीना पड़ रहा एवं भारी मात्र में धूल उड़ाने से स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। अवैध उत्खनन पर रोक के लिए जब ग्रामीणों ने आवाज उठायी तो कोयला माफियाओं द्वारा पत्थर, गोली-बम का उपयोग किया गया जिसमें चार ग्रामीण घायल भी हो गए। इस पर बीसीसीएल प्रबंधन एवं जिला प्रशासन मौन है। इस विषय पर गंभीरता पूर्वक कार्रवाई करते हुए ग्रामीणों को पुनर्वास एवं रोजगार दिया जाए, एवं सभी कोयला चोरी के मार्ग को बंद कर वहां 24 घंटे सुरक्षा दी जाए। अन्यथा भविष्य में कोई अप्रिय घटना घटित होती है तो उसकी सारी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होगी।

रामकनाली कोलियरी में ग्रामीणों की समस्याओं को लेकर आजसू ने की प्रबंधन से वार्ता

कतरास (आजाद सिपाही)। रामकनाली कोलियरी कार्यालय में सोमवार को बीसीसीएल प्रबंधन के आजसू कार्यकर्ताओं के साथ वार्ता की। जिसमें रामकनाली कोलियरी में पानी, बिजली, नालियों की साफ-सफाई, ग्रामीणों को पुनर्वास आदि को लेकर चर्चा की गयी। वार्ता में प्रबंधन की ओर हरेराम चौधरी, एसीएम नागदेव यादव, सतीश विद्यार्थी, राज रोशन, जबकि ग्रामीणों की ओर से आजसू के केंद्रीय सचिव अमरदीप महतो, सांसद प्रतिनिधि आशीष तिवारी, मुकेश साव, सोनू कुंभकार, उपेंद्र विश्वकर्मा, अर्जुन भुइया, चंदनकुमार, रीता देवी आदि शामिल थे। प्रबंधन ने सभी मांगों को शीघ्र पूरा करने का वादा किया। इस पर केंद्रीय सचिव अमरदीप महतो ने बताया कि सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी के निर्देश पर रामकनाली के मूलभूत सुविधाओं को लेकर वार्ता की गयी। अमरदीप महतो ने कहा कि प्रबंधन अगर शीघ्र ग्रामीणों की समस्याओं का समाधान नहीं करता है तो अनिश्चितकालीन धरना शुरू किया जाएगा।

महुदा एवं भाटडीह में निकाला गया ताजिया जुलूस

महुदा (आजाद सिपाही)। इस्लामिक कैलेंडर के पहले माह मुहर्रम की 10वीं तारीख (यौम-ए-आशूरा) के अवसर पर महुदा थाना और भाटडीह ओपी अंतर्गत विभिन्न मोहल्लों-बस्तियों से जुलूस-ए-मुहर्रम निकाला गया। जुलूस ताजिया और इस्लामी अलम (झंडा) के साथ शांतिपूर्ण ढंग से निर्धारित लाइसेंसी मार्गों से गुजरते हुए प्रमुख आखाड़ों तक पहुंचा। मुख्य आयोजन नूतनडीह ईदगाह मैदान, महुदा बस्ती और तेलमोचो मोड़ पर किया गया, जहां स्थानीय अंजुमनों ने आखाड़ा खेल का प्रदर्शन कर जौहर-ए-फन का मुजाहिरा किया। मुख्य आयोजन नूतनडीह ईदगाह मैदान, महुदा बस्ती और तेलमोचो मोड़ पर किया गया।

उपायुक्त का कार्यालय, हजारीबाग
(नजारत शाखा)

–: अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना :–

परिसदन भवन, हजारीबाग का रख–रखाव एवं संचालन आउटसोर्सिंग एजेन्सी के माध्यम से किया जाना है। उपायुक्त, हजारीबाग के आदेशानुसार हजारीबाग जिला का नया एवं पुराना परिसदन भवन का सुचारू रूप से संचालन, रख–रखाव, सफाई एवं अतिथि सेवा के लिए इच्छुक पंजीकृत एजेन्सियों/फर्मों/व्यक्तियों से मोहरबंद निविदा आमंत्रित किया जाता है।

सभी इच्छुक एजेन्सी/निविदादाता को निदेश दिया जाता है कि अपने निविदा को उपायुक्त कार्यालय, जिला नजारत शाखा, हजारीबाग में **दिनांक.–18.07.2025** के अपराहन् 03:00 बजे तक स्वयं अथवा निबंधित डाक के माध्यम से जमा करना सुनिश्चित करेगें।

निविदा की शर्तें एवं नियम जिला प्रशासन, हजारीबाग के अधिकारिक वेबसाईट www.hazaribag.nic.in में अपलोड कर दिया गया है, जिससे प्राप्त किया जा सकता है।

उपायुक्त के आदेश से,
ह0–
प्रभारी पदाधिकारी,
नजारत शाखा, हजारीबाग

PR 356664 District(25-26)#D

कार्यालय अनुमण्डल पदाधिकारी, सदर, हजारीबाग

–: आम सूचना :–

एतत् द्वारा सभी आम एवं खास को सूचित किया जाता है कि खास महाल लीज भूमि के लीज नवीकरण/नामान्तरण हेतु झारखण्ड सरकार के विभागीय परिपत्रांक 5727/रा0, दिनांक 30.11.2017 के आलोक में वंशावली प्रमाण पत्र की आवश्यकता है। उक्त परिपत्रांक के आलोक में निम्न लीजधारियों का वंशावली प्रमाण पत्र अंचल अधिकारी, सदर के कार्यालय से प्राप्त है।

अंचल अधिकारी, सदर द्वारा प्रतिवेदित किया गया है कि उक्त वंशावली प्रमाण पत्र विहित प्रक्रिया का पालन करते हुए निर्गत किया गया है, लेकिन खासमहाल की लीज भूमि के लीज नवीकरण/नामान्तरण हेतु उक्त वंशावली प्रमाण पत्र का सत्यापन अनुमण्डल पदाधिकारी, सदर, हजारीबाग के स्तर से कराना आवश्यक प्रतीत होता है।

अतः उक्त के आलोक में खास महाल भूमि के लीज नवीकरण/नामान्तरण हेतु प्रेस–विज्ञप्ति के माध्यम से वंशावली की आम सूचना प्रकाशित की जा रही है। यदि उक्त वंशावली के संबंध में किसी भी आम एवं खास को कोई आपत्ति हो तो वे अपनी आपत्ति अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में सूचना प्रकाशन के पन्द्रह दिनों के अन्दर साक्ष्यों के साथ अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में समर्पित करना सुनिश्चित करें। सूचना प्रकाशन के पंद्रह दिनों बाद कोई भी दावा/आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगा।

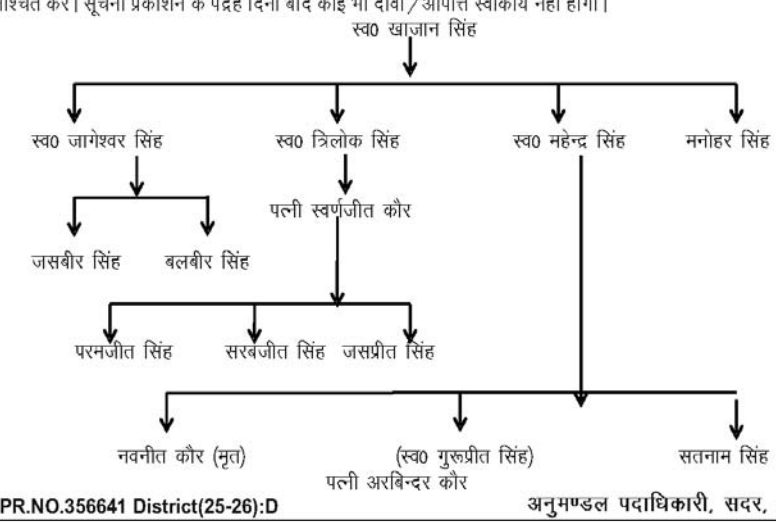

PR.NO.356641 District(25-26):D
अनुमण्डल पदाधिकारी, सदर, हजारीबाग।

धनबाद की खुशबू ने जीता 'साउथ इंडिया वीमेंस अचीवर्स अवार्ड 2025'

धनबाद (आजाद सिपाही)। चेन्नई में आयोजित शिवाअवार्ड 2025 के भव्य कार्यक्रम में धनबाद की बेटी खुशबू चौरसिया ने 'साउथ इंडिया वूमेंस अचीवर्स अवार्ड 2025' जीत जिले के साथ ही झारखंड का भी नाम रोशन किया है। बतातें चलें कि साउथ इंडिया वूमेनस अचीवर्स अवार्ड दक्षिण भारत का सबसे बड़ा प्लेटफार्म है। इस समारोह में समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वाले डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षाविद, व्यवसाई, आदि का चुनाव किया जाता हैं। दक्षिण भारत में इस बार लगभग 50 हजार समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वालों की सूची में फाइनल दौर में बेंगलोर, हैदराबाद, विशाखापट्टनम, चेन्नई से केवल 300 लोगों का ही चुनाव किया गया। जिसमें शिक्षाविद के रूप में खुशबू चौरसिया का नाम शामिल था। खुशबू के पति चेन्नई, कलपक्कम में साइंटिस्ट के पद पर कार्यरत हैं। विदित हो की खुशबू चौरसिया को हाल ही में नेशनल टैलेंट अवार्ड 2025 से भी नवाजा गया था। खुशबू चौरसिया द्वारा किये जा रहे कार्य से परिवार एवं समाज के लोगो ने प्रशंसा करते हुए बधाई दी है। इनके पिता आरएन चौरसिया धनबाद में एक प्रतिष्ठित, दैनिक समाचार पत्र में कार्यरत हैं।

नावाडीह के विनोद बिहारी महतो स्टेडियम में राज्यपाल के प्रस्तावित कार्यक्रम को लेकर डीसी-एसपी ने किया कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण

सबंधित पदाधिकारियों को तय समय पर जरूरी तैयारी पूरी करने का निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। राज्यपाल संतोष गंगवार के मंगलवार को नावाडीह स्थित बिनोद बिहारी महतो स्टेडियम में प्रस्तावित प्रतिभा सम्मान समारोह 2025 को लेकर सोमवार को डीसी अजय नाथ झा एवं पुलिस एसपी हरविंदर सिंह ने कार्यक्रम स्थल का जायजा लिया। इस दौरान डीसी-एसपी ने कार्यक्रम के सफल आयोजन को लेकर संबंधित पदाधिकारियों को जरूरी दिशा-निर्देश दिया। उन्होंने राज्यपाल सहित अन्य अतिथियों के आगमन, मीडिया गैलरी, वाहन पार्किंग, स्टेज-पंडाल आदि को चिन्हित करते हुए संबंधित पदाधिकारियों को जरूरी निर्देश दिया। डीसी ने क्रमवार सभी पदाधिकारियों को कार्यक्रम को आयोजित कर रहे आयोजक से समन्वय स्थापित करते हुए सफल बनाने का निर्देश दिया। साथ ही समय पर सभी तैयारियों को पूरा करने को कहा। वहीं, एसपी ने सुरक्षा-विधि व्यवस्था को लेकर बोरमो अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी वीएन सिंह एवं अन्य पदाधिकारियों को जरूरी निर्देश दिया। मौके पर डुमरी विधायक जयराम कुमार महतो, डीडीसी शताब्दी मजूमदार, अपर समाहर्ता मो मुमताज अंसारी, जिला परिवहन पदाधिकारी वंदना शेजवलकर, डीसीएलआर चास प्रभाष दत्ता, अनुमंडल पदाधिकारी बेरमो मुकेश मछुआ, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी रवि कुमार, सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा पीयूष, सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी अविनाश कुमार सिंह, बीडीओ, सीओ, थाना प्रभारी आदि उपस्थित थे।

लगातार बारिश को लेकर डीसी ने अधिकारियों को अलर्ट रहने और त्वरित कार्रवाई का दिया निर्देश

बोकारो (आजाद सिपाही)। जिले में पिछले कुछ दिनों से हो रही लगातार बारिश को देखते हुए जिला प्रशासन पूरी तरह सतर्क एवं सक्रिय है। डीसी अजय नाथ झा ने जलजमाव एवं उससे उत्पन्न जनता के संभावित समस्याओं को लेकर संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया है। उन्होंने चास नगर निगम के अपर नगर आयुक्त (एएमसी), फुसरो नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी (ईओ), चास और बेरमो के अनुमंडल पदाधिकारी, सभी बीडीओ और सीओ को निर्देश दिया है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में जल निकासी व्यवस्था की नियमित निगरानी करें। किसी भी प्रकार के जलजमाव की स्थिति से त्वरित निपटने के लिए तैयार रहें। उन्होंने शहरी क्षेत्रों में नालियों की सफाई को प्राथमिकता देने और पानी के निकासी में किसी भी प्रकार की रुकावट को तुरंत दूर करने को कहा। वहीं, कमजोर जलभराव वाले इलाकों की पहचान कर वहां विशेष निगरानी की व्यवस्था सुनिश्चित करने, रैन बसेरा - सामुदायिक भवन या स्कूलों को अस्थायी राहत शिविर के रूप में तैयार रखने, बिजली - पेयजल - स्वास्थ्य तथा आपूर्ति विभाग के साथ समन्वय बनाकर किसी भी आपात स्थिति में त्वरित सेवा उपलब्ध कराने एवं कंट्रोल रूम को सक्रिय रखने का निर्देश दिया।

कार्यालय: जिला विधिक सेवा प्राधिकार, खूँटी

आम सूचना

(Mediation "For the Nation" Campaign 90 Day Mediation Drive)

दिनांक- 01 जुलाई 2025 से 30 सितंबर 2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि माननीय नालसा नई दिल्ली के निर्देश पर तथा झारखण्ड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार, राँची के संरक्षण में जिला विधिक सेवा प्राधिकार, खूँटी द्वारा दिनांक–01.07.2025 से 30.09.2025 तक विशेष मध्यस्थता का आयोजन व्यवहार न्यायालय खूँटी के मध्यस्थता केंद्र में किया जाएगा। इसमें लंबित सभी सुलहनीय मामलों को व्यवहार न्यायालय खूँटी में आपसी सुलह समझौता तथा मध्यस्थता के आधार पर किया जाएगा।

इस विशेष मध्यस्थता अभियान में निम्नलिखित मामलों का निष्पादन किया जाएगा।

- वैवाहिक विवाह से संबंधित वाद/मामले
- घरेलू हिंसा से संबंधित मामले
- मोटर यान दुर्घटना से संबंधित मामल जिसमें दुर्घटना प्रतिवेदन एवं राज्य परिवहन विभाग से संबंधित मामले शामिल हो
- प्राक्म्यविलेख की धारा 138 के मामले (चेक बाउन्स से संबंधित)
- व्यवसायिक विवादों से संबंधित मामले
- सेवा से संबंधित मामले
- सुलहनीय अपराधिक मामले
- उपभोक्ता विवाद से संबंधित मामले
- ऋण विवाद से संबंधित मामले
- विभाजन विवाद से संबंधित मामले
- बेदखली विवाद से संबंधित मामले
- भूमि अधिग्रहन से संबंधित मामले
- अन्य उपयुक्त सिविल वाद

अतः सामान्य जनता, समस्त वादकारीगण एवं संबंधित पक्षकारों से अनुरोध है कि वे अपने उपरोक्त वर्णित मामलों को से संबंधित वादों को उक्त मध्यस्थता अभियान मे निष्पादित कराकर लाभ उठावें तथा इसे सफल बनावें।

➢ उक्त मध्यस्थता अभियान के संबंध में किसी भी प्रकार की विस्तृत जानकारी हेतु आप किसी भी कार्य दिवस को व्यवहार न्यायलय परिसर, खूँटी में स्थित जिला विधिक सेवा प्राधिकार खूँटी के कार्यालय में उपस्थित होकर या दूरभाष संख्या 8789697778 मे संपर्क कर सकते हैं।

नोटः– विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें टोल फ्री न0– 15100 या मोबाईल न0– 8789697778

सचिव
जिला विधिक सेवा प्राधिकार, खूँटी

PR 356708 Law (25-26)_D

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 08 जुलाई, 2025
www.azadsipahi.in

पूर्व सीएमओ के कमरे से मिले 22 लाख कैश सभी 1000 और 500 रुपये के पुराने नोट हैं

आजाद सिपाही संवाददाता

अंबेडकरनगर। यूपी के अंबेडकरनगर में सीएमओ रहे डॉक्टर ब्रह्मनारायण तिवारी के बंद कमरे से 22 लाख कैश मिला है। सभी पुराने और बंद हो चुके 1000 और 500 के नोट है। इतनी बड़ी संख्या में नोटों को देख कर कमरे में पहुंचे लोग दंग रह गये। वीडियोग्राफी के बीच नोटों की गिनती करायी गयी है। इसके बाद उन्हें सुरक्षित रखवा दिया गया है।

2014 में एसीएमओ और कार्यवाहक सीएमओ रहे डॉ ब्रह्मनारायण तिवारी का संदिग्ध परिस्थितियों में निधन हो गया था। निधन के बाद परिवार में संपत्ति को लेकर विवाद हो गया। तभी से कमरा सील कर बंद कर दिया गया था। इन दिनों सीएमओ डॉ संजय कुमार शैवाल के निर्देश पर पीएचसी मीरानपुर में बने चिकित्सा अधिकारियों के चार आवासों की मरम्मत कराई जा रही है। इनमें से नीचे वाले आवास में प्रतापगढ़ के रामगढ़ा के रहने वाले डॉ ब्रह्मनाराण तिवारी रहते थे। 29 जनवरी 2014 को उनका आकस्मिक निधन हो गया था। मौत के समय वह अकेले ही रहते थे। उनके आवास में रखे सामान के बंटवारे को लेकर परिवार के लोगों में विवाद हो गया था। इसके बाद पुलिस ने आवास में ताला लगवा दिया था।

बीते दिनों जब मरम्मत की प्रक्रिया शुरू हुई तो सीएमओ ने आवास पर विवाद या मुकदमे की सूचना पुलिस से मांगी थी। पुलिस की रिपोर्ट में कोई मामला

विचाराधीन न होने पर सीएमओ ने एसीएमओ डॉ मनोज कुमार सिंह, डॉ मारकंडेय की समिति बनायी। साथ ही स्टोर कीपर हरगोविंद, पारसनाथ को सभी सामानों की सूची बनाने का भी निर्देश दिया।

सीएमओ के निर्देश पर समिति ने वीडियोग्राफी के बीच आवास का ताला खुलवाया। अंदर पहुंचे तो अन्य सामान के साथ बड़ीं संख्या में एक हजार और पांच सौ के पुराने नोटों की गड्डी देख कर दंग रह गये। इसकी जानकारी अधिकारियों को दी गयी। अधिकारियों के निर्देश पर वीडियोग्राफी के बीच नोटों की गिनती करायी गयी। गिनती में एक हजार के 776 नोट यानी 7 लाख 60 हजार रुपये थे। पांच सौ के 2945 नोट यानी 14 लाख 72 हजार रुपये थे। इसके अलावा एक पांच रुपये का सिक्का भी मिला है। इस प्रकार कुल 22,48,505 रुपये मिले हैं।

डिप्टी सीएमओ डॉ संजय वर्मा ने बताया कि वीडियोग्राफी के बीच कमरा खुलवाया गया है। नोटों की गिनती करा कर सुरक्षित करा दिया गया है। विभागीय दिशा निर्देश के लिए पत्र अधिकारियों को भेजा गया है। उसके अनुसार आगे की कार्रवाई होगी।

डॉक्टर ब्रह्मनारायण तिवारी की बंद कमरे में हुई थी संदिग्ध मौत

प्रतापगढ़ के मूल निवासी रहे डॉ बीएन तिवारी की लाश 29 जनवरी 2014 को मिली थी। शीतलहरी वाले मौसम में फुल चलती एसी के बीच बंद कमरे में मौत कैसे हुई, इसका खुलासा नहीं हो सका है। पारिवारिक विवाद और मौत के रहस्य के चलते उनका आवास तभी से बंद था। पुलिस की ओर से कोई मुकदमा न होने की जानकारी पर कमरा खुलवाया गया।

एनआइए की पूछताछ में आतंकी तहव्वुर राणा ने कबूला

26/11 हमले के वक्त वह मुंबई में था

- वह पाक आर्मी एजेंट, हेडली के साथ ट्रेनिंग सेशन किये

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। 26/11 आतंकी हमले के वक्त आतंकी तहव्वुर राणा मुंबई में था। यह बात उसने एनआइए की पूछताछ में कबूल की है। राणा ने माना है कि वह पाकिस्तानी सेना का एजेंट है। उसने बताया कि उसने डेविड कोलमैन हेडली के साथ पाकिस्तान में लश्कर-ए-तैयबा के कई ट्रेनिंग सेशन किये थे। राणा ने यह भी कहा कि लश्कर असल में एक जासूसी नेटवर्क की तरह

काम करता है। पूछताछ में शामिल मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच अब राणा को गिरफ्तार करके रिमांड पर लेने की तैयारी में है। अभी राणा एनआइए की न्यायिक हिरासत में है, जिसे दिल्ली की अदालत ने नौ जुलाई तक बढ़ा दिया है।

तहव्वुर को अमेरिका के शिकागो में अक्टूबर 2009 में अमेरिकी एजेंसी एफबीआइ ने गिरफ्तार किया था। राणा को 10 अप्रैल को स्पेशल विमान से अमेरिका से भारत लाया गया था।

मुंबई में खोला था इमिग्रेशन सेंटर

राणा ने पूछताछ में बताया कि मुंबई में उसने अपनी कंपनी का इमिग्रेशन सेंटर खुद के प्लान से खोला, ताकि हमले की तैयारी के लिए जगह और सुविधाएं मिल सकें। वहां किए गए लेन-देन को बिजनेस खर्चों में दिखाया गया। उसने यह भी स्वीकार किया कि छत्रपति शिवाजी टर्मिनस जैसे स्थानों की खुद रेकी की थी।

अगली जनगणना डिजिटल होगी, खुद से भी ऑनलाइन जानकारी भर सकेंगे

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। भारत में होने वाली अगली जनगणना को लेकर सरकार ने एक बड़ा ऐलान किया है। यह देश की पहली डिजिटल जनगणना होगी, जिसमें आम लोग खुद भी अपनी जानकारी ऑनलाइन दर्ज कर सकेंगे। इसके लिए सरकार एक खास वेब पोर्टल लॉन्च करने जा रही है। इसके अलावा, मोबाइल ऐप के जरिए भी जनगणना का काम पूरा किया जायेगा। अब तक भारत में जनगणना के लिए घर-घर जाकर सरकारी कर्मचारी कागज पर जानकारी इकट्ठा करते थे, लेकिन अब सरकार इस प्रक्रिया को पूरी तरह डिजिटल बनाने जा रही है। पहली बार मोबाइल ऐप और ऑनलाइन पोर्टल के जरिए लोगों की जानकारी ली जायेगी। इससे न केवल काम तेजी से होगा, बल्कि डेटा भी सुरक्षित तरीके से सीधे सरकार के केंद्रीय सर्वर पर पहुंचेगा। सरकार ने कहा है कि नागरिक चाहें तो खुद ही अपनी जनगणना की जानकारी वेब पोर्टल पर दर्ज कर सकते हैं।

दो चरणों में होगी जनगणना : दो चरणों में जनगणना होगी। पहला चरण 'हाउस लिस्टिंग एंड हाउसिंग सेंसस' यानी घर और मकान की जानकारी, और दूसरा चरण 'पॉपुलेशन एनुमरेशन' यानी जनसंख्या की गिनती। दोनों चरणों में लोग खुद अपनी जानकारी दर्ज कर सकेंगे। जनगणना 2026 और 2027 में दो चरणों में होगी। पहला चरण 1 अप्रैल 2026 से शुरू होगा, जिसमें मकानों की गिनती की जायेगी। दूसरा चरण 1 फरवरी 2027 से शुरू होगा, जिसमें लोगों की जनसंख्या, जाति और बाकी जरूरी जानकारियां जुटाई जायेंगी।

34 लाख कर्मचारियों को दी जाएगी ट्रेनिंग : इतने बड़े काम के लिए सरकार ने देशभर में करीब 34 लाख लोगों को नियुक्त किया है। इन कर्मचारियों को तीन स्तरों पर ट्रेनिंग दी जायेगी। पहले राष्ट्रीय ट्रेनर, फिर मास्टर ट्रेनर और आखिर में फील्ड ट्रेनर इन्हें तैयार करेंगे। हर गांव और शहर को छोटे-छोटे हिस्सों में बांटा जायेगा। हर हिस्से के लिए एक कर्मचारी जिम्मेदार होगा। इससे कोई भी घर या व्यक्ति गिनती से न छूटे।

पूर्णिया में एक ही परिवार के 5 लोगों की हत्या

डायन के आरोप में पहले पीटा, फिर पेट्रोल छिड़क कर जिंदा जला दिया

- मुखिया की अगुवाई में हुई पंचायत में सुनाया गया तालिबानी फरमान

आजाद सिपाही संवाददाता

पूर्णिया। पूर्णिया जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र अंतर्गत राजीगंज पंचायत के टेटगामा वार्ड-10 में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आयी है। डायन का आरोप लगा कर गांव के ही एक ही परिवार के पांच लोगों की पीट-पीट कर और जिंदा जला कर हत्या कर दी गयी। मरने वालों में तीन महिलाएं और दो पुरुष शामिल हैं।

जानकारी के अनुसार, गांव के कुछ लोगों को सीता देवी (48 वर्ष) पर डायन होने का शक था। रविवार रात गांव के मुखिया (मर्रर) नकुल उरांव की अगुवाई में करीब 200 ग्रामीणों की एक पंचायत बुलायी गयी। इसमें डायन बताकर सीता देवी, उनके पति बाबूलाल उरांव (50), सास काती देवी (65), बेटे मंजीत उरांव (25) और बहू रानी देवी (23) को बुलाकर तालिबानी फरमान सुनाया गया। इसके बाद सभी को लाठी-डंडों से बेरहमी से पीटा गया, फिर पेट्रोल छिड़क कर जिंदा जला दिया गया। घटना को अंजाम मृतक के पुत्र सोनू कुमार के सामने ही दिया गया। किसी तरह जान बचाकर सोनू वहां से भाग निकला और पुलिस को सूचना दी। घटना की जानकारी मिलते ही मुफस्सिल थाना के साथ-साथ आसपास के तीन थानों की पुलिस मौके पर पहुंच गयी।

एसपी स्वीटी सहरावत, एएसपी आलोक रंजन और अन्य वरिष्ठ अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे और जांच शुरू कर दी। मुफस्सिल थानाध्यक्ष उत्तम कुमार ने बताया कि अब तक दो शव बरामद किये गये हैं, बाकी तीन की तलाश की जा रही है। घटना में शामिल गांव के मर्रर नकुल उरांव और ट्रैक्टर चालक को गिरफ्तार कर लिया गया है।

पुलिस ने 3 आरोपियों को किया गिरफ्तार, एसआइटी का गठन

मुफ्फसिल थानाध्यक्ष उत्तम कुमार ने बताया कि इस मामले में तीन लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। सदर डीएसपीओ पंकज शर्मा ने बताया कि ये उरांव जाति का गांव है। यहां के 5 सदस्यों के साथ मारपीट कर के सभी को जला दिया गया है। एक 15 साल का बच्चा है, उसी ने नानी को सूचना दी। इसके बाद हमें जानकारी मिली। कांड में पूरे गांव के शामिल होने की बात कही जा रही है। छापेमारी जारी है।

भारत में एयरपोर्ट पर सर्विस नहीं दे सकेगी टर्किश की कंपनी

नयी दिल्ली (आजाद सिपाही)। तुर्किये की ग्राउंड हैंडलिंग और कार्गो सर्विस कंपनी सेलेबी एविएशन की याचिका को 7 जुलाई को दिल्ली हाइकोर्ट ने खारिज कर दिया है। याचिका में कंपनी ने अपनी सुरक्षा मंजूरी रद्द करने के केंद्र सरकार के फैसले को चुनौती दी थी। केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा के हवाले से सेलेबी की मंजूरी रद्द की थी। कंपनी के दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, चेन्नई, अहमदाबाद, गोवा, कोचीन, और कन्नूर जैसे 9 बड़े हवाई अड्डों पर ऑपरेशन्स थे।

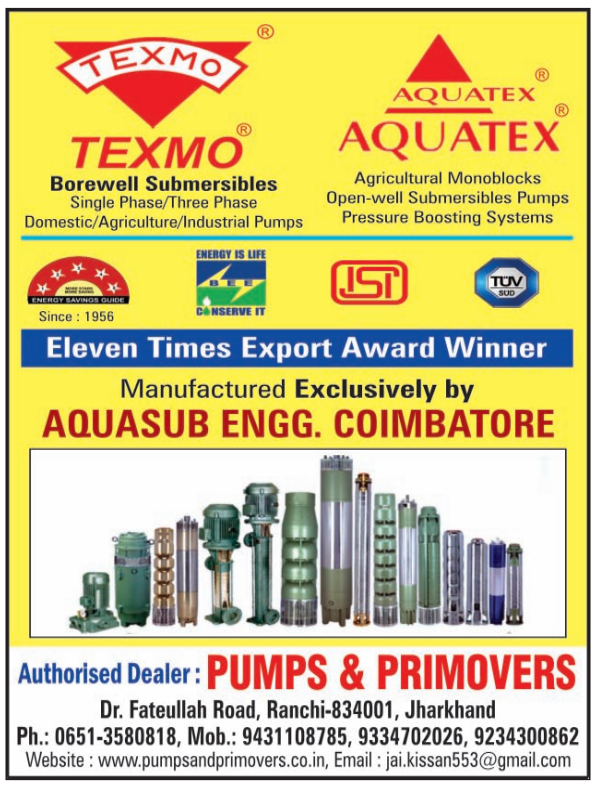

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।
संपादक : हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार, ***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**